|| श्रीः ||

सुखदा आयुर्वेदग्रन्थमाला

एकादशं पुष्पम्

श्रीरुद्रयामलतन्त्रे

रसार्णवकल्पः

परिष्कर्ता सम्पादकश्च

डॉ. नीलेश जोशी



eBook Publication Pvt. Ltd.®

प्रथमावृत्तिः २०१९, ख्रिस्ताब्दम्

|| श्रीः ||

सुखदा आयुर्वेदग्रन्थमाला

एकादशं पुष्पम्

श्रीरुद्रयामलतन्त्रे

रसार्णवकल्पः

परिष्कर्ता सम्पादकश्च

डॉ. नीलेश जोशी

शास्त्री (व्याकरणम्), एम.ए. (संस्कृतम्), पी.एच.डी.

वरिष्ठभाषाशास्त्रज्ञः, सं.वि.अ.विभागः, भा.प्रौ.सं. मुंबई

Senior Linguist, Dpt. of Computer Science and Engineering,

IIT Bombay, Mumbai



प्रथमावृत्तिः २०१९, ख्रिस्ताब्दम्

रसार्णवकल्पः

परिष्कर्ता संपादकश्च : डॉ. नीलेश जोशी

प्रथमावृत्तिः- अश्विन-कृष्ण-त्रयोदशी, धन्वन्तरिजयन्ती |

२५ ऑक्टोबर, २०१९

प्रकाशक:

eBook Publication Pvt. Ltd.®

4/47, उदय को. हौ. सोसायटी,

आरे रोड, गोरेगाव पश्चिम,

मुंबई, महाराष्ट्र, भारत, ४०००६२

Telephone: +91 7038164022

Email: publicationebook@gmail.com

Website: https://archive.org/details/@ebook_publcation



चतुर्भुजं पीतवस्त्रं सर्वालङ्कारशोभितम्।

ध्याये धन्वन्तरिं देवं सुरासुरनमस्कृतम्।।१।।

युवानं पुण्डरीकाक्षं सर्वाभरणभूषितम्।

दधानममृतस्यैव कमण्डलुश्रिया युतम्।।२।।

यज्ञभोगभुजं देवं सुरासुरनमस्कृतम्।

ध्याये धन्वन्तरिं देवं श्वेताम्बरधरं शुभम्।।३।।

eBook Terms & Conditions

1. This eBook* may be

a. Distributed without modification or sale.

b. Copied for personal and educational use.

c. Printed for personal and educational use.

2. This eBook* may NOT be

a. Sold individually or as part of package.
b. Modified in any way.
c. Reversed-engineered.

***eBook refers to this PDF and any of its content including pages and images in either electronic or printed form.**

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना

रसशास्त्रं रुद्रयामलं च जगति जरारोगमृत्यून् जित्वा मोक्षप्राप्तिसाधनानि निरूप्य भगवता रुद्रेण रसदर्शनं विनिर्मितम् । विषयमिमं सुरक्ष्य प्रयोगैः स्वात्मपरेषामपि जनानां कल्याणं साधितुं महेश्वरादिसिद्धसम्प्रदायाणामाचार्यैः यथाशक्यं प्रयासितं तथा च सफलतापि प्राप्ता।

रुद्रयामलतन्त्रे वर्णितरसरसायनधातुप्रयोगास्ते नितरां महत्त्वपूर्णाः किन्तु साधनापद्धतिरपि दीर्घकालसाध्या मन्त्रविधानानुष्ठानसिद्धापेक्षिता च। रुद्रयामलतन्त्रे दर्शितरसकल्पास्तेषां प्रयोगाः सविस्तारं कथिताः इत्यस्य ग्रन्थस्य विशेषता । अपि च वर्तमाने 'रसायनशास्त्रविषये' प्राचीनशास्त्राणां योगदानमधिगन्तुं रुद्रयामलतन्त्रस्य प्रस्तुतो विभागो 'रसकल्पः' अवलोकनीयः । ग्रन्थस्यास्य परिशीलनेन ज्ञातव्यं यत् तन्त्रज्ञो विद्वान् तान्त्रिककर्मसिद्ध्यर्थम् आत्मरक्षासहितमुपयुक्तसाधनानामत्यावश्यकतां विधीयते।

प्राचीनमहर्षयः सुदृढशरीराः द्वन्द्वादिसहिष्णाः निरामयाः दीर्घायुःपूर्णाः परिश्रमिणः आसन्। अत एव ते दीर्घकालिककाठिन्यतमतपश्चर्यानुष्ठानाद्विमुखा नाभुवन् । योगसाधनया शारीरिकबलस्य तथाध्यात्मिकचिन्तनेन मानसिकदृढतां प्रापन्, तथैव च विभिन्नचिकित्साशास्त्रीयरसायनादिसेवनप्रयोगेण स्वस्थपूर्णदीर्घमजीविषुः । शतसहस्रवर्षायुष्काः सहस्राधिकसंवत्सरे स्थितिमेकामवस्थाय क्षुत्पिपासामुक्ताः समाधौ लीनाः अस्थुः । केवलं रसरसायनादियोगसेवनप्रयोगात् । अत इदं रुद्रयामलतन्त्रगतो रसार्णवकल्पप्रपञ्चः।

(क) **रसार्णवकल्पपरिचयः-**

प्रस्तुते 'रसार्णवकल्पे' पारदमारणविधिः महारसाः रसा उपरसाश्च चतुर्विधगन्धको नैकविधसौराष्ट्री[1] त्रिविधकासीसं[2] गैरिकं[3] सुवर्णमारणं ताम्रसत्त्वं रसकसत्त्वमादिप्रयोगाः च निर्दिष्टाः। 'रसार्णवकल्प'समं अन्यसंग्रहाः अपि यथा 'रसरत्नाकरे' 'रसहृदयतन्त्रे'१८ पटलं 'रसार्णवकल्प'नाम्ना। अत्र तान्त्रिकदृष्टिमधिकृत्य विशेषतया 'वनस्पतिकल्पः''औषधि-कल्पस्तथा 'उदककल्पः' इति विवेचिताः ते यथा-

रुद्रयामलतन्त्रे रसकल्पे वर्णिताः कल्पास्तद्यथा -

१. वनस्पतिकल्पाः

---

[1] सौराष्ट्री तुवरी काङ्क्षी मृत्तालकसुराष्ट्रजे | आढकी चापि साख्याता मृत्स्ना च सुरमृत्तिका | स्फटिकायाः गुणाः सर्वे सौराष्ट्र्या अपि कीर्तिताः || भा.प्र.पू.मिश्र.८.१३८ ||

[2] कासीसं रसकं कपर्दसिकताबोलाश्च कङ्कुष्ठकं सौराष्ट्री च मता अमी उपरसाः सूतस्य किञ्चिद्गुणैः || भा.प्र.पू.मिश्र.८.९१||

[3] गैरिकं रक्तधातुश्च गैरेयं गिरिजं तथा | सुवर्णगैरिकं त्वन्यत्ततो रक्ततरं हि तत् || भा.प्र.पू.मिश्र.८.१३१ || गैरिकद्वितयं स्निग्धं मधुरं तुवरं हिमम् | चक्षुष्यं दाहपित्तास्रकफहिक्काविषापहम् || भा.प्र.पू.मिश्र.८.१३२ ||

१. अपराजिता, २. ब्रह्मदण्डी, ३. अश्वगन्धा, ४. मुशली, ५. अस्थिशृंखला, ६. ज्योतिष्मती, ७. श्वेतार्क, ८. गन्धक, ६. तालक, १०. रक्तवज्री, ११. उच्चटा, १२. ईश्वरी, १३. तृणज्योति, १४. एकवीरा, १५. देवदाली (पीतमनन्यानि च), १६. कटुतुम्बी, १७. क्षीरकंचुकी, १८. रुदन्ती, १६. नागमण्डल, २६. सोमराजी, २१. ताम्रवन, २२. मयूरगिरिः, २३. अंकोलवृक्षः, २४. शाल्मली, २५. बिल्व तथा २६. एरण्ड आदयः |

२. औषधिकल्पाः

१. लक्ष्मणा, २. करञ्जः, ३. पुनर्नवा, ४. कृष्ण-हरिद्रा, ५. कटरोहिणी, ६. अंकोलः, ७. काकजंघा, ८. करकः, 8. निर्गण्डी, १०. इन्द्रवारुणी, ११. भृगराजः, १२. त्रिफला, १३. मुण्डी, १४. चित्रकः, १५. मण्डूकः, १६. लाङ्गली, १७. रक्तगुञ्जा, १८. मण्डूकब्राह्मी, १६. वन्दा, २०. वाचुकी, २१. निम्बः, २२. श्वेतार्कः, २३. शुण्ठी, २४. पाठा, २५. भूकन्दः तथा २६. शिवलिङ्गी आदयः |

३. उदककल्पाः

१. शैलोदकम्, २. विषोदकम्, ३. चन्द्रोदकम्, ४. कर्तरिजलम् ५. घृतोदकम्, ६. कृष्णोदकम्, ७. भू-शैलोदकम्, ६. दुर्गन्धोदकम्, ६. खुरसाजलम्, १०. उष्णोदकम्, ११. रक्तोदकम्, १२. कुष्ठोदकम् आदीनि।

संप्रति विज्ञानविद्वद्भिः विभिन्नपरीक्षणैः सुसिद्धं यत् वृक्षाः तथा च तेषामवयवाः यथा १. मूलम् २. शाखा ३.पत्रम्, ४. पुष्पम् ५. फलम् आदीनि मानवेभ्योऽनेकरूपेण बहूपयोगकराणि। आयुर्वेदप्रणेतारो महर्षियः एतैः साधनीभूतैः वृक्षपञ्चाङ्गैः चिकित्सापद्धतिं वितस्तरिरे या अन्यासां चिकित्सापद्धतौ साक्षाद्ग्रहणेन विना केवलमेतेषां सत्त्वरसगन्धादिगतप्रक्रियामात्रेण आतुरसर्वरोगनिवारणं ससाध।

स्वीकृतहस्तलिखितानि तथोपलब्धपूर्वप्रकाशितपुस्तकानि

अ- रसार्णवकल्पः- हस्तलिखितम् धर्मार्थ-ट्रस्ट रघुनाथमन्दिरम्, जम्मू, जम्मू-काश्मीर,१४५ पृष्ठानि, लेखनकालो नोपलभ्यते | तथापि शतत्रयं वर्षं पुरातनम् |

ब- रसार्णवकल्पः- मीरा रॉय, संपादिका, भारतीय-राष्ट्रीय-विज्ञान-अकादमी [INSA], बहादूर-शाह-जाफ़र-मार्गः, नवदेहली १११००१, प्रकाशनं आरिफमार्गः, कोलकत्ता, इ.स.१९७६ |

क- रुद्रयामलतन्त्रम्- श्रीजीवानन्दविद्यासागरभट्टाचार्यः, वाचस्पत्ययन्त्रे मुद्रितम्, कोलकत्ता, इ.स.१९३७ |

एवमुपलब्धहस्तलिखितानि प्रकाशितग्रन्थान् संचित्य साकल्येन संशोध्य च समुचितपाठान् निश्चित्य भारतीयभिषजां करकमलेषु ननूपायनीक्रियते |

सङ्कलितपुस्तकसमन्वयत्वम्

सङ्कलितपुस्तकानां सर्वेषामेतेषां समन्वयत्वमपि दृश्यते तद्यथा-

अ-संज्ञितं प्रस्तुतसंस्करणं द्वेऽपि परस्परं समन्वयतां दधाते खलु | तथा च ब-संज्ञितेनापि संबद्धम् | ब-संज्ञितः संघातः पूर्णतया क- संज्ञितेनापि संबद्धः | विभिन्नेषु स्थानेषु अतीव भिन्नता विलक्ष्यते सा पाठभेदरूपेण दर्शिता | ब-क-प्रकाशितग्रन्थौ बहुशः हस्तलिखितपुस्तकाभ्यां समन्विताः |

वस्तुतः एतेषां श्लोकसन्दर्भः कोशरूपेण स्वतन्त्रतया प्रकाश्यते प्रस्तुतग्रन्थेऽस्मिन्नेव |

अनेनायुर्वेदकल्पतरुं प्रत्यहमुत्तरोत्तरमतिवेलं परिपोषयेयुः विश्वभिषग्वराः संशोधकाः आयुर्वेदविद्यार्थिनश्च | एतादृशदुष्करकर्मणि मादृशस्याशक्तस्य मन्दमतेः प्रभुश्रीरामकृपालाभादेशस्य शिरोधार्यया कृतोऽयं प्रयत्नश्चेद् भारतीयभिषजां किञ्चिदप्युपकारजातमुपजनयेत्तदात्मानं सफलपरिश्रमं मन्येय |

eBook Publication Pvt. Ltd.® प्रकाशनेनायं ग्रन्थः प्रकाशितस्तथा **ebook** स्वरूपेण सर्वेष्वान्तर्जालपुटेन वितीर्यते अत आभाराः प्रकटीक्रियन्ते |

- डॉ. नीलेश-जोशी

अश्विन-कृष्ण-त्रयोदशी,

धन्वन्तरि-जयन्ती

२५ ऑक्टोबर, २०१९

श्लोकसन्दर्भकोशः

[A Concordance]

प्रस्तुतावृत्तिः	अ-हस्तलिखितम्	क-रुद्रयामलतन्त्रम्	ब-कोलकत्तावृत्तिः
1.a	1.a	53.a	53.a
1.b	1.b	53.b	53.b
2.a	2.a	54.a	54.a
2.b	2.b	54.b	54.b
3.a	3.a	55.a	55.a
3.b	3.b	55.b	55.b
4.a	4.a	56.a	56.a
4.b	4.b	56.b	56.b
5.a	5.a	57.a	57.a
5.b	5.b	57.b	57.b
6.a	6.a	58.a	58.a
6.b	6.b	58.b	58.b
7.a	7.a	59.a	59.a
7.b	7.b	59.b	59.b
8.a	8.a	60.a	60.a
8.b	8.b	60.b	60.b
9.a	9.a	61.a	61.a
9.b	9.b	61.b	61.b
10.a	10.a	62.a	62.a
10.b	10.b	62.b	62.b
11.a	11.a	63.a	63.a
11.b	11.b	63.b	63.b
12.a	12.a	64.a	64.a
12.b	12.b	64.b	64.b
12.c	12.c	64.c	64.c
12.d	12.d	64.d	64.d
13.a	13.a	65.a	65.a
13.b	13.b	65.b	65.b
13.c	13.c	65.c	65.c
13.d	13.d	65.d	65.d
14.a	14.a	66.a	66.a
14.b	14.b	66.b	66.b
14.c	14.c	66.c	66.c
14.d	14.d	66.d	66.d
15.a	15.a	67.a	67.a
15.b	15.b	67.b	67.b

प्रस्तुतावृत्तिः	हस्तलिखितम्	रुद्रयामलतन्त्रम्	कोलकत्तावृत्तिः
15.c	15.c	67.c	67.c
15.d	15.d	67.d	67.d
16.a	16.a	68.a	68.a
16.b	16.b	68.b	68.b
16.c	16.c	68.c	68.c
16.d	16.d	68.d	68.d
17.a	17.a	71.a	71.a
17.b	17.b	71.b	71.b
17.c	17.c	71.c	71.c
17.d	17.d	71.d	71.d
18.a	18.a	72.a	72.a
18.b	18.b	72.b	72.b
18.c	18.c	72.c	72.c
18.d	18.d	72.d	72.d
19.a	19.a	73.a	73.a
19.b	19.b	73.b	73.b
20.a	20.a	74.a	74.a
20.b	20.b	74.b	74.b
20.c	20.c	74.c	74.c
20.d	20.d	74.d	74.d
21.a	21.a	75.a	75.a
21.b	21.b	75.b	75.b
21.c	21.c	75.c	75.c
21.d	21.d	75.d	75.d
22.a	22.a	78.a	78.a
22.b	22.b	78.b	78.b
23.a	23.a	79.a	79.a
23.b	23.b	79.b	79.b
24.a	24.a	80.a	80.a
24.b	24.b	80.b	80.b
25.a	25.a	81.a	81.a
25.b	25.b	81.b	81.b
26.a	26.a	82.a	82.a
26.b	26.b	82.b	82.b
27.a	27.a	83.a	83.a
27.b	27.b	83.b	83.b
28.a	28.a	84.a	84.a
28.b	28.b	84.b	84.b
29.a	29.a	85.a	85.a

प्रस्तुतावृत्तिः	हस्तलिखितम्	रुद्रयामलतन्त्रम्	कोलकत्तावृत्तिः
29.b	29.b	85.b	85.b
30.a	30.a	86.a	86.a
30.b	30.b	86.b	86.b
31.a	31.a	87.a	87.a
31.b	31.b	87.b	87.b
32.a	32.a	88.a	88.a
32.b	32.b	88.b	88.b
33.a	33.a	89.a	89.a
33.b	33.b	89.b	89.b
34.a	34.a	90.a	90.a
34.b	34.b	90.b	90.b
35.a	35.a	91.a	91.a
35.b	35.b	91.b	91.b
36.a	36.a	92.a	92.a
36.b	36.b	92.b	92.b
37.a	37.a	93.a	93.a
37.b	37.b	93.b	93.b
38.a	38.a	94.a	94.a
38.b	38.b	94.b	94.b
39.a	39.a	95.a	95.a
39.b	39.b	95.b	95.b
40.a	40.a	96.a	96.a
40.b	40.b	96.b	96.b
41.a	41.a	97.a	97.a
41.b	41.b	97.b	97.b
42.a	42.a	98.a	98.a
42.b	42.b	98.b	98.b
43.a	43.a	99.a	99.a
43.b	43.b	99.b	99.b
44.a	44.a	100.a	100.a
44.b	44.b	100.b	100.b
45.a	45.a	101.a	101.a
46.a	46.a	102.a	102.a
46.b	46.b	102.b	102.b
47.a	47.a	103.a	103.a
47.b	47.b	103.b	103.b
48.a	48.a	104.a	104.a
48.b	48.b	104.b	104.b
49.a	49.a	105.a	105.a

प्रस्तुतावृत्तिः	हस्तलिखितम्	रुद्रयामलतन्त्रम्	कोलकत्तावृत्तिः
49.b	49.b	105.b	105.b
50.a	50.a	106.a	106.a
50.b	50.b	106.b	106.b
51.a	51.a	107.a	107.a
51.b	51.b	107.b	107.b
52.a	52.a	108.a	108.a
52.b	52.b	108.b	108.b
53.a	53.a	109.a	109.a
53.b	53.b	109.b	109.b
54.a	54.a	110.a	110.a
54.b	54.b	110.b	110.b
55.a	55.a	111.a	111.a
55.b	55.b	111.b	111.b
56.a	56.a	112.a	112.a
56.b	56.b	112.b	112.b
57.a	57.a	113.a	113.a
57.b	57.b	113.b	113.b
58.a	58.a	114.a	114.a
58.b	58.b	114.b	114.b
59.a	59.a	115.a	115.a
59.b	59.b	115.b	115.b
60.a	60.a	116.a	116.a
60.b	60.b	116.b	116.b
61.a	61.a	117.a	117.a
61.b	61.b	117.b	117.b
62.a	62.a	118.a	118.a
62.b	62.b	118.b	118.b
63.a	63.a	119.a	119.a
63.b	63.b	119.b	119.b
64.a	64.a	120.a	120.a
64.b	64.b	120.b	120.b
65.a	65.a	121.a	121.a
65.b	65.b	121.b	121.b
66.a	66.a	122.a	122.a
66.b	66.b	122.b	122.b
67.a	67.a	123.a	123.a
67.b	67.b	123.b	123.b
68.a	68.a	124.a	124.a
68.b	68.b	124.b	124.b

प्रस्तुतावृत्तिः	हस्तलिखितम्	रुद्रयामलतन्त्रम्	कोलकत्तावृत्तिः
69.a	69.a	125.a	125.a
69.b	69.b	125.b	125.b
70.a	70.a	126.a	126.a
70.b	70.b	126.b	126.b
71.a	71.a	127.a	127.a
71.b	71.b	127.b	127.b
72.a	72.a	128.a	128.a
72.b	72.b	128.b	128.b
73.a	73.a	129.a	129.a
73.b	73.b	129.b	129.b
74.a	74.a	130.a	130.a
74.b	74.b	130.b	130.b
75.a	75.a	131.a	131.a
75.b	75.b	131.b	131.b
76.a	76.a	132.a	132.a
76.b	76.b	132.b	132.b
77.a	77.a	133.a	133.a
77.b	77.b	133.b	133.b
78.a	78.a	134.a	134.a
78.b	78.b	134.b	134.b
79.a	79.a	135.a	135.a
79.b	79.b	135.b	135.b
80.a	80.a	136.a	136.a
80.b	80.b	136.b	136.b
81.a	81.a	137.a	137.a
81.b	81.b	137.b	137.b
82.a	82.a	138.a	138.a
82.b	82.b	138.b	138.b
82.c	82.c	138.c	138.c
83.a	83.a	139.a	139.a
83.b	83.b	139.b	139.b
84.a	84.a	140.a	140.a
84.b	84.b	140.b	140.b
85.a	85.a	141.a	141.a
85.b	85.b	141.b	141.b
86.a	86.a	142.a	142.a
86.b	86.b	142.b	142.b
87.a	87.a	143.a	143.a
87.b	87.b	143.b	143.b

प्रस्तुतावृत्तिः	हस्तलिखितम्	रुद्रयामलतन्त्रम्	कोलकत्तावृत्तिः
88.a	88.a	144.a	144.a
88.b	88.b	144.b	144.b
89.a	89.a	145.a	145.a
89.b	89.b	145.b	145.b
90.a	90.a	146.a	146.a
90.b	90.b	146.b	146.b
91.a	91.a	147.a	147.a
91.b	91.b	147.b	147.b
92.a	92.a	148.a	148.a
92.b	92.b	148.b	148.b
93.a	93.a	149.a	149.a
93.b	93.b	149.b	149.b
94.a	94.a	150.a	150.a
94.b	94.b	150.b	150.b
95.a	95.a	151.a	151.a
95.b	95.b	151.b	151.b
96.a	96.a	152.a	152.a
96.b	96.b	152.b	152.b
97.a	97.a	153.a	153.a
97.b	97.b	153.b	153.b
98.a	98.a	154.a	154.a
98.b	98.b	154.b	154.b
99.a	99.a	155.a	155.a
99.b	99.b	155.b	155.b
100.a	100.a	156.a	156.a
100.b	100.b	156.b	156.b
101.a	101.a	157.a	157.a
101.b	101.b	157.b	157.b
102.a	102.a	158.a	158.a
102.b	102.b	158.b	158.b
103.a	103.a	159.a	159.a
103.b	103.b	159.b	159.b
104.a	104.a	160.a	160.a
104.b	104.b	160.b	160.b
105.a	105.a	161.a	161.a
105.b	105.b	161.b	161.b
106.a	106.a	162.a	162.a
106.b	106.b	162.b	162.b
107.a	107.a	163.a	163.a

प्रस्तुतावृत्तिः	हस्तलिखितम्	रुद्रयामलतन्त्रम्	कोलकत्तावृत्तिः
107.b	107.b	163.b	163.b
108.a	108.a	164.a	164.a
108.b	108.b	164.b	164.b
109.a	109.a	165.a	165.a
109.b	109.b	165.b	165.b
110.a	110.a	166.a	166.a
110.b	110.b	166.b	166.b
111.a	111.a	167.a	167.a
111.b	111.b	167.b	167.b
112.a	112.a	168.a	168.a
112.b	112.b	168.b	168.b
113.a	113.a	169.a	169.a
113.b	113.b	169.b	169.b
114.a	114.a	170.a	170.a
114.b	114.b	170.b	170.b
115.a	115.a	171.a	171.a
115.b	115.b	171.b	171.b
116.a	116.a	172.a	172.a
116.b	116.b	172.b	172.b
117.a	117.a	173.a	173.a
117.b	117.b	173.b	173.b
118.a	118.a	174.a	174.a
118.b	118.b	174.b	174.b
119.a	119.a	175.a	175.a
119.b	119.b	175.b	175.b
120.a	120.a	176.a	176.a
120.b	120.b	176.b	176.b
121.a	121.a	177.a	177.a
121.b	121.b	177.b	177.b
122.a	122.a	178.a	178.a
122.b	122.b	178.b	178.b
123.a	123.a	179.a	179.a
123.b	123.b	179.b	179.b
124.a	124.a	180.a	180.a
124.b	124.b	180.b	180.b
125.a	125.a	181.a	181.a
125.b	125.b	181.b	181.b
126.a	126.a	182.a	182.a
126.b	126.b	182.b	182.b

प्रस्तुतावृत्तिः	हस्तलिखितम्	रुद्रयामलतन्त्रम्	कोलकत्तावृत्तिः
127.a	127.a	183.a	183.a
127.b	127.b	183.b	183.b
128.a	128.a	184.a	184.a
128.b	128.b	184.b	184.b
129.a	129.a	185.a	185.a
129.b	129.b	185.b	185.b
130.a	130.a	186.a	186.a
130.b	130.b	186.b	186.b
131.a	131.a	187.a	187.a
131.b	131.b	187.b	187.b
132.a	132.a	188.a	188.a
132.b	132.b	188.b	188.b
133.a	133.a	189.a	189.a
133.b	133.b	189.b	189.b
134.a	134.a	190.a	190.a
134.b	134.b	190.b	190.b
135.a	135.a	191.a	191.a
135.b	135.b	191.b	191.b
136.a	136.a	192.a	192.a
136.b	136.b	192.b	192.b
137.a	137.a	193.a	193.a
137.b	137.b	193.b	193.b
138.a	138.a	194.a	194.a
138.b	138.b	194.b	194.b
139.a	139.a	195.a	195.a
139.b	139.b	195.b	195.b
140.a	140.a	196.a	196.a
140.b	140.b	196.b	196.b
141.a	141.a	197.a	197.a
141.b	141.b	197.b	197.b
142.a	142.a	198.a	198.a
142.b	142.b	198.b	198.b
143.a	143.a	199.a	199.a
143.b	143.b	199.b	199.b
144.a	144.a	200.a	200.a
144.b	144.b	200.b	200.b
145.a	145.a	201.a	201.a
145.b	145.b	201.b	201.b
146.a	146.a	202.a	202.a

प्रस्तुतावृत्तिः	हस्तलिखितम्	रुद्रयामलतन्त्रम्	कोलकत्तावृत्तिः
146.b	146.b	202.b	202.b
147.a	147.a	203.a	203.a
147.b	147.b	203.b	203.b
148.a	148.a	204.a	204.a
148.b	148.b	204.b	204.b
149.a	149.a	205.a	205.a
149.b	149.b	205.b	205.b
150.a	150.a	206.a	206.a
150.b	150.b	206.b	206.b
151.a	151.a	207.a	207.a
151.b	151.b	207.b	207.b
152.a	152.a	215.a	215.a
152.b	152.b	215.b	215.b
153.a	153.a	216.a	216.a
153.b	153.b	216.b	216.b
154.a	154.a	217.a	217.a
155.a	155.a	230.a	230.a
155.b	155.b	230.b	230.b
156.a	156.a	239.a	239.a
157.a	157.a	240.a	240.a
158.a	158.a	242.a	242.a
159.a	159.a	243.a	243.a
160.a	160.a	244.a	244.a
160.b	160.b	244.b	244.b
161.a	161.a	245.a	245.a
161.b	161.b	245.b	245.b
162.a	162.a	246.a	246.a
162.b	162.b	246.b	246.b
163.a	163.a	247.a	247.a
163.b	163.b	247.b	247.b
164.a	164.a	248.a	248.a
164.b	164.b	248.b	248.b
165.a	165.a	249.a	249.a
165.b	165.b	249.b	249.b
166.a	166.a	250.a	250.a
166.b	166.b	250.b	250.b
167.a	167.a	251.a	251.a
167.b	167.b	251.b	251.b
168.a	168.a	252.a	252.a

प्रस्तुतावृत्तिः	हस्तलिखितम्	रुद्रयामलतन्त्रम्	कोलकत्तावृत्तिः
168.b	168.b	252.b	252.b
169.a	169.a	253.a	253.a
169.b	169.b	253.b	253.b
170.a	170.a	254.a	254.a
170.b	170.b	254.b	254.b
171.a	171.a	255.a	255.a
171.b	171.b	255.b	255.b
172.a	172.a	256.a	256.a
172.b	172.b	256.b	256.b
172.c	172.c	256.c	256.c
173.a	173.a	257.a	257.a
173.b	173.b	257.b	257.b
174.a	174.a	258.a	258.a
174.b	174.b	258.b	258.b
175.a	175.a	259.a	259.a
175.b	175.b	259.b	259.b
176.a	176.a	260.a	260.a
176.b	176.b	260.b	260.b
177.a	177.a	261.a	261.a
177.b	177.b	261.b	261.b
178.a	178.a	266.a	266.a
178.b	178.b	266.b	266.b
179.a	179.a	267.a	267.a
179.b	179.b	267.b	267.b
180.a	180.a	268.a	268.a
180.b	180.b	268.b	268.b
181.a	181.a	269.a	269.a
181.b	181.b	269.b	269.b
182.a	182.a	270.a	270.a
182.b	182.b	270.b	270.b
183.a	183.a	271.a	271.a
183.b	183.b	271.b	271.b
184.a	184.a	272.a	272.a
184.b	184.b	273.a	273.a
185.a	185.a	274.a	274.a
185.b	185.b	274.b	274.b
186.a	186.a	275.a	275.a
186.b	186.b	275.b	275.b
187.a	187.a	280.a	280.a

प्रस्तुतावृत्तिः	हस्तलिखितम्	रुद्रयामलतन्त्रम्	कोलकत्तावृत्तिः
188.a	188.a	281.a	281.a
189.a	189.a	282.a	282.a
189.b	189.b	282.b	282.b
190.a	190.a	283.a	283.a
190.b	190.b	283.b	283.b
191.a	191.a	285.a	285.a
191.b	191.b	285.b	285.b
192.a	192.a	286.a	286.a
192.a	192.a	288.a	288.a
193.b	193.b	288.b	288.b
194.a	194.a	289.a	289.a
195.a	195.a	296.a	296.a
196.a	196.a	297.a	297.a
196.b	196.b	297.b	297.b
197.a	197.a	298.a	298.a
197.b	197.b	298.b	298.b
198.a	198.a	302.a	302.a
198.b	198.b	302.b	302.b
199.a	199.a	303.a	303.a
199.b	199.b	303.b	303.b
200.a	200.a	315.a	315.a
200.b	200.b	315.b	315.b
201.a	201.a	316.a	316.a
201.b	201.b	316.b	316.b
202.a	202.a	319.a	319.a
202.b	202.b	319.b	319.b
203.a	203.a	320.a	320.a
203.b	203.b	320.b	320.b
204.a	204.a	321.a	321.a
204.b	204.b	321.b	321.b
205.a	205.a	322.a	322.a
205.b	205.b	322.b	322.b
206.a	206.a	323.a	323.a
206.b	206.b	323.b	323.b
207.a	207.a	324.a	324.a
207.b	207.b	324.b	324.b
208.a	208.a	325.a	325.a
208.b	208.b	325.b	325.b
209.a	209.a	326.a	326.a

प्रस्तुतावृत्तिः	हस्तलिखितम्	रुद्रयामलतन्त्रम्	कोलकत्तावृत्तिः
209.b	209.b	326.b	326.b
210.a	210.a	327.a	327.a
210.b	210.b	327.b	327.b
211.a	211.a	328.a	328.a
211.b	211.b	328.b	328.b
212.a	212.a	329.a	329.a
212.b	212.b	329.b	329.b
213.a	213.a	330.a	330.a
214.a	214.a	331.a	331.a
215.a	215.a	332.a	332.a
215.b	215.b	332.b	332.b
216.a	216.a	333.a	333.a
216.b	216.b	333.b	333.b
217.a	217.a	334.a	334.a
217.b	217.b	334.b	334.b
218.a	218.a	336.a	336.a
219.a	219.a	337.a	337.a
219.b	219.b	337.b	337.b
220.a	220.a	338.a	338.a
220.b	220.b	338.b	338.b
221.a	221.a	343.a	343.a
221.b	221.b	343.b	343.b
222.a	222.a	344.a	344.a
222.b	222.b	344.b	344.b
223.a	223.a	345.a	345.a
223.b	223.b	345.b	345.b
224.a	224.a	346.a	346.a
224.b	224.b	346.b	346.b
225.a	225.a	347.a	347.a
225.b	225.b	347.b	347.b
226.a	226.a	348.a	348.a
226.b	226.b	348.b	348.b
227.a	227.a	349.a	349.a
228.a	228.a	350.a	350.a
229.a	229.a	351.a	351.a
229.b	229.b	351.b	351.b
230.a	230.a	352.a	352.a
230.b	230.b	352.b	352.b
231.a	231.a	353.a	353.a

प्रस्तुतावृत्तिः	हस्तलिखितम्	रुद्रयामलतन्त्रम्	कोलकत्तावृत्तिः
231.b	231.b	353.b	353.b
232.a	232.a	354.a	354.a
232.b	232.b	354.b	354.b
233.a	233.a	355.a	355.a
233.b	233.b	355.b	355.b
234.a	234.a	356.a	356.a
234.b	234.b	356.b	356.b
235.a	235.a	357.a	357.a
235.b	235.b	357.b	357.b
236.a	236.a	358.a	358.a
236.b	236.b	358.b	358.b
237.a	237.a	359.a	359.a
237.b	237.b	359.b	359.b
238.a	238.a	360.a	360.a
238.b	238.b	360.b	360.b
239.a	239.a	361.a	361.a
239.b	239.b	361.b	361.b
240.a	240.a	362.a	362.a
240.b	240.b	362.b	362.b
241.a	241.a	363.a	363.a
241.b	241.b	363.b	363.b
242.a	242.a	364.a	364.a
242.b	242.b	364.b	364.b
243.a	243.a	365.a	365.a
243.b	243.b	365.b	365.b
244.a	244.a	366.a	366.a
244.b	244.b	366.b	366.b
245.a	245.a	367.a	367.a
245.b	245.b	367.b	367.b
245.c	245.c	367.c	367.c
245.d	245.d	367.d	367.d
246.a	246.a	368.a	368.a
246.b	246.b	368.b	368.b
247.a	247.a	369.a	369.a
247.b	247.b	369.b	369.b
248.a	248.a	370.a	370.a
248.b	248.b	370.b	370.b
249.a	249.a	371.a	371.a
249.b	249.b	371.b	371.b

प्रस्तुतावृत्तिः	हस्तलिखितम्	रुद्रयामलतन्त्रम्	कोलकत्तावृत्तिः
250.a	250.a	372.a	372.a
250.b	250.b	372.b	372.b
251.a	251.a	373.a	373.a
251.b	251.b	373.b	373.b
251.c	251.c	373.c	373.c
252.a	252.a	374.a	374.a
252.b	252.b	374.b	374.b
253.a	253.a	375.a	375.a
253.b	253.b	375.b	375.b
254.a	254.a	376.a	376.a
254.b	254.b	376.b	376.b
255.a	255.a	377.a	377.a
255.b	255.b	377.b	377.b
256.a	256.a	378.a	378.a
256.b	256.b	378.b	378.b
257.a	257.a	379.a	379.a
257.b	257.b	379.b	379.b
258.a	258.a	380.a	380.a
258.b	258.b	380.b	380.b
259.a	259.a	381.a	381.a
259.b	259.b	381.b	381.b
260.a	260.a	382.a	382.a
260.b	260.b	382.b	382.b
261.a	261.a	383.a	383.a
261.b	261.b	383.b	383.b
262.a	262.a	384.a	384.a
262.b	262.b	384.b	384.b
263.a	263.a	385.a	385.a
263.b	263.b	385.b	385.b
264.a	264.a	386.a	386.a
265.a	265.a	387.a	387.a
265.b	265.b	387.b	387.b
266.a	266.a	388.a	388.a
266.b	266.b	388.b	388.b
267.a	267.a	389.a	389.a
267.b	267.b	389.b	389.b
268.a	268.a	390.a	390.a
268.b	268.b	390.b	390.b
269.a	269.a	391.a	391.a

प्रस्तुतावृत्तिः	हस्तलिखितम्	रुद्रयामलतन्त्रम्	कोलकत्तावृत्तिः
269.b	269.b	391.b	391.b
270.a	270.a	392.a	392.a
270.b	270.b	392.b	392.b
271.a	271.a	393.a	393.a
271.b	271.b	393.b	393.b
272.a	272.a	394.a	394.a
272.b	272.b	394.b	394.b
273.a	273.a	395.a	395.a
273.b	273.b	395.b	395.b
274.a	274.a	396.a	396.a
274.b	274.b	396.b	396.b
275.a	275.a	397.a	397.a
275.b	275.b	397.b	397.b
276.a	276.a	398.a	398.a
276.b	276.b	398.b	398.b
277.a	277.a	399.a	399.a
277.b	277.b	399.b	399.b
278.a	278.a	400.a	400.a
278.b	278.b	400.b	400.b
279.a	279.a	401.a	401.a
279.b	279.b	401.b	401.b
280.a	280.a	402.a	402.a
280.b	280.b	402.b	402.b
281.a	281.a	403.a	403.a
281.b	281.b	403.b	403.b
282.a	282.a	404.a	404.a
282.b	282.b	404.b	404.b
283.a	283.a	405.a	405.a
283.b	283.b	405.b	405.b
284.a	284.a	406.a	406.a
284.b	284.b	406.b	406.b
284.c	284.c	406.c	406.c
285.a	285.a	407.a	407.a
285.b	285.b	407.b	407.b
286.a	286.a	408.a	408.a
286.b	286.b	408.b	408.b
287.a	287.a	409.a	409.a
287.b	287.b	409.b	409.b
288.a	288.a	410.a	410.a

प्रस्तुतावृत्तिः	हस्तलिखितम्	रुद्रयामलतन्त्रम्	कोलकत्तावृत्तिः
288.b	288.b	410.b	410.b
289.a	289.a	411.a	411.a
289.b	289.b	411.b	411.b
290.a	290.a	412.a	412.a
290.b	290.b	412.b	412.b
291.a	291.a	413.a	413.a
291.b	291.b	413.b	413.b
292.a	292.a	414.a	414.a
292.b	292.b	414.b	414.b
293.a	293.a	415.a	415.a
293.b	293.b	415.b	415.b
294.a	294.a	416.a	416.a
294.b	294.b	416.b	416.b
295.a	295.a	417.a	417.a
295.b	295.b	417.b	417.b
296.a	296.a	418.a	418.a
296.b	296.b	418.b	418.b
297.a	297.a	419.a	419.a
297.b	297.b	419.b	419.b
298.a	298.a	420.a	420.a
298.b	298.b	420.b	420.b
299.a	299.a	421.a	421.a
299.b	299.b	421.b	421.b
300.a	300.a	423.a	423.a
300.b	300.b	423.b	423.b
300.c	300.c	423.c	423.c
301.a	301.a	424.a	424.a
301.b	301.b	424.b	424.b
302.a	302.a	425.a	425.a
302.b	302.b	425.b	425.b
303.a	303.a	426.a	426.a
303.b	303.b	426.b	426.b
304.a	304.a	427.a	427.a
304.b	304.b	427.b	427.b
305.a	305.a	428.a	428.a
305.b	305.b	428.b	428.b
306.a	306.a	429.a	429.a
306.b	306.b	429.b	429.b
307.a	307.a	430.a	430.a

प्रस्तुतावृत्तिः	हस्तलिखितम्	रुद्रयामलतन्त्रम्	कोलकत्तावृत्तिः
307.b	307.b	430.b	430.b
308.a	308.a	431.a	431.a
308.b	308.b	431.b	431.b
309.a	309.a	432.a	432.a
309.b	309.b	432.b	432.b
310.a	310.a	435.a	435.a
310.b	310.b	435.b	435.b
311.a	311.a	436.a	436.a
311.b	311.b	436.b	436.b
312.a	312.a	437.a	437.a
313.a	313.a	438.a	438.a
313.b	313.b	438.b	438.b
314.a	314.a	439.a	439.a
314.b	314.b	439.b	439.b
315.a	315.a	440.a	440.a
315.b	315.b	440.b	440.b
316.a	316.a	441.a	441.a
316.b	316.b	441.b	441.b
317.a	317.a	442.a	442.a
317.b	317.b	442.b	442.b
318.a	318.a	443.a	443.a
318.b	318.b	443.b	443.b
319.a	319.a	444.a	444.a
319.b	319.b	444.b	444.b
320.a	320.a	445.a	445.a
320.b	320.b	445.b	445.b
321.a	321.a	446.a	446.a
321.b	321.b	446.b	446.b
322.a	322.a	449.a	449.a
322.b	322.b	449.b	449.b
323.a	323.a	450.a	450.a
323.b	323.b	450.b	450.b
324.a	324.a	451.a	451.a
324.b	324.b	451.b	451.b
325.a	325.a	452.a	452.a
326.a	326.a	458.a	458.a
326.b	326.b	458.b	458.b
327.a	327.a	459.a	459.a
327.b	327.b	459.b	459.b

प्रस्तुतावृत्तिः	हस्तलिखितम्	रुद्रयामलतन्त्रम्	कोलकत्तावृत्तिः
328.a	328.a	460.a	460.a
328.b	328.b	460.b	460.b
329.a	329.a	461.a	461.a
329.b	329.b	461.b	461.b
330.a	330.a	462.a	462.a
330.b	330.b	462.b	462.b
331.a	331.a	463.a	463.a
331.b	331.b	463.b	463.b
332.a	332.a	464.a	464.a
332.b	332.b	464.b	464.b
333.a	333.a	465.a	465.a
333.b	333.b	465.b	465.b
334.a	334.a	466.a	466.a
334.b	334.b	466.b	466.b
335.a	335.a	467.a	467.a
335.b	335.b	467.b	467.b
336.a	336.a	468.a	468.a
336.b	336.b	468.b	468.b
337.a	337.a	469.a	469.a
337.b	337.b	469.b	469.b
338.a	338.a	470.a	470.a
338.b	338.b	470.b	470.b
339.a	339.a	471.a	471.a
339.b	339.b	471.b	471.b
340.a	340.a	472.a	472.a
340.b	340.b	472.b	472.b
341.a	341.a	473.a	473.a
341.b	341.b	473.b	473.b
342.a	342.a	474.a	474.a
342.b	342.b	474.b	474.b
343.a	343.a	475.a	475.a
343.b	343.b	475.b	475.b
344.a	344.a	478.a	478.a
344.b	344.b	478.b	478.b
345.a	345.a	479.a	479.a
345.b	345.b	479.b	479.b
346.a	346.a	480.a	480.a
346.b	346.b	480.b	480.b
347.a	347.a	481.a	481.a

प्रस्तुतावृत्तिः	हस्तलिखितम्	रुद्रयामलतन्त्रम्	कोलकत्तावृत्तिः
347.b	347.b	481.b	481.b
348.a	348.a	482.a	482.a
348.b	348.b	482.b	482.b
349.a	349.a	483.a	483.a
349.b	349.b	483.b	483.b
350.a	350.a	484.a	484.a
350.b	350.b	484.b	484.b
351.a	351.a	485.a	485.a
352.a	352.a	486.a	486.a
352.b	352.b	486.b	486.b
353.a	353.a	487.a	487.a
353.b	353.b	487.b	487.b
354.a	354.a	488.a	488.a
354.b	354.b	488.b	488.b
355.a	355.a	489.a	489.a
355.b	355.b	489.b	489.b
356.a	356.a	490.a	490.a
356.b	356.b	490.b	490.b
357.a	357.a	491.a	491.a
357.b	357.b	491.b	491.b
358.a	358.a	492.a	492.a
359.a	359.a	493.a	493.a
359.b	359.b	493.b	493.b
360.a	360.a	494.a	494.a
360.b	360.b	494.b	494.b
361.a	361.a	495.a	495.a
361.b	361.b	495.b	495.b
362.a	362.a	496.a	496.a
362.b	362.b	496.b	496.b
363.a	363.a	498.a	498.a
364.a	364.a	499.a	499.a
364.b	364.b	499.b	499.b
365.a	365.a	500.a	500.a
365.b	365.b	500.b	500.b
366.a	366.a	501.a	501.a
366.b	366.b	501.b	501.b
367.a	367.a	502.a	502.a
367.b	367.b	502.b	502.b
368.a	368.a	503.a	503.a

प्रस्तुतावृत्तिः	हस्तलिखितम्	रुद्रयामलतन्त्रम्	कोलकत्तावृत्तिः
369.a	369.a	504.a	504.a
370.a	370.a	505.a	505.a
370.b	370.b	505.b	505.b
371.a	371.a	506.a	506.a
371.b	371.b	506.b	506.b
372.a	372.a	507.a	507.a
372.b	372.b	507.b	507.b
373.a	373.a	508.a	508.a
373.b	373.b	508.b	508.b
374.a	374.a	509.a	509.a
374.b	374.b	509.b	509.b
375.a	375.a	510.a	510.a
376.a	376.a	511.a	511.a
376.b	376.b	511.b	511.b
377.a	377.a	512.a	512.a
377.b	377.b	512.b	512.b
378.a	378.a	513.a	513.a
378.b	378.b	513.b	513.b
379.a	379.a	514.a	514.a
379.b	379.b	514.b	514.b
380.a	380.a	515.a	515.a
380.b	380.b	515.b	515.b
381.a	381.a	516.a	516.a
381.b	381.b	516.b	516.b
382.a	382.a	517.a	517.a
382.b	382.b	517.b	517.b
383.a	383.a	518.a	518.a
383.b	383.b	518.b	518.b
384.a	384.a	519.a	519.a
385.a	385.a	521.a	521.a
385.b	385.b	521.b	521.b
386.a	386.a	522.a	522.a
386.b	386.b	522.b	522.b
387.a	387.a	523.a	523.a
387.b	387.b	523.b	523.b
388.a	388.a	524.a	524.a
388.b	388.b	524.b	524.b
389.a	389.a	525.a	525.a
389.b	389.b	525.b	525.b

प्रस्तुतावृत्तिः	हस्तलिखितम्	रुद्रयामलतन्त्रम्	कोलकत्तावृत्तिः
390.a	390.a	526.a	526.a
390.b	390.b	526.b	526.b
391.a	391.a	527.a	527.a
391.b	391.b	527.b	527.b
392.a	392.a	528.a	528.a
392.b	392.b	528.b	528.b
393.a	393.a	529.a	529.a
393.b	393.b	529.b	529.b
394.a	394.a	530.a	530.a
394.b	394.b	530.b	530.b
395.a	395.a	533.a	533.a
395.b	395.b	533.b	533.b
396.a	396.a	534.a	534.a
396.b	396.b	534.b	534.b
397.a	397.a	535.a	535.a
397.b	397.b	535.b	535.b
398.a	398.a	536.a	536.a
398.a	398.a	541.a	541.a
399.b	399.b	541.b	541.b
400.a	400.a	542.a	542.a
401.a	401.a	547.a	547.a
401.b	401.b	547.b	547.b
402.a	402.a	548.a	548.a
402.b	402.b	548.b	548.b
403.a	403.a	549.a	549.a
403.b	403.b	549.b	549.b
404.a	404.a	554.a	554.a
404.b	404.b	554.b	554.b
405.a	405.a	558.a	558.a
405.b	405.b	558.b	558.b
406.a	406.a	559.a	559.a
406.b	406.b	559.b	559.b
407.a	407.a	560.a	560.a
408.a	408.a	561.a	561.a
409.a	409.a	563.a	563.a
409.b	409.b	563.b	563.b
410.a	410.a	564.a	564.a
411.a	411.a	565.a	565.a
411.b	411.b	565.b	565.b

प्रस्तुतावृत्तिः	हस्तलिखितम्	रुद्रयामलतन्त्रम्	कोलकत्तावृत्तिः
412.a	412.a	567.a	567.a
413.a	413.a	568.a	568.a
413.b	413.b	568.b	568.b
414.a	414.a	569.a	569.a
414.b	414.b	569.b	569.b
415.a	415.a	570.a	570.a
415.b	415.b	570.b	570.b
416.a	416.a	571.a	571.a
416.b	416.b	571.b	571.b
417.a	417.a	572.a	572.a
417.b	417.b	572.b	572.b
418.a	418.a	573.a	573.a
418.b	418.b	573.b	573.b
419.a	419.a	574.a	574.a
419.b	419.b	574.b	574.b
420.a	420.a	575.a	575.a
420.b	420.b	575.b	575.b
421.a	421.a	576.a	576.a
421.b	421.b	576.b	576.b
422.a	422.a	577.a	577.a
422.b	422.b	577.b	577.b
423.a	423.a	578.a	578.a
423.b	423.b	578.b	578.b
424.a	424.a	581.a	581.a
424.b	424.b	581.b	581.b
425.a	425.a	582.a	582.a
425.b	425.b	582.b	582.b
426.a	426.a	583.a	583.a
426.b	426.b	583.b	583.b
427.a	427.a	584.a	584.a
427.b	427.b	584.b	584.b
428.a	428.a	585.a	585.a
428.b	428.b	585.b	585.b
429.a	429.a	586.a	586.a
429.b	429.b	586.b	586.b
430.a	430.a	587.a	587.a
430.b	430.b	587.b	587.b
431.a	431.a	588.a	588.a
431.b	431.b	588.b	588.b

प्रस्तुतावृत्तिः	हस्तलिखितम्	रुद्रयामलतन्त्रम्	कोलकत्तावृत्तिः
432.a	432.a	589.a	589.a
432.b	432.b	589.b	589.b
433.a	433.a	590.a	590.a
433.b	433.b	590.b	590.b
434.a	434.a	591.a	591.a
434.b	434.b	591.b	591.b
435.a	435.a	592.a	592.a
435.b	435.b	592.b	592.b
436.a	436.a	593.a	593.a
436.b	436.b	593.b	593.b
437.a	437.a	594.a	594.a
437.b	437.b	594.b	594.b
438.a	438.a	595.a	595.a
438.b	438.b	595.b	595.b
439.a	439.a	596.a	596.a
439.b	439.b	596.b	596.b
440.a	440.a	597.a	597.a
440.b	440.b	597.b	597.b
441.a	441.a	598.a	598.a
441.b	441.b	598.b	598.b
442.a	442.a	599.a	599.a
442.b	442.b	599.b	599.b
443.a	443.a	600.a	600.a
443.b	443.b	600.b	600.b
444.a	444.a	601.a	601.a
444.b	444.b	601.b	601.b
445.a	445.a	602.a	602.a
445.b	445.b	602.b	602.b
446.a	446.a	603.a	603.a
446.b	446.b	603.b	603.b
447.a	447.a	604.a	604.a
447.b	447.b	604.b	604.b
448.a	448.a	605.a	605.a
448.b	448.b	605.b	605.b
449.a	449.a	606.a	606.a
449.b	449.b	606.b	606.b
450.a	450.a	607.a	607.a
450.b	450.b	607.b	607.b
451.a	451.a	608.a	608.a

प्रस्तुतावृत्तिः	हस्तलिखितम्	रुद्रयामलतन्त्रम्	कोलकत्तावृत्तिः
451.b	451.b	608.b	608.b
452.a	452.a	609.a	609.a
452.b	452.b	609.b	609.b
453.a	453.a	610.a	610.a
453.b	453.b	610.b	610.b
454.a	454.a	612.a	612.a
454.b	454.b	612.b	612.b
455.a	455.a	613.a	613.a
455.b	455.b	613.b	613.b
456.a	456.a	614.a	614.a
456.b	456.b	614.b	614.b
457.a	457.a	618.a	618.a
457.b	457.b	618.b	618.b
458.a	458.a	628.a	628.a
458.b	458.b	628.b	628.b
459.a	459.a	629.a	629.a
460.a	460.a	651.a	651.a
460.b	460.b	651.b	651.b
460.c	460.c	651.c	651.c
460.d	460.d	651.d	651.d
461.a	461.a	652.a	652.a
461.b	461.b	652.b	652.b
462.a	462.a	653.a	653.a
462.b	462.b	653.b	653.b
463.a	463.a	654.a	654.a
463.b	463.b	654.b	654.b
464.a	464.a	657.a	657.a
464.b	464.b	657.b	657.b
465.a	465.a	658.a	658.a
466.a	466.a	664.a	664.a
467.a	467.a	665.a	665.a
467.b	467.b	665.b	665.b
468.a	468.a	666.a	666.a
468.b	468.b	666.b	666.b
469.a	469.a	667.a	667.a
469.b	469.b	667.b	667.b
470.a	470.a	668.a	668.a
470.b	470.b	668.b	668.b
471.a	471.a	669.a	669.a

प्रस्तुतावृत्तिः	हस्तलिखितम्	रुद्रयामलतन्त्रम्	कोलकत्तावृत्तिः
471.b	471.b	669.b	669.b
472.a	472.a	670.a	670.a
472.b	472.b	670.b	670.b
473.a	473.a	671.a	671.a
473.b	473.b	671.b	671.b
474.a	474.a	672.a	672.a
474.b	474.b	672.b	672.b
475.a	475.a	673.a	673.a
475.b	475.b	673.b	673.b
476.a	476.a	674.a	674.a
476.b	476.b	674.b	674.b
477.a	477.a	675.a	675.a
477.b	477.b	676.a	676.a
477.c	477.c	676.b	676.b
478.a	478.a	677.a	677.a
478.b	478.b	677.b	677.b
479.a	479.a	678.a	678.a
479.b	479.b	678.b	678.b
480.a	480.a	679.a	679.a
480.b	480.b	679.b	679.b
481.a	481.a	680.a	680.a
481.b	481.b	680.b	680.b
482.a	482.a	681.a	681.a
482.b	482.b	681.b	681.b
483.a	483.a	693.a	693.a
483.b	483.b	693.b	693.b
484.a	484.a	694.a	694.a
484.b	484.b	694.b	694.b
485.a	485.a	695.a	695.a
485.b	485.b	695.b	695.b
486.a	486.a	696.a	696.a
486.b	486.b	696.b	696.b
487.a	487.a	697.a	697.a
487.b	487.b	697.b	697.b
488.a	488.a	698.a	698.a
489.a	489.a	698.b	698.b
489.b	489.b	698.c	698.c
490.a	490.a	702.a	702.a
490.b	490.b	702.b	702.b

प्रस्तुतावृत्तिः	हस्तलिखितम्	रुद्रयामलतन्त्रम्	कोलकत्तावृत्तिः
491.a	491.a	703.a	703.a
491.b	491.b	703.b	703.b
492.a	492.a	704.a	704.a
492.b	492.b	704.b	704.b
493.a	493.a	705.a	705.a
493.b	493.b	705.b	705.b
494.a	494.a	713.a	713.a
494.b	494.b	713.b	713.b
495.a	495.a	714.a	714.a
495.b	495.b	714.b	714.b
496.a	496.a	715.a	715.a
497.a	497.a	716.a	716.a
497.b	497.b	716.b	716.b
498.a	498.a	717.a	717.a
498.b	498.b	717.b	717.b
499.a	499.a	718.a	718.a
499.b	499.b	718.b	718.b
500.a	500.a	719.a	719.a
500.b	500.b	719.b	719.b
501.a	501.a	720.a	720.a
501.b	501.b	720.b	720.b
502.a	502.a	721.a	721.a
502.b	502.b	721.b	721.b
503.a	503.a	722.a	722.a
503.b	503.b	722.b	722.b
504.a	504.a	723.a	723.a
504.b	504.b	723.b	723.b
505.a	505.a	724.a	724.a
505.b	505.b	724.b	724.b
506.a	506.a	725.a	725.a
506.b	506.b	725.b	725.b
507.a	507.a	726.a	726.a
507.b	507.b	726.b	726.b
508.a	508.a	727.a	727.a
508.b	508.b	727.b	727.b
509.a	509.a	728.a	728.a
510.a	510.a	729.a	729.a
511.a	511.a	730.a	730.a
511.b	511.b	730.b	730.b

प्रस्तुतावृत्तिः	हस्तलिखितम्	रुद्रयामलतन्त्रम्	कोलकत्तावृत्तिः
512.a	512.a	731.a	731.a
512.b	512.b	731.b	731.b
513.a	513.a	732.a	732.a
513.b	513.b	732.b	732.b
514.a	514.a	733.a	733.a
514.b	514.b	733.b	733.b
515.a	515.a	734.a	734.a
516.a	516.a	738.a	738.a
516.b	516.b	738.b	738.b
517.a	517.a	739.a	739.a
517.b	517.b	739.b	739.b
518.a	518.a	740.a	740.a
518.b	518.b	740.b	740.b
519.a	519.a	741.a	741.a
519.b	519.b	741.b	741.b
520.a	520.a	742.a	742.a
520.b	520.b	742.b	742.b
521.a	521.a	743.a	743.a
521.b	521.b	743.b	743.b
522.a	522.a	744.a	744.a
522.b	522.b	744.b	744.b
523.a	523.a	745.a	745.a
524.a	524.a	745.b	745.b
524.b	524.b	745.c	745.c
525.a	525.a	746.a	746.a
526.a	526.a	747.a	747.a
526.b	526.b	747.b	747.b
527.a	527.a	748.a	748.a
527.b	527.b	748.b	748.b
528.a	528.a	749.a	749.a
528.b	528.b	749.b	749.b
529.a	529.a	750.a	750.a
529.b	529.b	750.b	750.b
530.a	530.a	751.a	751.a
530.b	530.b	751.b	751.b
531.a	531.a	752.a	752.a
531.b	531.b	752.b	752.b
532.a	532.a	752.c	752.c
533.a	533.a	753.a	753.a

प्रस्तुतावृत्तिः	हस्तलिखितम्	रुद्रयामलतन्त्रम्	कोलकत्तावृत्तिः
533.b	533.b	753.b	753.b
534.a	534.a	754.a	754.a
534.b	534.b	754.b	754.b
535.a	535.a	755.a	755.a
535.b	535.b	755.b	755.b
536.a	536.a	757.a	757.a
537.a	537.a	759.a	759.a
537.b	537.b	759.b	759.b
538.a	538.a	760.a	760.a
538.b	538.b	760.b	760.b
539.a	539.a	762.a	762.a
539.b	539.b	762.b	762.b
540.a	540.a	763.a	763.a
540.b	540.b	763.b	763.b
541.a	541.a	764.a	764.a
541.b	541.b	764.b	764.b
542.a	542.a	765.a	765.a
543.a	543.a	766.a	766.a
544.a	544.a	767.a	767.a
544.b	544.b	767.b	767.b
545.a	545.a	768.a	768.a
545.b	545.b	768.b	768.b
546.a	546.a	770.a	770.a
546.b	546.b	770.b	770.b
547.a	547.a	771.a	771.a
547.b	547.b	771.b	771.b
548.a	548.a	774.a	774.a
549.a	549.a	775.a	775.a
549.b	549.b	775.b	775.b
550.a	550.a	776.a	776.a
551.a	551.a	777.a	777.a
551.b	551.b	777.b	777.b
552.a	552.a	778.a	778.a
552.b	552.b	778.b	778.b
553.a	553.a	779.a	779.a
553.b	553.b	779.b	779.b
554.a	554.a	780.a	780.a
555.a	555.a	780.b	780.b
555.b	555.b	780.c	780.c

प्रस्तुतावृत्तिः	हस्तलिखितम्	रुद्रयामलतन्त्रम्	कोलकत्तावृत्तिः
556.a	556.a	783.a	783.a
556.b	556.b	783.b	783.b
556.c	556.c	783.c	783.c
556.d	556.d	783.d	783.d
557.a	557.a	784.a	784.a
557.b	557.b	784.b	784.b
558.a	558.a	785.a	785.a
558.b	558.b	785.b	785.b
559.a	559.a	786.a	786.a
559.b	559.b	786.b	786.b
560.a	560.a	787.a	787.a
560.b	560.b	787.b	787.b
561.a	561.a	788.a	788.a
561.b	561.b	788.b	788.b
562.a	562.a	789.a	789.a
562.b	562.b	789.b	789.b
563.a	563.a	792.a	792.a
563.b	563.b	792.b	792.b
564.a	564.a	793.a	793.a
564.b	564.b	793.b	793.b
565.a	565.a	794.a	794.a
565.b	565.b	794.b	794.b
566.a	566.a	795.a	795.a
566.b	566.b	795.b	795.b
567.a	567.a	796.a	796.a
567.b	567.b	796.b	796.b
568.a	568.a	797.a	797.a
568.b	568.b	797.b	797.b
569.a	569.a	799.a	799.a
569.b	569.b	799.b	799.b
570.a	570.a	802.a	802.a
571.a	571.a	803.a	803.a
571.b	571.b	803.b	803.b
572.a	572.a	806.a	806.a
572.b	572.b	806.b	806.b
573.a	573.a	807.a	807.a
573.b	573.b	807.b	807.b
574.a	574.a	808.a	808.a
574.b	574.b	808.b	808.b

प्रस्तुतावृत्तिः	हस्तलिखितम्	रुद्रयामलतन्त्रम्	कोलकत्तावृत्तिः
575.a	575.a	809.a	809.a
576.a	576.a	810.a	810.a
577.a	577.a	811.a	811.a
577.b	577.b	811.b	811.b
578.a	578.a	812.a	812.a
578.b	578.b	812.b	812.b
579.a	579.a	813.a	813.a
579.b	579.b	813.b	813.b

॥ श्रीरुद्रयामलतन्त्रे ॥

॥ अथ रसार्णवकल्पः ॥

रसः सर्वमयो धातुर्येन तुष्ट उमापतिः ।

किं पुनर्बहुनोक्तेन त्वन्यथा तेन तस्य किम् ॥१॥

शशिरूपमये पात्रे मर्दनं लिङ्गसंस्थितम् ।

दिव्यायाश्चौषधेर्योगे तत्पुटं च सुखप्रदम् ।।२॥

सूतसंपत्तिकाले तु धातुरूपी रसः शुभः ।

तच्छूतो[1] येन सन्तुष्टस्त्रिदशैरपि दुर्जयः ॥३।।

रम्यप्रदेशे सुस्थश्च सुप्रशस्ते शुभे दिने ।

तत्र कार्यमिदं स्पष्टमेकान्ते सुविचारितम् ।।४॥

पारदस्य हेमवर्त्तनम्

तुलार्द्धसम्मितं तौल्यं हरितालं सुपेषयेत् ।

शुष्कं भृङ्गरसैर्युक्तं समानं पुटं[2] कारयेत्[2] ॥५॥

पश्चाद्विपेषयेत्सूक्ष्मं त्रिदिनं निश्चलस्थितम् ।

आतपेन विना शुष्कमपामार्गं पुटत्रयम् ।।६।।

सूक्ष्मं निष्पीडयेत्पश्चाच्छायाशुष्कं[3] तु[3] सर्वदा।

पयोवल्लीं नवपुटं महाशुष्कं विपेषयेत् ॥७॥

अथ पुष्पीं समागृह्य श्वेतां च गिरिकर्णिकाम् ।

शतटङ्कीरसं कृत्वा छायाशुष्केन मेलयेत् ॥८॥

---

[1] अस्पष्टम्

[2] पुटकारयेत्

[3] ...शुष्कन्तु

शम्भुं चैवार्कवल्लीं तु वेल्लकारं सुशीरकीम् ।

नागवल्लीरसैर्मिश्रं शतटङ्कीरसैः पृथक् ।।९॥

पुटं चैकादशं कृत्वा तालकेन नियोजयेत् ।

द्वयोर्विमिश्रितं सूक्ष्मं लेपं तालेन पीडयेत् ॥१०॥

एतयोर्योगं संगृह्य रसेनैकेन वा पुनः।

षट्पुटं नयमानं तु छादनीयं प्रयत्नतः ।।११॥

पुष्टां कुमारीं बहुलारसं च

निष्पीड्य तेषां रसमूलकेन ।

गोपनीयं रसधातुमुत्तमं

भो नरेन्द्र कुरु हेमवर्तनम् ॥१२॥

हिङ्गुलायाः अभ्यवकर्षणम्

हिङ्गुला परिनिपीडिता दृढा

कन्यकैकादशसंयुता तदा।

सूक्ष्मवस्त्रगलिता सुतालके

मिश्रके भवति निश्चलो रसः ।।१३।।

पत्रहंसगमनी गजध्वजी

लज्जकार्कनमिता ह्यनामिका।

अर्कविश्वमिति पक्षयुते वै

बल्लके दशदशाष्ट संयुते ॥१४॥

शुष्क आतपं विना निपीडितः

वर्द्धितो जनकजास्त्रवीरसे ।

कारयेत्तु सुदृढं रसायनम्

अर्कपिप्पलजटाधरे न्यसेत् ॥१५॥

ताडयेत्तु पयसि गुणात्मके

कारयेत्तु गुटिकां शुभालये।

सप्तवारितरितं शुभमस्तु

यो धातुभेदवदिह निश्चलम् ॥१६।।

कारितां न सुभगां सुकूपिकां

निर्व्रणां च सुदृढां समृद्धयेत् ।

तस्या मध्ये निवेशयेदिदं

मुद्रयन्तु सुदृढं कूपिकामुखम् ।।१७।।

सप्तविंशतिमितैश्च यामकैः

धारयेदनलस्योपरिस्थिताम् ।

वीक्षयेच्छिवमना भवात्मिका

मिश्रितौषधरतैकपाटवैः ॥१८॥

तावत्तु ताडयेत्तेषां यावद्बध्नाति पिण्डिकाम् ।

कूपीमध्ये स्थिता रक्ता गुटिका रसवीर्यदा ।।१९।।

यदा च पश्येदरुणानिभां शुभां

प्रभातबाला[1]रुणतार्ककान्तिम् ।

विराजमानं दृढकूपिकाग्रं

प्राप्तव्यमेतद् गटिकाशु भाग्यैः ।।२०।।

गुटिका च रसायनी शुभा

सुलभा मानससंयुततत्परैः ।

पूर्वजन्मकृतपुण्यपावनैः

हेमनाशगुटिका पयोनिधिः ॥२१॥

---

[1] वाला.... अशुद्धपाठः

गन्धके जारणम्

निशाचररसे देवि गन्धकं भावयेत्ततः ।

तमत्र सप्तवारं तु द्विपद्याश्च रसेन तु ॥२२॥

तारपत्रस्य लेपेन त्वर्द्धार्धं काञ्चनोपमम् ।

गन्धके समजीर्णेऽस्मिन् शतवेधी भवेद्रसः ॥२३॥

तद्रसे गन्धकं दत्त्वा पत्रलेपे रवौ हते ।

ततश्च तारमध्ये तु त्रिगुणं वाहयेत्ततः ॥२४॥

हेमार्द्धमिलिते हेममात्रिका समतां व्रजेत् ।

निशाचररसैर्भाव्यं सप्तवारं तु तालकम् ॥२५॥

तेनैव घातयेद्वङ्गं तारेण निर्वहेत् परम् ।

तं तारं भावयेत्सूतं तत्सूतं बन्धनं भवेत् ॥२६॥

लेपमात्रेण तेनैव चतुःषष्टितमो भवेत् ।

शुल्वं तु दापयेत्तारैस्तत्तारं काञ्चनं भवेत् ॥२७॥

तत्तारे जायते श्रेष्ठं धर्मकामार्थसिद्धिदम् ।

निशाचरफलं तैलं ग्राह्यं पातालयन्त्रके ॥२८॥

तेन तैलेन देवेशि रसं संकोचयेद्बुधः ।

तत्क्षणाज्जायते देवि पुटबद्धो महारसः ॥२९॥

कटुक-टङ्कणाभ्यां च कार्यं लिङ्गं वरानने ।

सङ्कोचमारणं तेन कर्तव्यं परमाद्भुतम् ॥३०॥

निशाचररसे क्षिप्तं सप्तवारं तु भास्करम् ।

कालिकारहितं तेन जायते कनकप्रभम् ॥३१॥

ततो रससमं ग्राह्यं तेन सिक्तं तु वापितम् ।

दशांशं वेधयेत्सूतं दशवापि शतेन च ॥३२॥

शतं वेधयते लक्षं सहस्रं कोटिवेधकम् ।

दशांशं मर्दयेत्तेन गतदेहं तु कारयेत् ॥३३॥

दशांशे लक्षवेधी स्यात्प्रागुक्तेन समेन तु ।

तद्रसे गन्धकं साक्षाद्द्रावयित्वा लयेत्पुनः ॥३४॥

लेपमात्रेण तेनैव कुष्ठानष्टादश प्रिये ।

अर्शं भगन्दरं लूतां शिरोरोगांश्च नाशयेत् ॥३५॥

निशाचरस्य पत्राणि सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् ।

पलानि दश चूर्णस्य भूधात्र्यापि विभावयेत् ॥३६॥

घृतेन मधुनालोड्य नवभाण्डे विनिक्षिपेत् ।

धान्यराशौ निधातव्यं त्रिसप्ताहं सुरेश्वरि ॥३७॥

तस्य भक्षितमात्रेण वलीपलितजितः ।

अर्धमासप्रयोगेण प्रत्यक्षोऽयं भवेत्प्रिये ॥३८॥

तस्य मूत्रपुरीषेण शुल्वं भवति काञ्चनम् ।

मासमात्रप्रयोगेण पन्नगः काञ्चनं भवेत् ॥३९॥

अजनायिकया रसबन्धनम् (१)

अस्य वल्कलचूर्णस्य पूर्वोक्तलक्षणावधिः ।

पुनरन्यं प्रवक्ष्यामि रसबन्धं सुदुर्लभम् ॥४०॥

त्रैलोक्यजननी या सा औषधिरजनायिका।

तस्याः सम्पर्कमात्रेण बद्धस्तिष्ठति सूतकः ॥४१॥

सप्ताहं मर्दितस्तस्या महौषधिरसेन सः ।

स्वेदतापननिघृष्टो महौषधिरसेन तु ॥४२॥

द्विसप्ताहं रसस्तस्या मर्दनाद्वीरवन्दिते ।

लक्षवेधी रसः साक्षात्सर्वलोहं च काञ्चनम् ॥४३॥

त्रिसप्ताहेन देवेशि दशलक्षाणि विध्यति ।

ददाति खेचरीसिद्धिमनिवारितगोचराम् ॥४४॥

चतुर्थे चैव सप्ताहे कोटिवेधी महारसः ॥४५॥

महौषध्या रसेननैव मृतानां जीवनं भवेत् ।

अनेन घातयेत्सूतं पञ्चावस्थं कुरु प्रिये ।।४६।।

मृतस्य हस्तपादेषु मर्दनं कारयेत्ततः ।

मृतस्यापि विशेज्जीवी नात्र कार्या विचारणा ॥४७।।

नरसारेण रसबन्धनम् (२)

पुनरन्यत्प्रवक्ष्यामि रसबन्धनमुत्तमम् ।

नरसाररसेनैव क्षणाद्बध्यते सूतकम् ॥४८॥

नरसाररसं दत्त्वा द्विपदीरजसा सह ।

दिनान्ते बन्धमायाति सर्वलोहानि विध्यति ॥४९॥

नरसाररसेनैव जीर्णे षड्गुणपन्नगे।

द्विपदीरजसा सार्द्धं भावयेत्तद्रसे शिलाम् ॥५०॥

निर्गन्धा जायते सा तु घातयेत्तेन पन्नगम् ।

तारे ताम्रे तु तल्लेपात् कोटिवेधीसमेन तु ॥५१॥

नरसाररसे स्तन्ये भावयेत्सप्तधा पृथक् ।

रसेन्द्रं जायते ग्रासं यन्त्रे विद्याधराभिधे ॥५२॥

जीर्यते गगनं देवि निर्मुखं चरति क्षणात् ।

नरसाररसेनैव सिंहतुण्डरसेन च ॥५३॥

जायते काञ्चनं दिव्यं निषेकाद्भास्करस्य च ।

नरसाररसे दत्वा मञ्जिष्ठारक्तचन्दनम् ॥५४॥

स्वरसे मर्दयेत्पश्चात्पन्नगं देवि सेचयेत् ।

सप्तवारेन तद्दिव्यं काञ्चनं कारुनिश्चितम् ॥५५॥

नरसाररसैर्भाव्यं रसकं सप्तवारतः ।

तद्रसं रसकं चैव तीक्ष्णलोहं च पन्नगम् ॥५६॥

नरसाररसेनैव तेनैवैकत्र मर्दयेत् ।

तत्क्षणाज्जायते बद्धो रसस्य रसकस्य च ॥५७॥

तीक्ष्णं नागं तया शुल्वं रसकेन तु रञ्जयेत् ।

समस्तं जायते हेमकूर्माण्डकसमप्रभम् ॥५८॥

गुल्मलतया रसबन्धनम् (२)

पुनरन्यं प्रवक्ष्यामि रसबन्धं सुदुर्लभम् ।

सबीजा चौषधी ग्राह्या काचिद्गुल्मलता प्रिये ॥५९॥

कङ्कालखेचरी नाम औषधी परमेश्वरि ।

द्वितीये वासरे प्राप्ते वज्ररत्नं तु घातयेत् ॥६०॥

अनले ध्मापयेद् यत्तु सुतप्तज्वलनप्रभम् ।

कङ्कालखेचरीतैले वज्ररत्नं निषेचयेत् ॥६१॥

दशवारं निषिक्तं तु भस्माकारं तु जायते ।

तद्धेमपक्वबीजं तु तेन भस्मसमं कुरु ॥६२॥

त्रिभागं टङ्कणं दत्वा अन्धमूषागतं धमेत् ।

तत्क्षणान्मिलति बद्धं वज्ररत्नं तु काञ्चनम् ॥६३॥

वज्रहेमवरारोहे समं जारयते यदि ।

कोटिवेधी रसो देवि लोहान्यष्टानि विध्यति ॥६४॥

गुल्मलतया रसबन्धनम् (३)

पुनरन्यं प्रवक्ष्यामि रसबन्धं सुदुर्लभम् ।

सबीजा चौषधी ग्राह्या काचिद्गुल्मलता प्रियं ॥६५॥

मन्त्रसिंहासना नाम द्वितीया देवि खेचरी।

पातालयन्त्रे तत्तैलं गृह्णीयात्ताम्रभाजने ॥६६॥

तस्य तैलस्य मध्ये तु प्रक्षिपेत् खेचरीरसम् ।

मेदिनीयन्त्रमध्ये तु स्थापयेच्च वरानने ॥६७॥

पूर्वौषध्या तु तद्देवि गगनं मेदिनीतले ।

रसग्रासं ततो दत्त्वा मर्दितं गोलकं कुरु ॥६८॥

बद्धपोटलिकं तेन गगनं तत्र जारयेत् ।

समे तु गगने जीर्णे बद्धं तिष्ठति सूतकम् ॥६९॥

भस्त्राफुत्कारयुक्ते च धाम्यमाने रसस्य तु ।

काकविष्ठासमं रूपं समजीर्णस्य जायते ॥७०॥

द्विगुणे गगने जीर्णे अष्टलोहानि संहरेत् ।

जारयेद् गन्धकं सा तु तालकं जारयेत्तु सा ॥७१॥

काञ्चनं जारयेत्साऽपि रसेन्द्रमपि बन्धयेत् ।

जारयेत्सर्वलोहानि सर्वसत्त्वानि पातयेत् ॥७२॥

प्रवालं जारयेत्सा तु गगनं द्रावयेत्तु सा ।

वज्रं च घातयेत्सा तु नात्र कार्या विचारणा ॥७३॥

मारणम् (१)

पुनरन्यत्प्रवक्ष्यामि साधकः सिद्धिमेति च ।

हरीन्दरीरसे न्यस्य गोशृङ्गे च वरानने ॥७४॥

धान्यराशौ निधातव्यं मृतं तिष्ठति सूतकम् ।

दिव्यौषधीरसेनैव रसेन्द्रे सुरवन्दिते ॥७५॥

समे तु कनके जीर्णे दशलक्षं तु वेधयेत् ।

चतुर्गुणे दशकोटिं षड्गुणे स्पर्शवेधकम् ॥७६॥

कुलौषधितृणौषधी

सप्तमे धूमवेधि स्यादष्टमे ह्यवलोकितम् ।

भ्रमन्ति पशवो मूढाः कुलौषधीविवर्जिताः॥७७।।

तृणौषधीरसानाच्च नैव सिद्धिः प्रजायते ।

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन ज्ञातव्या च कुलौषधी ॥७८॥

दिव्यौषधी चतुःषष्टिः कुलमध्ये व्यवस्थिता।

नैव जानन्ति मूढास्तां शिवमायाविमोहनाः ॥७९॥

अदिव्यास्तु तृणौषध्यो जायन्ते गिरिगह्वरे।

तृणौशध्या रसैः सूतो नैव बद्धः कदाचन ॥८०॥

अक्षयं च वरारोहे वह्निमध्ये न तिष्ठति।

पत्रे पाके कटे छेदे नव तिष्ठति काञ्चने ॥८१॥

न वेधं पञ्चाशदूर्ध्वं करोति स रसः प्रिये ।

यावन्न बद्धमेकं तु विकृतं तत्तु काञ्चनम्।

धर्मार्थकाममोक्षार्थे नैव दद्यात्तु तत्प्रिये ॥८२॥

श्रीदेव्युवाच ।

निर्जीवत्वं गतः सूतः कयं जीवं ददाति सः।

निर्जीवस्य तु निर्जीवः कथं जीवयते रसः ॥८३॥

श्रीशिव उवाच ।

दिव्यौषध्या च यद्देवि रसेन्द्रो मूर्च्छितो भवेत् ।

कालिकारहितः सूतस्तदा जीवति पार्वति ॥८४॥

परस्य हरते कालं कालिकारहितो रसः ।

अष्टानां चैव लोहानां मलं नश्यति तत्क्षणात् ॥८५।।

महामूर्च्छागतं सूतं को[1] वाऽपि[1] कथयेन्मृतम् ।

दिव्यौषध्या रसेनैव जायते नष्टचेतनः ।।८६।।

वज्रहेमाभ्यां रसबन्धनम् (४)

पुनरन्यत् प्रवक्ष्यामि रसबन्धनमीश्वरि।

क्ष्मापालेन हतं वज्रमनेनैव तु काञ्चनम् ।।८७॥

वज्रभस्म हेमभस्म द्वे एकत्र विबन्धयेत् ।

निशाचररसे जार्य नरजीवेन जारयेत् ।।८८॥

तत्सूतं मारयेद्भस्म चौषधीवेगजारिणः।

भक्षितो रसयोगेन शिवतुल्यपराक्रमः ॥८९॥

भक्षितस्तोलकैकेन स्पर्शवेधी भवेन्नरः।

प्रस्वेदात्तस्य योगेन रसराजश्च बध्यते ॥९०।।

जीवेद्वर्षसहस्राणि साधको नात्र संशयः ।

प्रजापतिसमो भूत्वा क्षणाद्बध्नाति सूतकम् ॥९१।।

हेमवर्तनम्

गजारि[2]स्पर्शनाद्देवि क्ष्मापालं चैव वध्यते ।

कोरवल्ल्या रसेनैव भावितं दरदं प्रिये ॥९२।।

जारयेद्वालुकायन्त्रे स्थिरं भवति तत्क्षणात् ।

मृतगोलकमाषैकं माषैकं हेमगोलकम् ।।९३॥

एकीकृत्य तु संमर्द्य लुङ्गाम्लेन दिनत्रयम् ।

कर्षैकं नागपत्राणि रसकल्केन लेपयेत् ।।९४।।

जायते कनकं दिव्यमन्धमूषापुटे कृते ।

---

[1] कोवाऽपि अपपाठः |

[2] Boswellia serrate Roxb.

स्वाङ्गशीतं च संग्राह्य धर्मकामार्थसिद्धिदम् ॥९५॥

रसबन्धनम् (५)

क्षीरयुक्ता बहुफला ग्रन्थियुक्ता च पार्वति ।

नाम्ना वर्तुलपर्णीति शस्यते रसबन्धनी ॥९६॥

एकवीराकन्दरसे अन्धमूषागतं रसम् ।

धमेन्मूषानलैर्वद्धो भक्षणाय प्रशस्यते ।।९७॥

रक्तकञ्चुकिकन्दात्तु स्त्रीस्तन्येन तु पेषयेत् ।

मूषायां पूर्वयोगेन कुरुते रसबन्धनम् ॥९८॥

वृश्चिकापत्रिकाबीजं नारीस्तन्येन मिश्रितम् ।

ध्मापयेत् पूर्ववत्सूतं भक्षणार्थाय वार्तिकः ॥९९॥

वज्रकन्दं समानीय रसमध्ये विनिक्षिपेत् ।

गजेन्द्राख्यं पुटं कृत्वा सप्तधा बद्धतां नयेत् ॥१००॥

तद्रसं भक्षयेत्प्रातः षण्मासादमरो भवेत् ।

वर्षमात्रप्रयोगेण जीवेदाचन्द्रतारकम् ।।१०१।।

मारणम् (२)

लाङ्गलीकन्दमादाय कर्कोटीकन्दमेव च ।

रसं तन्मध्यगं कृत्वा स्वेदयेन्मूर्च्छयेत्पुनः ॥१०२।।

म्रियते नात्र सन्देहो ध्मातस्तीव्रानलेन तु।

शुकचञ्चुगतं सूतं पुटयेद् ध्मापयेत्ततः ॥१०३।।

शतांशवेधकर्ताऽयं देहसिद्धिं करोति हि।

षण्मासस्य प्रयोगेण वज्रदेहो भवेन्नरः ।।१०४॥

हंसपदीरसं सूतं शुककन्दोदरे क्षिपेत् ।

गजेन्द्राख्यं पुट दद्यान्म्रियते नात्र संशयः ॥१०५॥

हंसाङ्घ्रिशुकचञ्च्वोश्च रसेन मर्दयेद्रसम् ।

क्रौञ्चपादोदरे दत्त्वा ध्मातं दद्यात्पुटत्रयम् ॥१०६॥

म्रियते नात्र सन्देहो लक्षवेधी भवेत्सः ।

तृणज्योतिः

तृणज्योतिरिति ख्याता शृणु दिव्यौषधी प्रिये ॥१०७॥

तन्मूलरसगन्धाभ्रर्मातुलुङ्गाम्लपेषितैः ।

शुल्वपत्रं विलिप्तं तु भवेद्धेमपुटत्रयम् ॥१०८॥

तन्मूलरसं संलिप्य रसराजः सुरेश्वरि ।

मातुलुङ्गरसघृष्टमभ्रकं चरति क्षणात् ॥१०९॥

अन्यौषधीं प्रवक्ष्यामि रसबन्धकरीं प्रिये।

एकमेव भवेन्नालं तस्य रोमं च वेष्टितम् ॥११०॥

तस्याग्रे च भवेत्पुष्पं शुकतुण्डस्य सन्निभम् ।

तत्पत्राणि तु देवेशि शुकपक्षनिभानि च ॥१११॥

कन्दं कूर्मप्रतीकाशं क्षीरं सिन्दूरसन्निभम् ।

जलं स्रवेन्मधूच्छिष्टं तत्समादाय पार्वति ॥११२॥

तद्रसैर्मर्दयेत्सूतं यावत्सप्तदिनानि च।

तेनैव वेधयेत्सम्यक् सर्वलोहानि काञ्चनम् ॥११३॥

रसं च तालकं तुल्यं मर्दयेदुच्चटारसैः।

आतपे म्रियते तप्तो रसो दिव्यौषधीबलात् ।।११४॥

वेधयेत्सप्तलोहानि लक्षांशेन वरानने ।

चन्द्रार्कपत्रं देवेशि जायते हेमशोभनम् ।।११५॥

नलिनीरससूतेन्द्रं रक्तचित्रकसंयुतम् ।

पत्रलेपप्रमाणं तु चन्द्रार्कः काञ्चनं भवेत् ॥११६॥

ज्योतिष्मती

ज्योतिष्मती नाम लता या च काञ्चनसन्निभा।

वल्लीवितानबहुला हेमवर्णफला शुभा ॥११७॥

आषाढे पूर्वपक्षे तु गृहीत्वा बीजमुत्तमं ।

तिलवत्क्वाथयित्वा तु हस्तपादैरथापि वा ॥११८।।

तस्य तैलं समादाय कुम्भे ताम्रमये क्षिपेत् ।

तापयेद्भूगतं कुम्भं कृत्वा ऊर्ध्वं तुषाग्निना ॥११९॥

षण्मासे च व्यतिक्रान्ते तत्सर्वं काञ्चनं भवेत् ।

शुल्वं हेममयं स्यात्तु तैलं माक्षिकमिश्रितम् ॥१२०॥

दग्धारोहां प्रवक्ष्यामि रसबन्धकरीं भवेत् ।

स्पर्शवेधे तु सा ज्ञेया धर्मकामार्थसाधिनी ।।१२१।।

शस्त्रच्छिन्ना महादेवि दग्धा या पावकेन तु।

प्ररोहति क्षणाद्दिव्या दग्धा छिन्ना महौषधी ।।१२२।।

श्वेतं कृष्णं तथा पीतं तस्याः पुष्पं प्रजायते ।

चणकस्येव पत्राणि सुप्रसूतानि लक्षयेत् ॥१२३।।

सास्ति गङ्गामहातीरे गङ्गा त्वाश्रयते गिरौ ।

दक्षिणे चोज्जयिन्यां च वेलान्तेऽपि च दृश्यते ।।१२४॥

तस्याः कन्दरसं दिव्यं कृष्णनालसमन्वितम् ।

तद्रसेन समं कृत्वा गुटिकां कारयेद्बुधः॥१२५॥

स्नुहीप्रयोगः

स्नुहीक्षीरेण शुल्वस्य पत्रलेपं तु कारयेत् ।

तं सन्तप्तं निषिञ्चेद्वा वज्र्यां कनकसंप्रभम् ॥१२६॥

रसं रक्तस्नुहीक्षीरं कुनटीं गन्धकाभ्रकम् ।

दरदं चैव लोहानि सहस्रांशेन वेधयेत् ॥१२७॥

स्नुहीक्षीरं समादाय निष्कार्धं हेमं[1] ध्मापयेत् ।

गुटिकाकरणेनैव नागं विध्यति तत्क्षणात् ॥१२८॥

चित्रकः

चित्रकस्त्रिविधो ज्ञेयो रक्तः कृष्णो रसायने ।

शुक्लो व्याधिप्रशमने श्रेष्ठो मध्यः कनीयसः ॥१२९॥

तस्य पञ्चाङ्गचूर्णेन पारदं सह मर्दयेत् ।

धमेच्च मूकमूषायां खोटो भवति तत्क्षणात् ॥१३०॥

रक्तचित्रकभल्लाततैललिप्तपुटेन तु।

चन्द्रार्कपत्रं देवेशि जायते हेमशोभनम् ॥१३१॥

रक्तचित्रकचूर्णेन वङ्गं तापैस्त्रिभिस्त्रिभिः।

सर्वदोषविनिर्मुक्तं स्तम्भमायाति तत्क्षणात् ॥१३२॥

नागिनीकन्दसूतेन्द्रं रक्तचित्रकसंयुतम्।

पत्रलेपप्रमाणं तु चन्द्रार्कः काञ्चनं भवेत् ॥१३३॥

तथैव म्रियते कान्तिर्हेमाभ्रेण च संयुतम्।

रक्तचित्रकसंयुक्तं देहसिद्धिकरं परम् ।।१३४।।

कटुतुम्बीप्रयोगः

कटुतुम्बीति विख्याततां[2] देवि दिव्यौषधीं[3] शृणु।

तस्या बीजानि संगृह्य सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् ॥१३५॥

एरण्डतैलवत्तैलं गृहीत्वा रसमर्दितम् ।

तेनैव तारपत्राणि त्रिपुटेनैव काञ्चनम् ॥१३६॥

---

[1] हेम इत्यपि ।

[2] विख्याता अशुद्धपाठः ।

[3] दिव्यौषधी अशुद्धपाठः ।

क्षीरकन्दप्रयोगः

क्षीरकन्दविधिं वक्ष्ये सर्वसिद्धिकरं परम् ।

चतुर्वर्णानां मध्ये तु रक्तकन्दं प्रशस्यते ॥१३७॥

भग्नमेतत्स्रवेत्क्षीरं रक्तवर्णं सुशोभनम् ।

पत्रैः स्नुहीसमस्निग्धैः सप्तभिर्हेमसुप्रभैः ॥१३८॥

बन्धनं रसराजस्य सर्वलोकवशङ्करम् ।

तोयमध्ये विनिक्षिप्य गुटिका सा च तद्भवेत् ॥१३९॥

शाकप्रयोगः

शाक[1]वृक्षस्य देवेशि निष्पीड्य रसमुत्तमम्।

रक्तचन्दनसंयुक्तं सर्वलोहानि जारयेत् ।।१४०॥

गन्धपाषाणगन्धेन आतपे विनियोजयेत् ।

मिलन्ति सर्वलोहानि द्रवते सलिल यथा॥१४१।।

गन्धकं रसकं ताप्यं पारदं रक्तचन्दनम् ।

रुदन्त्या रससंयुक्तं तारमायाति काञ्चनम् ॥१४२॥

शाकवृक्षस्य निर्यासं यत्नेन परिगालयेत् ।

शिग्रुमूलस्य चूर्णं तु तद्रसेन विमर्दयेत् ॥१४३॥

संलिप्य ताम्रपत्राणि पुटे क्षिप्त्वा विपाचयेत् ।

उद्धृत्य काञ्चनं दिव्यं सर्वलक्षणसंयुतम् ॥१४४॥

फलानि शाकवृक्षस्य पक्वानि चैव संग्रहेत्[2] ।

तद्रसेन सूतं मर्द्यं सप्तरात्रं तु भावयेत् ॥१४५॥

तद्रसेन समायुक्तं मञ्जिष्ठारक्तचन्दनम् ।

---

[1] Tectona grandis Linn. f.

[2] अपाणिनीयम्, संगृह्णीयात् इत्यपेक्ष्यते ।

लेपयेत्तारपत्राणि ध्मातं भवति काञ्चनम् ।।१४६॥

देवदालीप्रयोगः

देवदाल्या महौषध्या विधिं वक्ष्यामि तत्परम् ।

सा श्वेता व्याधिशमने कृष्णा पीता रसायने ।।१४७॥

देवदालीफलरसं विष्णुक्रान्तां च सूतकम् ।

मूर्च्छयेद्वेधयेत् क्षिप्रं शुल्वं हेमं[1] करोति च ।।१४८।।

देवदालीफलचूर्णमीश्वरीरस एव च।

देवदालीरसैर्भाव्यं वङ्गं स्तम्भयते क्षणात् ।।१४९॥

देवदालीरसं नीत्वा विष्णुक्रान्तासमन्वितम् ।

वध्यते पारदं चैव तारं हेमं[2] करोति च ।।१५०।।

देवदालीरसं नीत्वा गन्धपाषाणमेव च।

द्रावयेत्सर्वलोहानि पारदं चैव बन्धयेत् ॥१५१॥

---

[1] अपाणिनीयम्, हेम इत्यपेक्ष्यते ।

॥ अथ वनस्पतिकल्पः ॥

अथापराजिताकल्पः

अपराजिता च लोकेऽस्मिन् ख्याता च गिरिकर्णिका।

नामभिस्तु समाख्याता नारदेन महात्मना ॥१५२॥

पुष्ये समुद्धृता यत्नाद् विजयां च शुभावहाम् ।

हस्तेनोद्धृत्य संगृह्य रक्षेच्च सुसमाहितः ॥१५३॥

शुष्ककोणे शुचिस्थाने नित्यमेव निधापयेत् ॥१५४॥

अथ ब्रह्मदण्डीकल्पः

ब्रह्मदण्डीति विख्याता अधःपुष्पीति नामतः ।

तस्या भेदद्वयं प्रोक्तं श्वेता कृष्णा तथैव च ॥१५५॥

ब्रह्मदण्डीयमूलं तु कृष्णसूत्रेण वेष्टितम् ॥१५६॥

कर्णे बन्धं मनुष्यस्य तृतीयज्वरनाशनम् ॥१५७॥

अथाश्वगन्धाकल्पः

त्रैलोक्यरक्षणो दोषः सर्वसिद्धिकरो मतः ॥१५८॥

पलानि सप्ताश्वगन्धायास्ताली षष्ठपलानि च ॥१५९॥

गुडस्याष्टपलं दत्वा मोदकं कारयेद्बुधः।

भुञ्जीत षष्टिकोपेतं क्षीरं मुद्गरसं तथा ॥१६०॥

मुखं त्रिसप्ताहेनैव शतपत्रनिभप्रभम् ।

चूर्णं चैवाश्वगन्धाया धात्रीरससमन्वितम् ॥१६१॥

यष्टीमधुसमायुक्तं मधुना लेहयेत्सदा ।

मासषट्कप्रयोगेण वलीपलितजितः ॥१६२॥

योजनानां शतं गच्छेत् श्रमस्तस्य न जायते।

अश्वगन्धापलं चूर्णं बलाचूर्णं च तत्समम् ॥१६३॥

शतावर्या समं चूर्णं तद्रसेन तु भावितम् ।

मासमात्रप्रयोगेण मधुना सह लेहपेत् ।।१६४॥

नवनागबलं धत्ते वलीपलितवर्जितः।

अश्वगन्धास्तिला माषा मधुना सह संयुताः ।।१६५॥

सार्धमासप्रयोगेण कुञ्जरैः सह युध्यते ।

नवनागबली वीरो वेगेन गरुडोपमः ।।१६६।।

अथ मुषलीकल्पः

मुषलीतलवीर्येयं महाव्याधिविनाशिनी।

गुणं तस्याः प्रवक्ष्यामि ये न जानन्ति साधकाः ॥१६७॥

सुवर्णपुष्पी गौरी च मुसली पुङ्गपत्रिका।

नाशयनी क्षीरवहा नामभिः सा शुभा मता ॥१६८।।

पुष्यनक्षत्रयोगे च सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् ।

मधुना सहयोगेन जीर्यति क्षीरभुक् ततः ॥१६९॥

एकमासप्रयोगेण वलीपलितवर्जितः।

अथवाज्यप्रयोगेण भृशं कुष्ठं विनाशयेत् ॥१७०॥

उष्णोदकेन संयुक्ता अजीर्णादिविनाशिनी।

विसूचिकां विरेकं च नश्यति नात्र संशयः ॥१७१॥

गोधूमचूर्णभागौ द्वौ मुसलीभागमेव च।

घृतपूर्णं तत्कृत्वा मधुभाण्डे निवेशयेत् ।

भक्षयेत्त्रिसप्तरात्रं तु सर्वव्याधिविनाशिनीम् ॥१७२॥

अथ शृङ्खलाकल्पः

अश्वत्थं बदरी भिण्डी माक्षिकं कुक्कुटास्थि च ।

मेषशृङ्गस्य योगेन वज्रं तु म्रियते क्षणात् ।।१७३।।

निशाचररसैर्भाव्यं सप्तवारं तु तालकम्।

वङ्गं च घातयेत्तेन तारपत्रं च लेपयेत् ॥१७४।।

तद्वङ्गेन हतं तारं ताम्रे वै लेपयेत्तदा ।

तत्तारे सूतकं सर्वं बन्धनं जायते तदा ॥१७५।।

चतुःषष्टिप्रयोगेण शुल्ववेधं प्रदापयेत् ।

तच्छुल्वं जायते तारं धर्मकामार्थसाधनम् ॥१७६॥

अथ ज्योतिष्मतीकल्पः

भैरव उवाच।

असङ्गमद्भुतं प्राज्ञलोकविस्मयकारकम् ।

ज्योतिष्मतीति विख्यातं रसायनं महत्तमम् ॥१७७॥

बीजानि तस्याः संग्रह्य आतपे शोषयेत्ततः।

चूर्णं कृत्वा ततो बीजं तैलं तस्मात्समुद्धरेत् ॥१७८॥

तैलार्धं निक्षिपेत्सर्पिर्मधु पादेन संयुतम् ।

तक्रसारसमं क्षीरं गोमूत्रं द्विगुणं भवेत् ॥१७९॥

पचेन्मध्याग्निना चैव तैलशेषं तु कारयेत् ।

जातिफलानि कर्पूरमेला[1] कस्कोलकं तथा ॥१८०॥

एतानि समभागानि कर्षमेकं तु चूर्णयेत् ।

प्रक्षिप्य तैलमध्ये तु एक कृत्वा सुरेश्वरि ॥१८१॥

स्निग्धभाण्डे तु संस्थाप्य धान्यराशौ निधापयेत् ।

पलानि त्रिंशत्षष्टिर्वा त्वशीतिर्नवतिस्तथा ॥१८२॥

शतं वाप्यधिकं वापि त्रिंशन्न्यूनं न कारयेत् ।

एकविंशदिनादूर्ध्वं देशे निर्वातसंस्थिते ॥१८३॥

---

[1] कर्पूरं एला

सुमुहूर्ते शुद्धकाये पिबेत्सूर्योदये पलम् ।

गतेऽह्नि स्वपितश्चैव क्षीरषष्टिकभोजनम् ॥१८४॥

तृषितं पाययेत्क्षीरं पायसं चैव दापयेत् ।

भवेत्सूर्यसमं तेजः स भवेत् सदाशिवः ।।१८५।।

दूरस्थः शृणुते वाक्यं विषं जीर्यति नित्यशः।

हन्ति चाष्टादशान् कुष्ठान् सर्वान् रोगांश्च नाशयेत् ।।१८६॥

चतुर्थस्यैव मासस्य शृणु तस्यापि यत्फलम् ॥१८७॥

तस्य मूत्रपुरीषेण शुल्वपत्राणि लेपयेत् ॥१८८॥

निर्दहेत्पुटपाकेन निर्बीजं काञ्चनं भवेत् ।

पञ्चमासप्रयोगेण शृणु देवि यथार्थतः ॥१८९॥

ब्रह्मत्वं जायते तस्य शरीरं नूतनं भवेत् ।

षण्मासेन तु निर्देहसिद्धिर्भवति नान्यथा ॥१९०॥

जीवेद्ब्रह्मायुषं यावन्नात्र कार्या विचारणा।

सेवते सप्तमासं तु यो देवि सुविनीतवान् ।।१९१॥

जितेन्द्रियो जितक्रोधो जीवेद् यावन्महेश्वरः ॥१९२॥

त्वत्प्रीत्यर्थं महादेवि मोक्षमार्गः प्रदर्शितः ।

रसायनं परं गुह्यं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥१९३॥

नैव कर्म प्रकुर्वीत आलस्योपहतो नरः ॥१९४॥

सर्वासामौषधीनां तु रसायनमनुत्तमम् ॥१९५॥

अस्याः कल्पप्रभावेन तन्नास्ति यत्र जायते ।

अस्मात्परतरं किञ्चिन्नास्ति चान्यद्रसायनम् ॥१९६॥

दुर्लभं त्रिषु लोकेषु सत्यं सत्यं न संशयः।

सारात्सारतरं प्रोक्तं तव स्नेहात्प्रकाशितम् ॥१९७॥

अथ श्वेतार्ककल्पः

शृणु पार्वति यत्नेन सुगुप्तं परमौषधम् ।

सर्वासामौषधीनां च श्वेतार्कं चौत्तमौषधम् ॥१९८॥

विधानं तस्य वक्ष्यामि कथ्यमानं शृणुष्व तत्।

वदाम्यहं तव स्नेहाल्लोकानां हितकाम्यया ॥१९९॥

तस्य क्षीररसं ग्राह्यं सूतं तेनैव मर्दयेत् ।

एकविंशदिनान्येव सेवयेत्तद्विचक्षणः॥२००॥

वलीपलितनिर्मुक्तो जराव्याधिविवर्जितः।

नवनागबलं धत्तं सर्वज्ञो विजयी भवेत् ॥२०१॥

पञ्चाङ्गं तस्य संगृह्य छायाशुष्कं तु कारयेत् ।

सूक्ष्मचूर्णं ततः कृत्वा घृतेन मधुना सह ॥२०२॥

सर्वरोगविनिर्मुक्तो जायते नात्र संशयः ।

नवनागबलं धत्ते कान्त्या सूर्य इवापरः ।।२०३।।

षण्मासस्य प्रयोगेण अजरामरतां व्रजेत् ।

क्षीराशीश्च भवेन्नित्यं वातातपवर्जितः ॥२०४॥

कट्वम्लतीक्ष्णविरसः कषायक्षारवर्जितः।

अनेनैव विधानेन साधकः सिद्धिभाग् भवेत् ॥२०५॥

अथ गन्धककल्पः

श्रीदेव्युवाच।

गन्धकस्य विधिं देव कथयस्व प्रसादतः।

कस्मिन् काले समुत्पन्नः केन चोत्पादितः पुरा ॥२०६।।

अल्पायुषश्च ये मह्यां जरादारिद्र्यपीडिताः।

तेषां हिताय भगवन् सौख्यत्वं कथय प्रभो ॥२०७॥

ईश्वर उवाच।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि यथोत्पन्नस्तु गन्धकः ।

त्वामहं संप्रवक्ष्यामि शृणुष्वायतलोचने ॥२०८॥

क्षीरोदसागरे देवे मथ्यमाने वरानने।

उत्पन्नो गन्धकस्तत्र दिव्यरूपसमन्वितः ।।२०९॥

तद्गन्धकस्य गन्धेन मोहिताः सर्वदेवताः।

गन्धक इति तमाख्यातः नाम्ना लोके बभूव ह ॥२१०॥

तस्य वर्णं तु जानीहि त्रिविधं चारुलोचने ।

पीतं चैव तथा श्वेतं कपोतं वै तृतीयकम् ॥२११॥

क्रमादुत्तममध्यस्थं हीनं चैवाथ विक्रमम् ।

उत्तमं गन्धकं शुद्धं शुद्धदेहः समाचरेत् ॥२१२॥

वमनं रेचनं कृत्वा रसायनमयाचरेत् ॥२१३॥

भोजनानि च वक्ष्यामि भक्ष्यमाणानि यानि च ॥२१४॥

षष्टिकमथवा शालि[1]गोधमाश्च विशेषतः।

छागलानि च मांसानि सदा पथ्यानि देहिनाम् ॥२१५॥

यवान्मुद्गांश्च भुञ्जीत क्षीरं मधु तथा घृतम् ।

एतद्देवि सदा पथ्यमपथ्यं वर्जयेत् सदा ॥२१६॥

अतितीक्ष्णकषायानि तैलं काञ्जीकमेव च।

लवणाम्लं च शाकं च विदग्धान्नं च वर्जयेत् ॥२१७।।

अमृतं च विषं चैव कामं सूतकगन्धकम् ॥२१८॥

अमृतं विधिसंयुक्तं विधिहीनं च तद्विषम् ।

यस्तद्भक्षयते देवि साधकः सिद्धिकाङ्कः ।।२१९॥

---

[1] अशुद्धपाठः - शालि गोधूमाश्च

विधिना भक्षयेन्नित्यं सर्वकामफलप्रदम् ।

आदौ च गन्धकं ग्राह्यं पलाद्वैदूर्यसन्निभम् ॥२२०॥

वातारितैलं संमिश्र्यं त्रिफलाया रसेन च।

गन्धकं भक्षयेत्प्राज्ञो जरादारिद्र्यनाशनम् ॥२२१॥

मासैकेन प्रयोगेण कुष्ठानष्टादश प्रिये।

वातगुल्मक्षयं चैव प्लीहं चैव भगन्दरम् ॥२२२॥

अशीतिर्वातरोगांश्च रक्तरोगांश्च नाशयेत् ।

षण्मासस्य प्रयोगेण वलींश्च पलितानि च ॥२२३॥

पुनर्यौवनमायाति भ्रमरा इव मूर्द्धजाः।

दिव्यदृष्टिर्महातेजो द्वितीय इव शङ्करः ॥२२४॥

गन्धकस्य पलैकं तु पिबेत्क्षीरेण संयुतम् ।

षण्मासस्य प्रयोगेण दद्रकण्डू विनाशयेत् ॥२२५॥

संवत्सरप्रयोगेण जरामरणे नाशयेत् ।

गव्यं घृतं पलैकं तु तदर्द्धं गन्धकस्य च ॥२२६॥

मासत्रयप्रयोगेण दिव्यदेहोऽभिजायते ॥२२७॥

एवं मासानुसारेण कर्तव्यं तु विचक्षणैः ॥२२८॥

संवत्सरप्रयोगेण जीवेद्वर्षशतत्रयम्।

गन्धकस्य पलार्धं च सूतकस्य पलं तथा ॥२२९॥

गन्धकस्य पलैकं तु कन्यायाश्च पलत्रयम् ।

माक्षिकस्य पलं त्रीणि खण्डं पलचतुर्दशम् ॥२३०॥

मासैकस्य प्रयोगेण सर्वरोगविवर्जितः।

षण्मासात्पलितं हन्ति कामरूपो भवेन्नरः ॥२३१॥

गन्धकस्य पलं चैकं रसस्यापि पलं तथा।

कन्यायाश्च पलं त्रीणि लशुनस्य पलत्रयम् ॥२३२।।

अर्द्धपलं तु खण्डस्य षण्मासस्य प्रयोजनात् ।

सर्वव्याधिविनिर्मुक्तो दृढकायो भवेन्नरः ।।२३३॥

गन्धकाभ्ररसं चैव निर्गुण्डीरसभावितम्।

कर्षमभ्रं तु क्षीरेण सप्तवारं विभावयेत् ॥२३४।।

अन्धमपागतं मातं जरादारियनाशनम् ।

गन्धकं तालपिष्टं च रसं बीजेन मर्दयेत् ॥२३५॥

भूमिस्थं मासमेकेन धारयेत्तद्विचक्षणः।

अन्धमूषागतं ध्मातं तारलेपेन काञ्चनम् ।।२३६।।

आरोटं भक्षयेन्नित्यं बलतेजोभिवर्द्धनम् ।

तद्देवि त्रिफलायुक्तं दिव्यदृष्टिकरं परम् ॥२३७।।

काचमाचीयुतं चैव सूतकं मारयिष्यति ।

काचमाचीयुतं गन्धं दद्रूपामानिवारणम् ॥२३८॥

गन्धपाषाणगन्धेन आयसेन वियोजयेत् ।

मिलिते सर्वलोहानि द्रवते सलिलं यथा ॥२३९॥

गन्धकं रसकं ताप्यं पारदं रक्तचन्दनम्।

रुदन्तीरससंयुक्तं तारमायाति काञ्चनम् ॥२४०॥

गन्धकं गैरिकयक्तं समभागेन सूतकम्।

देवदालीसमायुक्तं शुल्वमायाति काञ्चनम् ॥२४१॥

श्वेताभ्रं गन्धकं सूतं हिङ्गुलं तालकं समम् ।

वज्रीक्षीरेण संयुक्तं वङ्गं स्तम्भकरं परम् ।।२४२।।

पीतेन गन्धकं चैव रसं ताम्बूलमर्दितम्।

मारयेत्ताम्रपत्राणि विश्रान्ते लेपयेत्सुधीः ।।२४३॥

आरण्योपलपाकेन शीतलं भावयेत्तयम् ।

निर्बीजं तु समाख्यातं हेमं भवति शोभनम् ।।२४४॥

किमत्र चिन्त्यं यदि पीतगन्धकं

पलाशनिष्ठीवित-कल्कमर्दितम् ।

आरण्यकस्योपलपाचितं शुभं

करोति तारं त्रिपुटेन काञ्चनम् ॥२४५।।

काचटङ्कनचूर्णेन कृत्वापामार्गकदलीरसेन प्रलेपयेत्।

वज्राण्येकविंशतिवाराणि ततश्चूर्णेन दोलास्वेदनेन वज्राणि द्रवन्ति ।।२४६॥

गगनं चापि विंशती द्रवति पूर्वोक्तदोलास्वेदनं यथा

पयसा ही मधुना तैलेन हन्ति शयानं च गन्धकम् ॥२४७॥

चूर्णं क्रमेण कदल्यपामार्गतिलमाक्षिकक्षाराणि चत्वारि

काचचूर्णं कृत्वा मूषायामर्द्धचूर्णं तु कृत्वा तस्योपरि क्षिपेत् ।।२४८॥

तुत्थचूर्णस्य माषैकं तत्समं ताम्रपत्रकम् ।

खर्परं च तथा माषं दत्त्वा तस्योपरि क्षिपेत् ।।२४९॥

काचचूर्णं पुनर्दत्त्वा मुद्रयेन्मूषिकां ततः ।

करीषाग्नौ ततो ध्मात्वा यावत्ताम्रद्रवं भवेत् ॥२५०॥

तत्ताम्रं च भवेत्पीतमष्टवर्णं न संशयः।

पुनर्नवायुतं गन्धं नाशयेत्त्रिविधं विषम्।

गोघृतेन समं पीतं नाशयेद्गरलं ध्रुवम् ॥२५१॥

एरण्डतैलसंयुक्तं ग्रहणीव्याधिनाशनम्।

लोहरजःसमायुक्तं पाण्डुरोग विनाशयेत् ॥२५२॥

दाडिमेन समायुक्तमतीसारप्रणाशनम्।

गुडेन सह पीतं तत्पामां नाशयते क्षणात् ॥२५३।।

बहुनात्र किमुक्तेन घृतेन मधुना सह ।

षण्मासस्य प्रयोगेण जरादारिद्र्यनाशनम् ॥२५४॥

अथ तालककल्पः

तालकं चोत्तमं प्राप्य त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ।

तालं संगृह्य मेधावी प्रक्षाल्य तण्डुलाम्भसा ॥२५५॥

एवं संसाध्य यत्नेन पिष्ट्वा तण्डुलषष्टिभिः ।

प्रक्षिप्योदकभाण्डेषु सुश्लिष्टमवतारयेत् ॥२५६॥

तेनैव रसपिष्टेन पूपां कृत्वा पचेद्बुद्धः।

भक्षयेन्मधुसर्पिर्भ्यां सप्तरात्रं न संशयः ॥२५७॥

उदयादित्यसङ्काशस्वरूपः प्रियवर्द्धनः।

सप्तकत्रितयेनैव वलयः पलितानि च ॥२५८॥

तप्तकाञ्चनसङ्काशः केशाश्च भ्रमरोपमाः।

नवनागबलो भूत्वा जोवेदाचन्द्रतारकम् ॥२५९॥

आषाढे मासि संप्राप्ते पुष्करिण्यां निधापयेत् ।

कात्तिके चैव संप्राप्ते शोभने दिवसे शुभम् ॥२६०॥

शुभनक्षत्रसंयोगे सूतेन सह मर्दयेत् ।

दिने दिने भक्षयेच्च मासमेकं निरन्तरम् ॥२६१॥

प्रथमे सप्तके पूर्णे एतद्भवति लक्षणम् ।

तप्तकाञ्चनवर्णाभो द्विरष्टवर्षमाकृतिः ॥२६२॥

मेधावी सुभगः श्रीमान् जीवेद्वर्षशतत्रयम् ।

द्वितीये सप्तके चैव भ्रमरा इव मूर्द्धजाः ॥२६३॥

मासैकस्य प्रयोगेण खेचरत्वं प्रपद्यते ॥२६४॥

निम्बकाष्ठं समुद्धृत्य सच्छिद्रं कारयेद्बुधः।

तालं संस्थाप्य तन्मध्ये गोष्ठे च निखनेत्त्विदम् ॥२६५॥

मासादूर्ध्वं समुद्धृत्य सूतेन सह मर्दयेत् ।

ताम्बूलैर्मासमेकैकं भक्षयेत्तु दिने दिने ।।२६६।।

एकविंशदिनैश्चैव कुष्ठाष्टदशकं हरेत् ।

वलीपलितनिर्मुक्तो जराव्याधिविवर्जितः ।।२६७।।

उदयादित्यसवाशः खेचरत्वं प्रपद्यते ।

तालकं तण्डुलांश्चैव स्थापयेत्खर्परे पुटे ।।२६८।।

गोमयेन ततो वेष्ट्यं माहिषेणातियत्नतः।

तालकं पाचयेत्तावद् यावन्निगन्धतां व्रजेत् ।।२६९॥

तत्कल्कं गोलकं कृत्वा बीजपूररसेन च ।

पारदेन च संयुक्तमेकं कृत्वा विमर्दयेत् ।।२७०॥

नष्टपिष्टं भवेद्यावत्तावत्खल्वे चतुर्दिने ।

पश्चाच्चतुर्दिनं खेद्यं मातुलुङ्गस्य मध्यतः ।।२७१।।

अष्टांशेन ततो बद्धं विद्धि कान्तेन बुद्धिमान् ।

नरेन्द्र सुरया सिक्तं तारं भवति शोभनम् ॥२७२।।

तालकं च रसं चैव मातुलुङ्गरसान्वितम् ।

ताम्बूले भक्षयेत्प्राज्ञो मासमेकं निरन्तरम् ।।२७३॥

चर्वितं पीतकं युक्तं तारपत्राणि लेपयेत् ।

वारत्रयप्रयोगेण पुटपाकेन काञ्चनम् ॥२७४॥

ताम्बूलस्य रसेनैव मर्दयेत्त दिने दिने।

मातुलुङ्गरसेनैव तालकं रससंयुतम् ॥२७५॥

त्रिसन्ध्यं तत्प्रयोगेन कारयेद्वटिकं शुभम् ।

पुटपाकेन पीतेन तारं हेमं करोति च ।।२७६।।

तालकं सूतकं चैव एकीकृत्य विमर्दयेत्।

धान्यराशी विनिक्षिप्य मासेनाग्निसहो भवेत् ।।२७७॥

तत उद्धृते मुखे क्षिप्रं सद्यः खेचरतां नयेत्।

तालकं पाचयेद्यस्तु गोमयं च समाहिषम् ॥२७८॥

यस्तु दधिपयोयुक्तं मर्दितं लोहभाजने।

तालकं सुरसैकेन दत्वा च खर्परे पुनः ।।२७९॥

छगणेनाग्निं संधुक्ष्य पञ्चमाहिषसंयुतम् ।

तालकं पाचवेत्तावद्यावनिर्गन्धतां व्रजेत् ।।२८०॥

तत उद्धृत्य पुनर्बद्धं बीजपूररसेन तत् ।

पारदेनैव संयुक्तमेकं कृत्वा विमर्दयेत् ॥२८१॥

नष्टपिष्टं भवेत्तावद्यावत्स्वेयं दिनत्रयम्।

तेनैव चाष्टमांशेन शुल्वं वेधेन वेधयेत् ॥२८२॥

नरेन्द्र सुरया सिक्तं शुल्वं तारं करोति च।

तालकेन रसं बद्धं मातुलुङ्गे पचेद्बुधः ॥२८३॥

प्रस्थं तु भक्षयेत्प्राज्ञो मासैकेन सुमन्त्रितम्।

ताम्बूलं पीतया युक्तं सीसके शुल्बकेऽपि च ।

काञ्चनं कुरुते दिव्यं पुटेन तु न संशयः॥२८४॥

अथ रक्तवज्रीकल्पः

दृष्ट्वा चैवं तरुं दिव्यं वज्रीरूपेण संस्थितम् ।

विधिवत्तद्वरं रक्तं गृह्णीयात्कटुतुम्बिके ॥२८५॥

कान्तजीर्णं रसं तत्र हेमपादेन जारितम् ।

मर्दयेत्तं च रक्तेन घटिकात्रितयं बुधैः ॥२८६॥

अन्धमूषागतं कृत्वा धमेत्तु खदिराग्निना।

गुटिका मूषिकामध्ये तद्गृहीत्वा मुखे क्षिपेत् ।।२८७।।

ततक्षणात्खेचरी सिद्धिर्जायते नात्र संशयः।

अथवा सूतके देवि तेन रक्तेन मर्दयेत् ।।२८८॥

यावत्सञ्जायते पिण्डं धापयेत्खदिराग्निना।

स्थीयते निर्विकल्पेन तेन ताम्रं विलेपयेत् ॥२८९।।

तद्भाव्यं पुटपाकेन काञ्चनं दोषवर्जितम् ।

वर्णैकादशभिस्ततु दारिद्र्यं हरते क्षणात् ॥२९०।।

अथैतद्भक्षयेत् सूक्ष्मं चूर्णं कृत्वा विचक्षणः।

ताम्बूलेन प्रदातव्यं चातुर्जातकसंयुतम् ।।२९१॥

सप्तकत्रितयेनैव सर्वव्याधिविवर्जितम् ।

षण्मासस्य प्रयोगेण वज्रकायः प्रजायते ॥२९२॥

अथोच्चटाकल्पः

रसायनं प्रवक्ष्यामि यत्सुरैरपि दुर्लभम् ।

उच्चटा चौषधिनाथ जायते पृथिवीतले ॥२९३।।

चतुर्लक्षणसंयुक्तं तस्या रूपं च कथ्यते।

एकनाला भवेत्सा तु वर्णेन वंशनालिका ॥२९४॥

तस्याः पुष्पं भवेद्रक्तं शुकतुण्डनिभप्रभम् ।

कन्दं कूर्मप्रतीकाशं तस्या लक्षणमीदृशम् ॥२९५॥

तरूपरि समारुह्य दिशो दश निरीक्षते ।

दिव्यरूपाणि पश्येच्च दृष्ट्वा लक्षणमीदृशम् ॥२९६।।

रसं च मधुरं चैव स्रवते सा निरन्तरम् ।

स रसः सर्वलोहानि सकृल्लिप्तेन विध्यति ।।२९७॥

काञ्चनं कुरते दिव्यं क्षिप्रं चैव तु वह्निना ।

अङ्गल्यग्रनखैर्लेपं तत्क्षणात्तु सकृत्पुमान् ॥२९८॥

त्वचः सर्वा विसृज्यास्तु नखरोमाणि[1] सर्वशः।

जाते तु सर्वगात्रे तु वृद्धोऽपि तरुणाकृतिः॥२९९॥

प्रद्युम्नसदृशो लोके नागायुतपराक्रमः।

मेधावी सर्वशास्त्रज्ञो वलीपलितवर्जितः ॥

मार्कण्ड इव दीर्घायुः सत्यं सौभाग्यवान् भवेत् ॥३००॥

अथवा पत्रपुष्पाणि फलं मूलं तथैव च।

सूक्ष्मचूर्णं ततः कृत्वा प्रतिवापं च दापयेत् ॥३०१॥

एकविंशतिवाराणि गोमूत्रे च निषेचयेत् ।

खरदाहं कृते चैव हेमं भवति शोभनम् ॥३०२॥

शुल्वे तारे प्रलिप्ते च वेधते[2] नात्र संशयः।

काञ्चनं जायते दिव्यं त्रिभिर्दोषैर्विवर्जितम् ॥३०३॥

अथ तस्यौषधस्याल्पं कथयामि समाहितः।

कुमेरुपर्वते रम्ये मनोज्ञे तीर्थसङ्गमे ॥३०४॥

हिमालये शुभे रम्ये तथा जालन्धरे गिरौ ।

सिद्धौ विन्ध्ये महाभागे स्थाने च रमणीयके ॥३०५॥

चन्द्रकान्तगिरिर्नाम हेमप्रस्थे च सुव्रते ।

एषु स्थानेषु विख्याता औषधी सुरपूजिता ॥३०६॥

विजया नाम विख्याता त्रिषु लोकेषु पार्वति ।

आयुष्यं साधकेन्द्रस्य ददाति सुरपूजिता ॥३०७॥

कान्तिजीर्णं रसं कृत्वा हेमजीर्णमथापि वा।

---

[1] अपपाठः- नखरोमानि

[2] विध्यति इत्यपेक्षयते |

उच्चटाया रसं दत्वा रसकर्षं तु मर्दयेत् ॥३०८॥

पिबेन्मधुघृतैर्युक्तमसञ्ज्ञो भवति क्षणात् ।

ततो निर्गच्छति सिद्धिः सूर्यतेजसमप्रभम् ॥३०९॥

अथवारोटकं सूतं चतुर्थांशेन सूतकम् ।

उच्चटाया रसं दत्वा मर्दयेद् याममात्रकम् ॥३१०।।

म्रियते रवितापेन रसो दिव्यौषधीबलात् ।

विध्यति सर्वलोहानि लक्षांशेन वरानने ।।३११॥

अथवा तां क्षिपेद्वक्त्रे ह्यदृश्यो जायते नरः ॥३१२॥

अथ कुष्माण्डीकल्पः

अस्ति कङ्कणके देशे आर्या भगवती हि सा।

तस्याः पूर्वोत्तरे चैव धन्वन्तरी गुहा भवेत् ॥३१३॥

तत्र कुष्माण्डको नाम दिव्यौषधी प्रतिष्ठिता।

लोकानां हि विनोदाय शरीरहितकारिणी ॥३१४॥

सद्भावेन सुरौषध्याः पत्रं हस्तेन मर्दयेत् ।

तद्रसात् सिन्दूरवर्णो हस्तो भवति निश्चितम् ॥३१५॥

एवं हि प्रत्ययं दृष्ट्वा लोहं तल्लेपयेद्बुधः ।

वह्निमध्ये धमेततं तु दहेत्तीव्रेण[1] वह्निना ॥३१६॥

जायते काञ्चनं दिव्यं दिव्याभरणभूषितम् ।

तदौषधीरसो ग्राह्यः पारदं तेन मर्दयेत् ॥३१७॥

दिव्यौषधीप्रभावेन[2] कनकं शोभनं भवेत् ।

एवं तत्प्रत्ययं दृष्ट्वा मासेनैकेन भक्षयेत् ॥३१८॥

---

[1] तीव्रेण इत्यपेक्षयते ।

[2] ..प्रभावेण इत्यपेक्षयते ।

कामदेववपुः श्रीमान् जायते नात्र संशयः।

स्त्री वापि पुरुषो वापि षण्मासाद्व्याधिर्जितः ॥३१९॥

अनेन कुरते दिव्यं रूपमेतन्न संशयः ।

औषधीं भक्षयेत्पथ्यमजादुग्धेन भोजनम् ॥३२०॥

तदौषध्या रसस्तम्भस्तेन वङ्गं सूदेत्पुनः।

म्रियते तद्वरं वङ्गं सहस्रांशेन वेधकृत् ॥३२१॥

अथेश्वरीकल्पः

शृणु पार्वति यत्नेन यथावत्कथयामि ते।

ईश्वरीकल्पमाहात्म्यं यथावदवधारय ॥३२२॥

लक्षणं प्रवक्ष्यामि नालपत्रैश्च सुन्दरि।

कृष्णनाला भवेत्सा तु पत्रैस्ताम्बूलसन्निभा ॥३२३॥

स्वर्णवत्पीतपुष्पा च लक्षणैरिति लक्षयेत् ।

दारिद्र्यमीर्ष्यते यस्य तेन सैवेश्वरी मता ॥३२४॥

नागानां दमनी यस्मात्तं नागदमनीति सा ॥३२५॥

करोति निर्विषं क्षिप्रं नास्ये पाणौ नियोजयेत् ।

देहस्था हरते देवि विषं स्थावरजङ्गमम् ॥३२६॥

सर्वाणि विषमात्राणि हरते यस्य देहगा।

घृतेन सह संयुक्ता चेश्वरी हन्ति तत्क्षणात् ॥३२७॥

ज्वाला गर्दभलूताश्च कीटा दुष्टव्रणा अपि ।

कुष्ठं भगन्दरं रोगं गण्डमालां च दारुणम् ॥३२८॥

मूत्रेण सह संयुक्ता कुष्ठानष्टादशान् हरेत् ।

भक्षयेद्वर्षमेकं तु घृतेनालोड्य वा पिबेत् ॥३२९॥

वन्ध्याया जायते पुत्रं दीर्घायुः प्रियदर्शनम् ।

प्रतिवापं कृतं वङ्गे तद्रसे च निषेचयेत् ॥३३०॥

ईश्वरीमूलचूर्णं तु वङ्गं स्तम्भकरं त्रिभिः ।

नागिन्या भ्रमरायासं सूतो गृह्णाति तत्क्षणात् ।।३३१।।

मर्दनात्स्वेदनाच्चैव रसः सर्वांश्च विध्यति ।

षोडशांशेन कल्केन क्रमते सर्वधातुषु ।।३३२।।

सपत्रमूलमुद्धृत्य यवक्षारेण पेषयेत् ।

पारदं मर्दयित्वा तु अर्कतोये विशोषयेत् ॥३३३।।

मुनिवृक्षरसैश्चैव तत्कल्कं तु कारयेत् ।

विशत्यंशेन तत्सूतं सर्वलोहानि विध्यति ।।३३४।।

नागिनीरससिक्तानि शुल्वपत्राणि लेपयेत् ।

द्रावयित्वा निषिक्तेन दशतः शुद्धिमाप्नुयात् ।।३३५।।

कुमारी ब्रह्मसोमा च निर्गुण्डीरसपत्रिका।

सर्वलोहविशुद्धार्थं ततः कर्म समाचरेत् ॥३३६।।

पूर्वकल्केन संविद्धं षोडशांशेन काञ्चनम् ।

नागघोषं तथा चैव जसदं कुनटसंयुतम् ।।३३७।।

द्रावयित्वा निषिञ्चेत दशतः शुद्धिमाप्नुयात् ।

पुनर्नवारसेनैव लोणाररससंयुते ॥३३८।।

निषेकोऽयं त्रिधा पूर्वं पुनः शुल्वं त्रिधा त्रिधा।

नागिन्याश्च रसं क्षीरमजामूत्रे निषेचयेत् ॥३३९॥

एवंविधं सप्तवारं शोधितं च नियोजितम् ।

तारेण सह देवेशि रसं च द्रावयेद्बुधः॥३४०।।

तयोश्चतुर्दशांशेन तारार्धेन[1] प्रयोजयेत् ।

---

[1] अपपाठः तारर्द्धेन

जायते च हेमं दिव्यं तरुणादित्यवर्चसम् ॥३४१॥

नागिनीरसनिर्गुण्डीरसोऽपामार्ग एव च ।

स्नुहीक्षीरं सूतकं च लवणानि च पञ्च च ॥३४२॥

एकत्र मर्दितं गोलं स्वेदयेत्सप्तरात्रयः।

एवं कृते न सन्देहो निर्मुखो गगनं ग्रसेत् ॥३४३॥

ईश्वरीसहितं कर्म रसं चैव रसायनम् ।

सिध्यति नात्र सन्देह इत्याह परमेश्वरः ।।३४४॥

रसनं च रसादीनां रसोपरसमेव च।

विषोपविषलोहानि सम्यक् शुद्धिक्रमाण्यपि ॥३४५॥

दिव्यौषधिरसाभावे विध्यते न च बध्यते ।

न क्रमेच्च क्वचिद्देवि रस ईश्वरभाषितः ॥३४६॥

उपयुञ्जनकाले च क्षीरषष्टिकभोजनम् ।

रसबन्धं प्रवक्ष्यामि येन सिध्यति साधकः ॥३४७॥

पारदस्य पलं ग्राह्यमभ्रकस्य पलं तथा ।

नागिन्या रसमाकृष्य अजामूत्रं तथैव च ॥३४८॥

क्वाथयेद्वह्निना प्राज्ञस्ततः शुल्वे विमर्दयेत्।

मर्दितं गोलकं स्वेद्यमहोरात्रं महेश्वरि ।।३४९॥

गुटिका जायते सा तु सर्वलोहानि विध्यति ।

गुटिकां तां मुखे क्षिप्त्वा ह्यदृश्यो जायते नरः ॥३५०॥

अमुना विधिना चैव रसमभ्रं विमर्दयेत् ॥३५१॥

पुनर्मर्द्य पुनः स्वेद्यं[1] सप्तवारं पुनः पुनः।

एवं तं जारितं कृत्वा सप्तरात्रविधानतः ॥३५२॥

---

[1] अपपाठः- खेद्यं

चतुःषष्टिकवेधी स्याद्द्विसप्ताहेन सुन्दरि ।

शतवेधी त्रिसप्ताहे चतुर्थेऽयुतमेव च ॥३५३॥

पञ्चमे लक्षवेधी स्याद्दशलक्षं तु षष्ठके ।

सप्तमे कोटिवेधी स्यादष्टमे दशकोटयः ॥३५४॥

नवमे सप्तके प्राप्ते गुञ्जायाः कोटिवेधिकम् ।

दशमे सप्तके चैव सर्षपाद्दशकोटयः ॥३५५॥

सप्तकैकादशे प्राप्ते धूमवेधः स उच्यते ।

सप्तके द्वादशे प्राप्ते महारसः स उच्यते ॥३५६॥

महारसे तु संप्राप्ते को न मुच्येत वेधनात् ।

नागिन्या रसमाहात्म्यं प्रोक्तं संक्षेपतो मया ॥३५७॥

अथ तृणज्योतिकल्पः

रात्रौ ज्वलति सा नित्यं हिरण्यसदृशी भवेत् ॥३५८॥

तस्या मूलं तु संगृह्य क्षीरेण सह पेषयेत् ।

तत्क्षणाज्जायते रक्तमेतद्भवति लक्षणम् ॥३५९॥

तत्क्षीरं त्रिदिनं पीत्वा सर्वरोगैः प्रमुच्यते ।

सप्तकत्रितये चैव महाबलपराक्रमः ॥३६०॥

तस्या मूलं तु संगृह्य क्षीरेण सह पेषयेत् ।

भृङ्गकं च ततो दत्त्वा मातुलुङ्गरसान्वितम् ॥३६१॥

मर्दयित्वा च तत्कल्कं शुल्वपत्रे प्रलेपयेत् ।

तत्क्षणाज्जायते हेमं कूर्माण्डकसमप्रभम् ॥३६२॥

शुल्वपत्राणि सूक्ष्माणि रसस्यार्द्धं प्रदापयेत् ॥३६३॥

अग्निसंयोगतो ग्रासं तत्क्षणाद्देवि जीर्यति ।

सप्तगुणे पूतं ज्ञेयं नवमे कोटिवेधिकम् ॥३६४॥

एवं रसायनं प्रोक्तं जारणं चारणं प्रिये।

हेमादीनां तु लोहानामेष एव विधिः स्मृतः ॥३६५॥

अथ वीराकल्पः॥

एकवीरा लता ख्याता पत्रैर्गात्रैश्च तादृशी ।

एकमालीति विख्याता भग्ना क्षीरप्रवाहिका ॥३६६॥

जायते जोङ्गले देशे मलये च विशेषतः ।

विध्याटव्यां स्थिता नित्या पर्वते मलये गिरौ ॥३६७॥

महेन्द्रशिखरे चैव तिष्ठति च महौषधी ॥३६८॥

तदौषध्या रसं नीत्वा पारदेन च मर्दयेत् ॥३६९॥

एकविंशदिनानि च भक्षयेद्विधिपूर्वकम् ।

प्रज्ञा च वर्द्धते तस्य रूपवान् स्थिरयौवनः ॥३७०॥

जीवेत्पञ्चशतान्येव निरुजो निरुपद्रवः ।

नवनागबलं चैव सेवनात्तु प्रजायते ॥३७१॥

रसबन्धं प्रवक्ष्यामि साधकः सिद्धिभाग् भवेत् ।

पारदस्य पलं ग्राह्यमभ्रकस्य पलं तथा ॥३७२॥

औषध्याश्च रसं कृष्ट्वा ह्यजामूत्रेण संयुतम् ।

खल्वे संमर्द्य तत्कल्कं स्वेदयेत्तीव्रवह्निना ॥३७३॥

मर्दयेत्स्निग्धपाषाणे पुनर्भाव्यं च मर्दयेत् ।

अहोरात्रेण खोटश्च भवति नात्र संशयः ॥३७४॥

एवं सप्ताष्टयोगेन महारसः स उच्यते ॥३७५॥

महारसस्य गुञ्जार्द्धं घृतेन मधुना सह ।

तेन भक्षितमात्रेण पर्वतानपि चालयेत् ॥३७६॥

धान्याभ्रकं समादाय तस्या मूलं च पारदम् ।

मर्दयेत्खल्वपाषाणे स्वेदयेन्मूर्च्छयेत्पुनः ॥३७७॥

भूयो भूयः प्रकुर्वीत यावत्खोटो भवेद्रसः ।

बृहस्पतिसमो भूत्वा सिद्धवत्क्रमते महीम् ॥३७८॥

औषष्याः स्वरसेनैव पारदं तेन मर्दयेत् ।

मृद्वग्नौ स्वेदयेत्तं च भूयो भूयश्च मर्दयेत् ॥३७९॥

तन्मूलचूर्णसंयुक्तं विडालपदमात्रकम् ।

भक्षयेत्तं रसं विद्वान् घृतेन मधुना सह ॥३८०॥

बृहस्पतिसमो भूत्वा सर्वज्ञो देवपूजितः।

बालार्क इव तेजस्वी सिद्धिवृद्धीश्चरेन्नरः ॥३८१॥

अथ देवदालीकल्पः

क्षीरभोजी व्रतधरो ब्रह्मचारी भवेन्नरः।

सिद्ध्यर्थं मानवानां च सर्वव्याधिविनाशिनी ॥३८२॥

देवदालीति नाम्ना सा विख्याता च महीतले।

देवर्षिमनुष्याणां च सर्वेषां च जरापहा ।।३८३॥

अतः किं बहुभिर्मन्त्रैर्मूलमात्रं रसायनम् ॥३८४॥

लक्षणं तस्या वक्ष्यामि स्वादुवर्णं तथैव च ।

घोषवती समावर्णा पत्रैश्च तादृशी भवेत् ।।३८५।।

कर्कोटकरसैः पुष्पैस्तिक्तास्वादू भवेच्च सा ।

देशे देशे प्रवृद्धा या सा च पुष्पैश्चतुर्विधा ।।३८६॥

पुष्टा सा च शुभा ग्राह्या मार्गशीर्षे च कार्त्तिके ।

पूर्णिमायां त्रयोदश्यां राहुग्रस्ते दिवाकरे ॥३८७॥

अथवा कृष्णपञ्चम्यामिमां विधिवदुद्धरेत् ।

पुष्यनक्षत्रयुक्तायां तस्याश्चैव विशेषतः ॥३८८॥

सपत्रपुष्पमूलां च गृह्णीयात्तां महौषधीम् ।

छायाशुष्कं च तां कृत्वा चूर्णयेत्तद्विचक्षणः ॥३८९॥

तद्रसेनैव संभाव्य लोहपात्रे च बुद्धिमान् ।

संस्थाप्य सन्निधावग्नेः पक्षं पात्रं निरन्तरम् ।।३९०॥

पाचनान्ते पुटं कृत्वा वमनं तस्य कारयेत् ।

विरेचनं क्रियमाणे तु गोमूत्रे च दापयेत् ।।३९१।।

ततो विरेचनं कृत्वा नक्षत्रे च शुभे दिने ।

मधुसर्पिः समायुक्तः स रसो यत्नतो भवेत् ।।३९२।।

त्रिसप्ताहे च संपूर्णे साधको धारयेद् महीं ।

चतुर्थे सप्तके प्राप्ते वलयः पलितानि च ॥३९३॥

सर्वव्याधिविनिर्मुक्तो जीवेद्वर्षशतत्रयम् ।

मासषट्कप्रयोगेण[1] जीवेद्वर्षसहस्रकम् ॥३९४।।

देवदालीरसो ग्राह्यो लक्ष्मणारससंयुतः ।

वर्षत्रयप्रयोगेण[2] जायते मृत्युनाशनम् ॥३९५॥

देवदालीरसः क्षौद्रं सर्पिरामलकीरसः ।

षण्मासेनैव मेधावी तथा श्रुतिधरो भवेत् ॥३९६॥

देवदाल्यास्तु पञ्चाङ्गं छायाशुष्कं चूर्णयेत् ।

विडालपदमात्रं तु पिबेदुष्णेन वारिणा ।।३९७॥

वातगुल्मादिरोगांश्च सर्वानेव प्रणाशयेत् ॥३९८॥

देवदालीरसो ग्राह्यो गन्धपाषाणमेव च ।

द्रावयेत्सर्वलोहानि पारदं चैव बन्धयेत् ॥३९९॥

---

[1] अपपाठः- ...प्रयोगेन

[2] अपपाठः- ...प्रयोगेन

तारं हेमसमायुक्तं हेमं भवति शोभनम् ॥४००॥

अथ पीतदेवदालीकल्पः

देवदाल्यास्तु पञ्चाङ्गं छायाशुष्कं कारयेत् ।

मन्त्रपूतं ततस्तस्याः सूक्ष्मचूर्णं प्रकल्पयेत् ॥४०१।।

शुद्धकायो लिह्याच्चैव घृतेन मधुना सह ।

क्षीरभोजी भवेन्नित्यं ब्रह्मचारी जितेन्द्रियः ।।४०२।।

षण्मासस्य प्रयोगेण[1] मेधावी प्रियदर्शनः ।

बृहस्पतिसमो भूत्वा जीवेद्वर्षशतत्रयम् ॥४०३।।

देवदालीफलं मूलं गोमूत्रेण प्रपेषयेत् ।

सर्पदष्टं तु तद्दत्तं निर्विषं कुरुते क्षणात् ।।४०४॥

देवदालीफलं मूलमीश्वरीफलमुत्तमम् ।

सप्तभिः प्रतिवापेन वङ्गं स्तम्भकरं भवेत् ॥४०५।।

देवदालीफलं मूलं निर्गुण्डीरसभावितम् ।

गुटिका चणकाकारा छायाशुष्कं तु कारयेत् ॥४०६।।

तया नस्यं प्रदातव्यं ॥४०७॥

सर्वा जराः प्रणश्यन्ति नात्र कार्या विचारणा ॥४०८॥

देवदालीरसो ग्राह्यो गन्धपाषाणमेव च।

द्रावयेत्सर्वलोहानि पारदं चैव बन्धयेत् ॥४०९॥

बीजेन सह संयुक्तं हेमं भवति शोभनम् ॥४१०।।

अथ कटुतुम्बीकल्पः

ईश्वर उवाच।

शृणु पुत्र ! परं गुह्यमौषधीफलमुत्तमम् ।

---

[1] अपपाठः- ...प्रयोगेन

तदहं संप्रवक्ष्यामि साधकः सिद्धिभाग् भवेत् ॥४११॥

दरिद्रा नैव जानन्ति लोकेशेनैव भक्षणम् ॥४१२॥

तस्या बीजं समादाय सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् ।

एकविंशदिनान्येव धात्रीरसेन भावयेत् ॥४१३॥

पयस्विन्या सहितेन विश्वभेषजसंयुतम् ।

तैलपत्रे विनिक्षिप्य तैलं ग्राह्यं विचक्षणः ॥४१४॥

रसं संमूर्च्छयेत्तेन ह्यसकृद् मर्दयेत्तु तम् ।

उद्वर्त्तयेच्च तेनाङ्गं दिनानि चैकविंशतिः ॥४१५॥

ततः संजायते दिव्यं दिव्यतेजःसमप्रभम् ।

विद्रावी सर्वलोहानां स्पर्शवेधी महारसः ॥४१६॥

यस्मै दद्यात्तु तत्तैलमभ्रकेण[1] समन्वितम् ।

सप्तरात्रप्रयोगेण[2] वलीपलितवर्जितः ॥४१७॥

षण्मासस्य प्रयोगेण[2] छिद्रं पश्यति मेदिनीम् ।

नवनागबलं धत्ते जीवेद्वर्षशतत्रयम् ॥४१८॥

इन्द्रवारुणीबीजानि चूर्णयेत्तु विचक्षणः ।

पलाशाङ्कुररसेनैव सप्तरात्रं विमर्दयेत् ॥४१९॥

तेनैव च विधानेन भावयेच्च पुनः पुनः ।

तैलयन्त्रे विनिक्षिप्य तैलं ग्राह्यं प्रयत्नतः ॥४२०॥

तस्य तैलस्य भागैकं द्वौ भागौ पूर्वसूततः ।

अयस्कान्तस्य चत्वारो रसं च निषिञ्चेत्ततः ॥४२१॥

तेनोद्वर्तकृतेनैव क्षीरभोजनमाचरेत् ।

---

[1] अपपाठः- अभ्रकेन

[2] अपपाठः- ...प्रयोगेन

एकविंशतिरात्रैस्तु सिद्धिरपि न दृश्यते ॥४२२॥

अथ क्षीरकञ्चुकीकल्पः

क्षीरकञ्चकी विख्याता औषधी सुरपूजिता ।

गृह्णीयात्पुष्यनक्षत्रे शास्त्रतो विधिना युतम् ॥४२३॥

खादिरकीलेनोद्धृत्य सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् ।

त्रिफलाचूर्णसंयुक्तं घृतेन मधुना लिह्यात् ॥४२४॥

एकविंशतिरात्रैश्च नखरोमशिरोरुहाः ।

क्षीरेण साधिता देवि द्विरष्टवर्षमाकृतिः ॥४२५॥

वर्षैकस्य प्रयोगेण[2] नवनागबली भवेत् ।

अथातः संप्रवक्ष्यामि सद्यः प्रत्ययकारकम् ॥४२६॥

क्षीरकञ्चुकीयोगेन रसं चार्द्धं विमर्दयेत् ।

सप्ताहं सूर्यतापेन भयो भूयो द्रवं क्षिपेत् ॥४२७॥

ततस्तत्कन्दके क्षिप्त्वा रसं तत्क्षीरसंयुतम् ।

तत्क्षीरं प्रतिवापं च दत्त्वा तं यत्नतो धमेत् ॥४२८॥

चतुःषष्ट्यंशतः सोऽयं बीजयुक्तस्तु वेधकः ।

निर्बीजं कनकं तेन कुर्यान्नैवात्र संशयः ॥४२९॥

तच्चूर्णं माक्षिकं चैव गन्धकं विमलं रसम् ।

दरदमभ्रकं चैव ह्येकीकृत्य विमर्दयेत् ॥४३०॥

अन्धमूषागतं ध्मातं सिद्धान् सम्पूज्य यत्नतः ।

शतांशं वेधयेत् शुल्वं हेमं भवति शोभनम् ॥४३१॥

नागोऽपि जायते हेमं नात्र कार्या विचारणा।

शुभ्रमाक्षिकं पीतं चेद्वङ्गं स्तम्भयते ध्रुवम् ॥४३२॥

तद्रसैः कान्तिहेमाभ्रैर्जारितः सारितो रसः ।

स्पर्शमात्रेण लोहानि क्षणमात्रेण वेधयेत् ॥४३३॥

अथ रुद्रवन्तीकल्पः

चतुष्प्रकारा सा ज्ञेया रक्ता पीता सिताऽसिता ।

चणमात्रोपमैः पत्रैः पुष्पैश्चैव तु तादृशी ॥४३४॥

पत्रस्था बिन्दवस्तस्या हेमाकारा भवन्ति च ।

रसबन्धकरी विद्या विख्याता च महौषधी ॥४३५॥

अधिकं विद्यमाने च सर्वे क्लिश्यन्ति जन्तवः ।

तेन साहसमाने तु तिष्ठति सर्वदा शुभा ॥४३६॥

ग्राह्याऽसौ शुभनक्षत्रे शुक्लपक्षे शुभे दिने ।

सपत्रमूलमुद्धृत्य स्वात्मनो हितकाम्यया ॥४३७॥

कटुतुम्ब्यां तु संस्थाप्य मधुनालोड्य भक्षयेत् ।

विडालपदमात्रं तु तैलं तावद्विवर्जयेत् ॥४३८॥

एकमासप्रयोगेण[1] दीर्घायुर्जायते नरः ।

रुदन्तीरसमादाय मधुसर्पिःसमन्वितम् ॥४३९॥

षण्मासस्य प्रयोगेण[1] वज्रकायो भवेन्नरः ।

रुदन्त्याश्चैव पञ्चाङ्गं भावयेन्मधुसर्पिषा ॥४४०॥

सर्वभक्षोऽपि मानवः ।

सोऽपि जीवेच्छतं चैव वर्षाणां नात्र संशयः ॥४४१॥

रुदन्त्याश्चैव पञ्चाङ्गं स्वर्णेन सह मर्दयेत् ।

द्रुतशुल्वे प्रतिवापं निर्बीजं कनकं भवेत् ॥४४२॥

रसं च माक्षिकं चैव विमला च मनःशिला ।

गन्धकं दरदं चैव हेमाभ्रकसमन्वितम् ॥४४३॥

---

[1] अपपाठः- प्रयोगेन

रुदन्तीरसतः सर्वं मर्दयेत्सप्तवासरान् ।

तेनैव तारपत्राणि लिप्त्वा पुटेन पाचयेत् ॥४४४॥

तद्रसे ढालयेच्चैव हेमं भवति शोभनम् ।

रुदन्तीपत्रनिर्यासं हेमार्द्रकविशोभनम् ॥४४५॥

मर्दयेत् शुल्वके श्रीमान् शुल्वपत्राणि लेपयेत् ।

लेपं च पुटपाकं च त्रिभिस्तत्कनकं भवेत् ॥४४६॥

अथ सोमराजीकल्पः

सोमराज्यास्तु बीजानि वितुषाणि तु कारयेत् ।

चूर्णितानि तु तान्येव त्रिदिनोष्णोदके क्षिपेत् ॥४४७॥

पञ्चबदिनानि गोमूत्रे मधुमध्ये तथैव च ।

क्षीरे च द्वादशाहनि घृते पञ्चदशैव च ॥४४८॥

त्रिंशद्धात्रीरसे चैव क्रमशो धारयेन्नरः ।

शुभे चन्द्रबले चैव भक्षयेत्तु दिने दिने ॥४४९॥

क्षीराहारी भवेन्नित्यं यावदौषधभक्षणम् ।

मासत्रयप्रयोगेण वलीपलितवर्जितः ॥४५०॥

वर्षैकेण पुमांश्चैव जराव्याधिविवर्जितः ।

वाकुच्याश्चैव पञ्चाङ्गं पेषयेत्काञ्जिकैः सह ॥४५१॥

कल्कं कृत्वा च तन्मध्ये द्रुतं वङ्गं च निक्षिपेत् ।

तद्वङ्गं तारमायाति सप्तवारं प्रढालनात् ॥४५२॥

पारदं गन्धकं चैव वाकुचीतैलमर्दितम् ।

द्वादशांशेन कल्केन नागमायाति तारताम् ॥४५३॥

अथ दक्षिणदेशताम्रवर्णकल्पः

अस्ति टिल्लापदे ग्रामे च्यवनेश्वरसन्निधौ ।

देवस्य सङ्गमे भागे रक्तमृत्तिका तिष्ठति ॥४५४॥

तां तारे वेष्टयेत् शुद्धं पुटपाकेन काञ्चनम् ।

च्यवनस्य पश्चिमे भागे पाण्डवो नाम भागिकः ॥४५५॥

तन्मध्ये खन्यमाने तु ऊषाकर्दममाप्यते ।

तत्पाके धाम्यमानेषु तारं भवति शोभनम् ॥४५६॥

अथ मयूरगिरकल्पः

दक्षिणापथे करहाटं पत्तनं चैव तिष्ठति ।

तस्य पश्चिमभागे तु मयूरगिरपर्वतः ॥४५७॥

कूपे रक्तं रसं पश्येत्सहस्रांशेन वेधकम् ।

अलाबुके रसं नीत्वा चागच्छेत्साधकोत्तमः ॥४५८॥

रसं दशपलं अद्याद्देहसिद्धिकरं परम् ॥४५९॥

अथ नागमण्डलकल्पः

पारियात्रं मण्डलं सुप्रसिद्धमस्ति

तत उत्तरे पारनदी वहति ।

तस्याः सन्निधाने पूर्वभागे सुप्रसिद्धं

नागमण्डलं त्रिषु लोकेषु कीर्तितम् ॥४६०॥

मार्गे संस्थापिते पूर्वं सर्वसिद्धिसमाकुलम् ।

पुण्या जला महानद्यस्तोयपूर्णा वहन्ति हि ॥४६१॥

चन्द्रभागा तथा गङ्गा नर्मदा च सरस्वती ।

शृङ्गानि यस्य चत्वारि संस्थितानि यथाक्रमम् ॥४६२॥

पिङ्गलः कर्वुरश्चैव सुनन्दो नागमण्डलः ।

शृङ्गान्येतानि ख्यातानि शृणु शृङ्गाधिपाश्च ये ॥४६३॥

एते नागाः समाख्याता गिरौ तत्र यथाक्रमम् ।

तस्य मध्ये महालिङ्गं वीरभद्रं च विश्रुतम् ॥४६४॥

पातालतलमार्गेण[1] रसकूपाद्विनिर्गतम् ॥४६५॥

रसाश्च रसकूपाश्च आयुर्धनकराश्च ये ॥४६६॥

महौषधीं तथा पश्येदायुर्द्रव्यप्रदायकान् ।

सर्वसिद्धिकराः सर्वे तिष्ठन्ति पर्वतोत्तमे ॥४६७॥

पुनः शुङ्गांश्च वक्ष्यामि दिग्भागे तु स्थितानपि ।

कपिलश्चोत्तरे भागे संस्थितः पर्वताधिपः ॥४६८॥

पूर्वतः कर्वुरः प्रोक्तो दक्षिणे नागमण्डलः ।

सुनन्दः पश्चिमायां तु स च व्याघ्र इव स्थितः ॥४६९॥

व्याघ्रपिङ्गलयोर्मध्ये गङ्गा नाम महानदी ।

पिङ्गलकर्वुरयोर्मध्ये चन्द्रभागा विनिःसृता ॥४७०॥

मध्ये सरस्वती याता कर्वुरे नागमण्डले ।

दक्षिणे च नदीपारा पूर्वोक्ता सा व्यवस्थिता ॥४७१॥

पूर्वोत्तरे समाख्याता कुला नाम महानदी ।

मध्ये च सङ्गमास्तत्र महादेवालयस्तथा ॥४७२॥

सिद्धिद्रव्यानि यावन्ति मध्ये च रसकूपिका ।

स रसः कोटिवेधी च दृश्यते शङ्कराज्ञया ॥४७३॥

तडागे स्वच्छतोये च शोणस्य तीरसंस्थिते ।

तस्मात्तु मृत्तिका ग्राह्या साधकेन समाहितः ॥४७४॥

तडागकर्दमैः पिण्डं बद्ध्वा तं साधकोत्तमः ।

धाम्यमानं भवेत्तारं ताराधिपसमप्रभम् ॥४७५॥

तां मृदं भक्षयेद् यस्तु तत्क्षणान्मूर्छितो भवेत् ।

---

[1] अपपाठः- ...मार्गेन

पतने घूर्णिते चैव निःसञ्ज्ञो[1] जायते नरः ॥४७६॥

तृषितं पाययेत् क्षीरं ।

षण्मासस्य प्रयोगेण जायते अजरामरः ।

द्विरष्टवर्षाकृतिको वलीपलितवर्जितः ॥४७७॥

अथ तस्योत्तरे पूर्वे गत्वा पदशतत्रयम् ।

तडागस्तिष्ठति तत्र पिङ्गलस्योर्ध्वसंस्थितः ॥४७८॥

तस्य मध्यात्तु मृद्ग्राह्या शोभना तारकारका ।

खनेद्वितस्तिमात्रं तु परिगृह्णीत मृत्तिकाम् ॥४७९॥

सा ध्माता खदिराङ्गारैः स्रवते रसमुत्तमम् ।

तेन नागशतांशेन वेधते सावकोत्तमः ॥४८०॥

स्वर्णं भवति रूपाढ्यमग्निवर्णं न संशयः ।

चन्द्रभागानदी तत्र कर्वुरस्योपरि स्थिता ॥४८१॥

अस्ति छायातरुस्तत्र वर्तते रसकूपिकः ।

प्रकारो विद्यते तत्र रसस्य सर्ववेधिकः ॥४८२॥

नर्मदायां सुवर्णाभाः पाषाणाः कुक्कुटाण्डवत् ।

एकं संगृह्यपाषाणं चूर्णयेद्द्रावयेत्पुनः ॥४८३॥

शोणितं स्रवते तेषां रसं तेन विमर्दयेत् ।

लोहवेधी रसस्तेन जायते नात्र संशयः ॥४८४॥

तडागो दृश्यते तत्र नर्मदा च शिरःस्थिता ।

तन्मध्ये तु महाकुण्डं क्षारमृद्भिः समन्वितम् ॥४८५॥

संगृह्य तज्जलं तेन शुल्वपत्राणि लेपयेत् ।

हेमं भवति ध्मातानि तस्यैव तु सुगन्धिनः ॥४८६॥

---

[1] अपपाठः- निःसज्ञो

नृमृण्डपूतपाषाणस्य चूर्णं कृत्वा विचक्षणः ।

नृकपालस्य योगेन भावयेन्मधुना सह ॥४८७॥

अञ्जनाभो रसस्तत्र भवति सर्वसात्त्विकः ॥४८८॥

अलाबुके रसं दत्वा दिनानि चैकविंशतिः ।

शुल्वपत्रस्य लेपेन ध्मात्वा तु काञ्चनं भवेत् ॥४८९॥

अथ चन्द्रोदककल्पः

कथयामि समासेन येन सिध्यति मानवः।

विधानं तस्य मत्प्रोक्तं यन्न तिष्ठति तच्छृणु ॥४९०॥

महेन्द्रे मलये चैव तथा चामरकण्टके ।

पर्वते च हरिश्चन्द्रे श्रीशैले गन्धपर्वते ॥४९१॥

त्रिकूटाचलके चैव हिमवत्पर्वते तथा ।

सुप्रशस्तेषु धान्येषु संस्थितं वीरमान्तरम् ॥४९२॥

क्षीणे चन्द्रे क्षयं गच्छेद्वर्द्धते नैव बध्यते ।

पौर्णमास्यां च गृह्णीयादर्द्धरात्रं तु भोजयेत् ॥४९३॥

तामुत्थाप्य ततस्तोयं ग्राहयेच्च पुनः पुनः ।

निर्भयं स्थिरचित्तेन स्थातव्यं तोयसन्निधौ ॥४९४॥

टङ्कणेनोपलिप्तेन पात्रे चैव विधारयेत् ।

सुगुप्ते विजने चैव निर्वाते भूमिमन्दिरे ॥४९५॥

चन्द्रोदकं तु सम्प्राप्य घृतेन मधुना सह ॥४९६॥

पलमेकं पिबेत्तोयं ध्यानयुक्तः शुभेऽहनि ।

निःसंज्ञो जायते तावद्यावच्च शमयेच्छशी ॥४९७॥

जीर्णे तच्च पिबेत्क्षीरं कथितं गव्यमुत्तमम् ।

दिने दिने प्रकुर्वीत क्षीराहारो जितेन्द्रियः ॥४९८॥

एकविंशतिमात्रेण शक्रतुल्यपराक्रमः ।

मासमात्रप्रयोगेण जायते ह्यजरामरः ॥४९९॥

काञ्चनं गगनं सूतं कान्तवर्णं च तज्जलम् ।

मर्दयित्वा धमेदग्नौ खोटबद्धः प्रजायते ॥५००॥

तस्य च स्पर्शमात्रेण सर्वलोहानि विध्यति ।

अग्निमध्ये धमेत्तं तु जायते काञ्चनं शुभम् ॥५०१॥

काञ्चनं गगनं सूतं तत्तोयेन विमर्दयेत् ।

मूषामध्यगतं ध्मातं बन्धमायाति सूतकम् ॥५०२॥

तेनैव वेधयेच्छुल्वं शतांशेन तु काञ्चनम् ।

ताराभ्रके रसेनैव वङ्गं स्तम्भकरं परम् ॥५०३॥

तत्सूतं बीजसंयुक्तं जारयेत्सारयेद्रसम् ।

द्वित्रिपञ्चगुणेनापि तत्तोयेनैव भावयेत् ॥५०४॥

मारयेद्भूधरे यन्त्रे बीजं तस्य महीतले ।

षट्कला षट्क्रमेणैव[1] कोटिवेधी महारसः ॥५०५॥

एवं द्वादशवारेण जायते स्पर्शवेधिकः ।

धूमवेधी रसश्चैव भवेत् षोडशयोगतः ॥५०६॥

खेचरत्वं ददात्येव मुखमध्ये स्थितो रसः ।

सर्वपुंसाधिकः श्रीमान् द्वितीय इव शङ्करः ॥५०७॥

अवध्यः सर्वभूतानां त्रैलोक्ये विचरेत्तु सः ।

तत्तोयं पयसा सार्द्धं वर्षमेकं पिबेन्नरः ॥५०८॥

सर्वव्याधिविनिर्मुक्तो वलीपलितवर्जितः ॥५०९॥

तस्य मूत्रपुरीषेण शुल्वं भवति काञ्चनम् ॥५१०॥

---

[1] अपपाठः- चड्क्रमेणैव; चक्रमेणैव

अथ विषोदककल्पः

त्रिविधं विषमानीय तैलच्छायेन लक्षणम् ।

रक्तं पीतं तथा कृष्णमुत्तरोत्तरकर्मसु ॥५११॥

पशुपक्षिनरघ्नांश्च दृष्ट्वा प्रत्ययमाचरेत् ।

स्फुटन्ति केशदन्ताश्च छायातोये न दृश्यते ॥५१२॥

नखः सङ्कुचते तत्र तैलं नैव विसर्पति ।

बीजं विसृज्यते तत्र क्षारं कलकलायते ॥५१३॥

क्षीरं तैलं भवेत्तत्र हिङ्गुर्गन्धो न जायते ।

गन्धकस्य हरेद्गन्धं नाभेर्गन्धं च नश्यति ॥५१४॥

तद्विषोदकमित्याहुः सर्वसिद्धिकरं परम् ॥५१५॥

एवं पलाशपत्रेण ग्राह्यं वै कट्वलाबुके ।

त्रिफलां चैव निक्षिप्य ग्रहीतव्यं सुमन्त्रितम् ॥५१६॥

पत्रैः पलाशजैश्चैव वेष्टनीयं प्रयत्नतः ।

स्वगृहे च ततो नीत्वा धान्यमध्ये निधापयेत् ॥५१७॥

त्रिसप्ताहं तदुद्धृत्य सुदिने कार्यमाचरेत् ।

तेनोदकेन मेधावी पेषयेत् षष्टितण्डुलान् ॥५१८॥

पारदेन समायुक्तमजाक्षीरेण संयुतम् ।

गुटिकां शाणमात्रेण कारयेत्तु प्रयत्नतः ॥५१९॥

एकैकं भक्षयेन्नित्यं क्षीरेण सह संयुतम् ।

जीर्णे चैव पिबेत्क्षीरं लवणाम्लविवर्जितम् ॥५२०॥

एकमासप्रयोगेण वलीपलितवर्जितः ।

द्विरष्टवर्षाकृतिको देहसिद्धिमवाप्नुयात् ॥५२१॥

विषोदकं गन्धकं च हरिबीजं च तत्समम् ।

अजामूत्रे तु संश्लिष्टं शुल्वपत्राणि लेपयेत् ॥५२२॥

पुटपाकेन देवेशि दिव्यं भवति काञ्चनम् ॥५२३॥

अनेनैव विधानेन नागपत्राणि लेपयेत् ।

पुटेन जायते स्वर्णमिन्द्रगोपकसन्निभम् ॥५२४॥

अथ शैलोदकविधिः

अथातः संप्रवक्ष्यामि शैलोदकविधिं प्रिये ॥५२५॥

कर्दमाख्ये महाशैले तच्च शृङ्गं चतुर्विधम् ।

हिङ्गुलं हरितलं च गन्धकं च मनःशिला ॥५२६॥

एषां गन्धापहारेण कुरुते तच्छिलोदकम् ।

गन्धकं तालकं चैव तोयपूर्णे घटे क्षिपेत् ॥५२७॥

यदा तद्बुद्बुदाकारं तदा शैलोदकं भवेत् ।

श्रीशैले श्रीवनप्रान्ते पर्यङ्काख्ये शिलातले ॥५२८॥

तत्रस्थं लक्षवेधि स्यादिच्छा भगवतीतटे ।

एकाहं वेधयेत्तत्र गोकर्णे तद्दिनत्रयम् ॥५२९॥

भद्राङ्गे दिनवेधि स्याद्दक्षाद्रौ तु त्रिवासरम् ।

दिनमेकं ब्रह्मगिरौ विन्ध्ये तु क्षणवेधिकम् ॥५३०॥

सह्याचलपुरे देव्या दत्तात्रेयस्य सन्निधौ।

शैलोदकं कोटिवेधि दुर्गदेशेऽपि वासरम् ॥५३१॥

लक्षवेधि नृसिंहस्य नगरे देउलियाख्ये ॥५३२॥

अन्यत्र यत्र कुत्रापि ब्रह्मविष्णुशिवोद्भवम् ।

अमृतं तत्र तत्रैव युवाकरणमुत्तमम् ॥५३३॥

शैलोदकेन देवेशि पारदं च विमर्दयेत् ।

मासेनैकेन तत्सर्वं नष्टपिष्टं भविष्यति ॥५३४॥

मासमात्रं तदश्नीयात्स भवेदजरामरः ।

एकवर्षप्रयोगेण जीवेदाचन्द्रतारकम् ॥५३५॥

अथ कोलकवृक्षकल्पः

सितारुणहरिद्वर्णैः कृष्णैरेव चतुर्विधैः ॥५३६॥

कृष्णकोलक[1]बीजानां बीजानां चूर्णमर्दितम् ।

श्लक्ष्णोत्तमं सकटेन भाजनं तत्प्रलेपयेत् ॥५३७॥

तद्वृक्षभाजनं चैव निक्षिपेद् भानुसन्निधौ ।

तेन विस्तारितं तैलं . . ॥५३८॥

अरुणाङ्कोलबीजस्य तैलं पूर्ववदाहृतम् ।

तेन प्रलिप्तताम्रस्य पत्राणि पुटपाकतः ॥५३९॥

कालिमागन्धनिर्मुक्तं निष्कमात्रं कृते सति ।

त्रिनिष्केन च स्वर्णेन गालितं कनकं भवेत् ॥५४०॥

विमर्द्य पारदं तेन मूषायामधरोत्तरम् ।

पुटीकृतरसस्तेन बद्धमायाति तत्क्षणात् ॥५४१॥

अथ शाल्मलीकल्पः

सितासितहरिद्वर्णैः कृष्णैरेव चतुर्विधैः ॥५४२॥

तन्मूलकल्कतैलं तु सितया सह सेवितम् ॥५४३॥

त्रिसप्ताहाद्भवेत् सिद्धिर्देहेन षोडशाकृतिः ।

दीर्घजीवी नरस्तथा ॥५४४॥

तद्वृक्षमध्ये निक्षिप्य रसाधो लोहनालिकम् ।

विन्यस्य भाण्डं तस्याधो दहेद्गजपुटाग्निना ॥५४५॥

तद्रसेन द्रुतं तारं कृष्णवर्णमिवाप्नुयात् ।

---

[1] अपपाठः- कोलोक...| कङ्कोलं कोलकं प्रोक्तं तथा कोषफलं स्मृतम् ॥भा.प्र.पू.मिश्र.३.९५॥

तत्पुष्पभृङ्गराजाभ्यां तैलमुसलकन्दजम् ॥५४६॥

पाचितं सह नीरेण केशपाशविलेपनम् ।

सप्ताहात्पलितं हन्ति कपालान्तररञ्जितम् ॥५४७॥

तन्मूलवाजिगन्धाभ्यां युक्ताभ्यां भागशक्तुना ॥५४८॥

घृतेन सहितं रसं चैकविंशदिनं भजेत् ।

नवनागबलः श्रीमान् स क्षारं च न भक्षयेत् ॥५४९॥

रक्तवर्णायाः शाल्मल्याः पूर्ववन्मूलमाहरेत् ॥५५०॥

विद्रुतं रञ्जयेत्तारं तापितं स्वर्णवद्भवेत् ।

आदाय कृष्णशाल्मल्यास्तरुणाङ्घ्रिसमं रसम् ॥५५१॥

सितक्षौद्रेण[1] संपीतं कुर्याद्वज्रनिभं वपुः ।

पूर्ववद्रसमाहृत्य सक्षौद्रं तेन भावितम् ॥५५२॥

युवातिवृद्धो भवति वलीपलितवर्जितः ।

पुष्पार्कमधुभिस्तस्याः प्रसूनजनितं रजः ॥५५३॥

अनेन सेवितं कुर्याद्बलं तावत्पराक्रमम् ॥५५४॥

यः कोऽपि सेवेत नित्यं शाल्मलीकल्पमुत्तमम् ।

तस्य नश्यति दारिद्र्यं जरामरणवर्जितम् ॥५५५॥

अथ श्रीवृक्षकल्पः

वृक्षोत्तमाग्निपरिकल्पितनामधेयं

तत्पत्रपुष्पफलदण्डसमूलचूर्णम् ।

तक्रारनालपयसा मधुवारिणाज्यैः

षण्माससेवितनरो ह्यजरामरश्च ॥५५६॥

बिल्वबीजानि संगृह्य सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत् ।

---

[1] अपपाठः- ..क्षौद्रेण

त्रिफलाक्वाथतोयेन सप्तवाराणि भावयेत् ॥५५७॥

ततो यन्त्रे च निष्पीड्य तैलं ग्राह्यं ससंयतम् ।

स्निग्धभाण्डे विनिक्षिप्य भूमौ तच्च निधापयेत् ॥५५८॥

मासमेकं तदुद्धृत्य रक्षयेतु विधानतः ।

रेचनं वमनं कृत्वा शुद्धकाये शुभे दिने ॥५५९॥

कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्यां पुष्ययोगेन बुद्धिमान् ।

निर्वातमन्दिरे तैलं कर्षमात्रं पिबेन्नरः ॥५६०॥

जीर्णान्ते भोजनं कुर्याच्छाल्योदनपयोयुतम् ।

दिवसैकेन मेधावी वार्द्धक्यं च विनाशयेत् ॥५६१॥

सप्तकत्रितयेनैव सर्वतः प्रियदर्शनः ।

वलीपलितनिर्मुक्तो जीवेद्वर्षसहस्रकम् ॥५६२॥

अथ एरण्डकल्पः

पुनरन्यं प्रवक्ष्यामि तच्छ्रुणुष्व विशेषतः ।

एरण्डकल्पमत्यन्तमुत्तमं शङ्करं नृणाम् ॥५६३॥

चतुर्विधं तु एरण्डं रक्तपीतादिभेदतः ।

तत्तैलं सूर्यवारेण गृह्यते विधिवत्ततः ॥५६४॥

रक्तैरण्डकतैलेन शुद्धसूतं च गन्धकम् ।

मेलयित्वा पचेत्तैले लोहपात्रे च बुद्धिमान् ॥५६५॥

याममात्रैः पचेद्धीमान् सर्वं गुञ्जानिभं भवेत् ।

तत्तारनागताम्रेषु सहस्रांशेन वेधकम् ॥५६६॥

तत्तैलं मधुना युक्तं गन्धकेन समन्वितम् ।

भुवि मासं विनिक्षिप्य तत उद्धृत्य संग्रहेत्[1] ॥५६७॥

---

[1] संगृह्णीयात् इत्यपेक्ष्यते ।

प्रातर्निष्कचतुष्कं च लिह्याद्दहनसंयुतम् ।

तरुणादित्यसङ्काशो भवेन्मासप्रयोगतः ॥५६८॥

मासषट्कप्रयोगेण सहस्रायुर्भवेन्नरः ।

द्वादशाब्दप्रयोगेण सिद्धिस्तस्य भवेद् ध्रुवम् ॥५६९॥

तत्तैलं पिष्टमात्रोऽपि बद्धो भवति पारदः ॥५७०॥

हते वङ्गे सहस्रैकं वेधते मासमात्रकम् ।

तद्वङ्गं बद्धमायाति यावदाचन्द्रतारकम् ॥५७१॥

तन्मूलं कान्तपाषाणं शुद्धसूतसमन्वितम् ।

निर्घृष्टं चन्द्रसंयुक्तमन्धमूषागतं धमेत् ॥५७२॥

शाल्मलीखदिराङ्गारैस्त्रिधा बद्धं भवेत्फलम् ।

तद्वङ्गे च द्रुते क्षिप्ते सहस्रांशेन वेधकम् ॥५७३॥

छायाशुष्कं च तन्मूलं गृह्यते निष्कमात्रकम् ।

लिह्याद्गोक्षीरसंयुक्तं क्षीराशीर्विजितेन्द्रियः ॥५७४॥

मासकस्य प्रयोगेण सर्वव्याधिविवर्जितः ॥५७५॥

पीतैरण्डस्य मूलं तु ग्राहयेत्पुष्यभास्करे ॥५७६॥

छायाशुष्कं ततः कृत्वा नवनीतेन पेषयेत् ।

त्रिकटुत्रिफलायुक्तं सिताज्यमधुसंयुतम् ॥५७७॥

मधुभाण्डे विनिक्षिप्य मुद्रयित्वा भुवि क्षिपेत् ।

मासादुद्धृत्य तन्नित्यं लिह्यान्निष्कं प्रयत्नतः ॥५७८॥

निर्वातशायी क्षीराशीस्तिष्ठेदम्लानमानसः ।

एकमासप्रयोगेण वलीपलितवर्जितः ॥५७९॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे रसार्णवकल्पः सम्पूर्णः ॥

परिशिष्टानि

१. कल्पसूची

अनु.क्र.	कल्पाभिधानम्	श्लोकक्र.
1	अपराजिताकल्पः	152
2	अश्वगन्धाकल्पः	158
3	ईश्वरीकल्पः	322
4	उच्चटाकल्पः	293
5	एरण्डकल्पः	563
6	कटुतुम्बीकल्पः	411
7	कुष्माण्डीकल्पः	313
8	कोलकवृक्षकल्पः	536
9	क्षीरकञ्चुकीकल्पः	423
10	गन्धककल्पः	206
11	चन्द्रोदककल्पः	490
12	ज्योतिष्मतीकल्पः	177
13	तालककल्पः	255
14	तृणज्योतिकल्पः	358
15	दक्षिणदेशताम्रवर्णकल्पः	454
16	देवदालीकल्पः	382
17	नागमण्डलकल्पः	460
18	पीतदेवदालीकल्पः	401
19	ब्रह्मदण्डीकल्पः	155
20	मयूरगिरकल्पः	457
21	मुषलीकल्पः	167
22	रक्तवज्रीकल्पः	285
23	रुद्रवन्तीकल्पः	434
24	विषोदककल्पः	511
25	वीराकल्पः	366
26	शाल्मलीकल्पः	542
27	शृङ्खलाकल्पः	173
28	शैलोदकविधिः	525
29	श्रीवृक्षकल्पः	556

२. श्लोकसूची

श्लोकाः	**श्लोकक्र.**
अग्निसंयोगतो ग्रासं तत्क्षणाद्देवि जीर्यति	364.a
अञ्जनाभो रसस्तत्र भवति सर्वसात्त्विकः	488.a
अतः किं बहुभिर्मन्त्रैर्मूलमात्रं रसायनम्	384.a
अतितीक्ष्णकषायानि तैलं काञ्जीकमेव च	217.a
अथ तस्योत्तरे पूर्वे गत्वा पदशतत्रयम्	478.a
अथ तस्यौषधस्याल्पं कथयामि समाहितः	304.a
अथ पुष्पीं समागृह्य श्वेतां च गिरिकर्णिकाम्	8.a
अथवा तां क्षिपेद्वक्त्रे हयदृश्यो जायते नरः	312.a
अथवा पत्रपुष्पाणि फलं मूलं तथैव च	301.a
अथवारोटकं सूतं चतुर्थांशेन सूतकम्	310.a
अथातः संप्रवक्ष्यामि शैलोदकविधिं प्रिये	525.a
अथैतद्भक्षयेत् सूक्ष्मं चूर्णं कृत्वा विचक्षणः	291.a
अधिकं विद्यमाने च सर्वे क्लिश्यन्ति जन्तवः	436.a
अनेन कुरते दिव्यं रूपमेतन्न संशयः	320.a
अनेन घातयेत्सूतं पञ्चावस्थं कुरु प्रिये	46.a
अनेन सेवितं कुर्याद्बलं तावत्पराक्रमम्	554.a
अनेनैव विधानेन नागपत्राणि लेपयेत्	524.a
अन्धमपागतं मातं जरादारियनाशनम्	235.a
अन्धमूषागतं कृत्वा धमेतु खदिराग्निना	287.a
अन्धमूषागतं ध्मातं सिद्धान् सम्पूज्य यत्नतः	431.a
अन्यत्र यत्र कुत्रापि ब्रह्मविष्णुशिवोद्भवम्	533.a
अन्यौषधीं प्रवक्ष्यामि रसबन्धकरीं प्रिये	110.a
अपराजिता च लोकेऽस्मिन् ख्याता च गिरिकर्णिका	152.a
अमुना विधिना चैव रसमभ्रं विमर्दयेत्	351.a
अमृतं विधिसंयुक्तं विधिहीनं च तद्विषम्	219.a
अरुणाङ्कोलबीजस्य तैलं पूर्ववदाहृतम्	539.a
अर्द्धपलं तु खण्डस्य षण्मासस्य प्रयोजनात्	233.a
अलाबुके रसं दत्त्वा दिनानि चैकविंशतिः	489.a
अल्पायुषश्च ये मह्यां जरादारिद्र्यपीडिताः	207.a
अवध्यः सर्वभूतानां त्रैलोक्ये विचरेत्तु सः	508.a

जारयेद्वालुकायन्त्रे स्थिरं भवति तत्क्षणात्	93.a
जितेन्द्रियो जितक्रोधो जीवेद् यावन्महेश्वरः	192.a
जीर्णान्ते भोजनं कुर्याच्छाल्योदनपयोयुतम्	561.a
जीर्णे तच्च पिबेत्क्षीरं कथितं गव्यमुत्तमम्	498.a
जीवेत्पञ्चशतान्येव निरुजो निरुपद्रवः	371.a
जीवेद्ब्रह्मायुषं यावन्नात्र कार्या विचारणा	191.a
जीवेद्वर्षसहस्राणि साधको नात्र संशयः	91.a
ज्योतिष्मती नाम लता या च काञ्चनसन्निभा	117.a
ज्वाला गर्दभलूताश्च कीटा दुष्टव्रणा अपि	328.a
टङ्कणेनोपलिप्तेन पात्रे चैव विधारयेत्	495.a
तच्चूर्णं माक्षिकं चैव गन्धकं विमलं रसम्	430.a
तडागकर्दमैः पिण्डं बद्ध्वा तं साधकोत्तमः	475.a
तडागे स्वच्छतोये च शोणस्य तीरसंस्थिते	474.a
तडागो दृश्यते तत्र नर्मदा च शिरःस्थिता	485.a
तत उद्धृते मुखे क्षिप्रं सद्यः खेचरतां नयेत्	278.a
तत उद्धृत्य पुनर्बद्धं बीजपूररसेन तत्	281.a
ततः संजायते दिव्यं दिव्यतेजःसमप्रभम्	416.a
ततक्षणात्खेचरी सिद्धिर्जायते नात्र संशयः	288.a
ततस्तत्कन्दके क्षिप्त्वा रसं तत्क्षीरसंयुतम्	428.a
ततो यन्त्रे च निष्पीड्य तैलं ग्राह्यं ससंयतम्	558.a
ततो रससमं ग्राह्यं तेन सिक्तं तु वापितम्	32.a
तत्कल्कं गोलकं कृत्वा बीजपूररसेन च	270.a
तत्क्षणाज्जायते बद्धो रसस्य रसकस्य च	57.a
तत्क्षणान्मिलति बद्धं वज्ररत्नं तु काञ्चनम्	63.a
तत्क्षीरं त्रिदिनं पीत्वा सर्वरोगैः प्रमुच्यते	360.a
तत्ताम्रं च भवेत्पीतमष्टवर्णं न संशयः	251.a
तत्तारे जायते श्रेष्ठं धर्मकामार्थसिद्धिदम्	28.a
तत्तैलं पिष्टमात्रोऽपि बद्धो भवति पारदः	570.a
तत्तैलं मधुना युक्तं गन्धकेन समन्वितम्	567.a
तत्र कुष्माण्डको नाम दिव्यौषधी प्रतिष्ठिता	314.a
तत्रस्थं लक्षवेधि स्यादिच्छा भगवतीतटे	529.a
तत्सूतं बीजसंयुक्तं जारयेत्सारयेद्रसम्	504.a
तत्सूतं मारयेद्भस्म चौषधीवेगजारिणः	89.a
तथैव म्रियते कान्तिर्हेमाभ्रेण च संयुतम्	134.a

तदौषध्या रसं नीत्वा पारदेन च मर्दयेत्	369.a
तदौषध्या रसस्तम्भस्तेन वङ्गं सूदेत्पुनः	321.a
तद्गन्धकस्य गन्धेन मोहिताः सर्वदेवताः	210.a
तद्धेमपक्वबीजं तु तेन भस्मसमं कुरु	62.a
तद्भाव्यं पुटपाकेन काञ्चनं दोषवर्जितम्	290.a
तद्रसं भक्षयेत्प्रातः षण्मासादमरो भवेत्	101.a
तद्रसं रसकं चैव तीक्ष्णलोहं च पन्नगम्	56.a
तद्रसे गन्धकं दत्त्वा पत्रलेपे रवौ हते	24.a
तद्रसे ढालयेच्चैव हेमं भवति शोभनम्	445.a
तद्रसेन द्रुतं तारं कृष्णवर्णमिवाप्नुयात्	546.a
तद्रसेन समायुक्तं मञ्जिष्ठारक्तचन्दनम्	146.a
तद्रसैः कान्तिहेमाभ्रैर्जारितः सारितो रसः	433.a
तद्रसैर्मर्दयेत्सूतं यावत्सप्तदिनानि च	113.a
तद्वङ्गेन हतं तारं ताम्रे वै लेपयेत्तदा	175.a
तद्विषोदकमित्याहुः सर्वसिद्धिकरं परम्	515.a
तद्वृक्षभाजनं चैव निक्षिपेद् भानुसन्निधौ	538.a
तद्वृक्षमध्ये निक्षिप्य रसाधो लोहनालिकम्	545.a
तन्मध्ये खन्यमाने तु ऊषाकर्दममाप्यते	456.a
तन्मूलं कान्तपाषाणं शुद्धसूतसमन्वितम्	572.a
तन्मूलकल्कतैलं तु सितया सह सेवितम्	543.a
तन्मूलचूर्णसंयुक्तं विडालपदमात्रकम्	380.a
तन्मूलरसं संलिप्य रसराजः सुरेश्वरि	109.a
तन्मूलरसगन्धाभ्रर्मातुलुङ्गाम्लपेषितैः	108.a
तन्मूलवाजिगन्धाभ्यां युक्ताभ्यां भागशक्तुना	548.a
तप्तकाञ्चनसङ्काशः केशाश्च भ्रमरोपमाः	259.a
तया नस्यं प्रदातव्यं	407.a
तयोश्चतुर्दशांशेन तारार्धेन प्रयोजयेत्	341.a
तरूपरि समारुह्य दिशो दश निरीक्षते	296.a
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन ज्ञातव्या च कुलौषधी	78.a
तस्य क्षीररसं ग्राह्यं सूतं तेनैव मर्दयेत्	200.a
तस्य च स्पर्शमात्रेण सर्वलोहानि विध्यति	501.a
तस्य तैलं समादाय कुम्भे ताम्रमये क्षिपेत्	119.a
तस्य तैलस्य भागैकं द्वौ भागौ पूर्वसूततः	421.a
तस्य पञ्चाङ्गचूर्णेन पारदं सह मर्दयेत्	130.a

तस्य भक्षितमात्रेण वलीपलितजितः	38.a
तस्य मध्यात्तु मृद्ग्राह्या शोभना तारकारका	479.a
तस्य मूत्रपुरीषेण शुल्वं भवति काञ्चनम्	510.a
तस्य मूत्रपुरीषेण शुल्वं भवति काञ्चनम्	39.a
तस्य मूत्रपुरीषेण शुल्वपत्राणि लेपयेत्	188.a
तस्य वर्णं तु जानीहि त्रिविधं चारुलोचने	211.a
तस्या बीजं समादाय सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत्	413.a
तस्या मूलं तु संगृह्य क्षीरेण सह पेषयेत्	359.a
तस्या मूलं तु संगृह्य क्षीरेण सह पेषयेत्	361.a
तस्याः कन्दरसं दिव्यं कृष्णनालसमन्वितम्	125.a
तस्याः पुष्पं भवेद्रक्तं शुकतुण्डनिभप्रभम्	295.a
तस्याग्रे च भवेत्पुष्पं शुकतुण्डस्य सन्निभम्	111.a
तां तारे वेष्टयेत् शुद्धं पुटपाकेन काञ्चनम्	455.a
तां मृदं भक्षयेद् यस्तु तत्क्षणान्मूर्छितो भवेत्	476.a
ताडयेत्तु पयसि गुणात्मके	16.a
तामुत्थाप्य ततस्तोयं ग्राहयेच्च पुनः पुनः	494.a
ताम्बूलस्य रसेनैव मर्दयेत्त दिने दिने	275.a
तारं हेमसमायुक्तं हेमं भवति शोभनम्	400.a
तारपत्रस्य लेपेन त्वर्द्धार्धं काञ्चनोपमम्	23.a
तारे ताम्रे तु तल्लेपात् कोटिवेधीसमेन तु	51.a
तालकं च रसं चैव मातुलुङ्गरसान्वितम्	273.a
तालकं चोत्तमं प्राप्य त्रिषु लोकेषु दुर्लभम्	255.a
तालकं सूतकं चैव एकीकृत्य विमर्दयेत्	277.a
तावत्तु ताडयेत्तेषां यावद्बध्नाति पिण्डिकाम्	19.a
तुत्थचूर्णस्य माषैकं तत्समं ताम्रपत्रकम्	249.a
तुलार्द्धसम्मितं तौल्यं हरितालं सुपेषयेत्	5.a
तृणौशध्या रसैः सूतो नैव बद्धः कदाचन	80.a
तृषितं पाययेत्क्षीरं पायसं चैव दापयेत्	185.a
तेन तैलेन देवेशि रसं संकोचयेद्बुधः	29.a
तेनैव घातयेद्वङ्गं तारेण निर्वहेत् परम्	26.a
तेनैव च विधानेन भावयेच्च पुनः पुनः	420.a
तेनैव रसपिष्टेन पूपां कृत्वा पचेद्बुद्धः	257.a
तेनैव वेधयेच्छुल्वं शतांशेन तु काञ्चनम्	503.a
तेनोद्वर्तकृतेनैव क्षीरभोजनमाचरेत्	422.a

देवदालीरसो ग्राह्यो गन्धपाषाणमेव च	398.a
देवदाल्या महौषध्या विधिं वक्ष्यामि तत्परम्	147.a
देवदाल्यास्तु पञ्चाङ्गं छायाशुष्कं कारयेत्	401.a
देशे देशे प्रवृद्धा या सा च पुष्पैश्चतुर्विधा	386.a
द्रावयित्वा निषिञ्चेत दशतः शुद्धिमाप्नुयात्	338.a
द्वितीये वासरे प्राप्ते वज्ररत्नं तु घातयेत्	60.a
द्विपदीरजसा सार्द्धं भावयेत्तद्रसे शिलाम्	50.a
द्विसप्ताहं रसस्तस्या मर्दनाद्वीरवन्दिते	43.a
धान्याभ्रकं समादाय तस्या मूलं च पारदम्	377.a
नखः सङ्कुचते तत्र तैलं नैव विसर्पति	513.a
नरसाररसे दत्वा मञ्जिष्ठारक्तचन्दनम्	54.a
नरसाररसेनैव क्षणाद्बध्यते सूतकम्	48.a
नरसाररसेनैव सिंहतुण्डरसेन च	53.a
नरेन्द्र सुरया सिक्तं शुल्वं तारं करोति च	283.a
नर्मदायां सुवर्णाभाः पाषाणाः कुक्कुटाण्डवत्	483.a
नलिनीरससूतेन्द्रं रक्तचित्रकसंयुतम्	116.a
नवनागबलं धत्ते वलीपलितवर्जितः	165.a
नवमे सप्तके प्राप्ते गुञ्जायाः कोटिवेधिकम्	355.a
नष्टपिष्टं भवेत्तावद्यावत्स्वेद्यं दिनत्रयम्	282.a
नष्टपिष्टं भवेद्यावत्तावत्खल्वे चतुर्दिने	271.a
नागानां दमनी यस्मात्तं नागदमनीति सा	325.a
नागिनीकन्दसूतेन्द्रं रक्तचित्रकसंयुतम्	133.a
नागिनीरसनिर्गुण्डीरसोऽपामार्ग एव च	342.a
नागिनीरससिक्तानि शुल्वपत्राणि लेपयेत्	335.a
नागोऽपि जायते हेमं नात्र कार्या विचारणा	432.a
निम्बकाष्ठं समुद्धृत्य सच्छिद्रं कारयेद्बुधः	265.a
निर्जीवत्वं गतः सूतः कयं जीवं ददाति सः	83.a
निर्दहेत्पुटपाकेन निर्बीजं काञ्चनं भवेत्	189.a
निर्वातशायी क्षीराशीस्तिष्ठेदम्लानमानसः	579.a
निशाचररसे क्षिप्तं सप्तवारं तु भास्करम्	31.a
निशाचररसे देवि गन्धकं भावयेत्ततः	22.a
निशाचररसैर्भाव्यं सप्तवारं तु तालकम्	174.a
निशाचरस्य पत्राणि सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत्	36.a
निषेकोऽयं त्रिधा पूर्वं पुनः शुल्वं त्रिधा त्रिधा	339.a

पुनर्यौवनमायाति भ्रमरा इव मूर्द्धजाः	224.a
पुष्टां कुमारीं बहुलारसं च	12.a
पुष्यनक्षत्रयुक्तायां तस्याश्चैव विशेषतः	388.a
पुष्यनक्षत्रयोगे च सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत्	169.a
पुष्ये समुद्धृता यत्नाद् विजयां च शुभावहाम्	153.a
पूर्णिमायां त्रयोदश्यां राहुग्रस्ते दिवाकरे	387.a
पूर्वकल्केन संविद्धं षोडशांशेन काञ्चनम्	337.a
पूर्वतः कर्वुरः प्रोक्तो दक्षिणे नागमण्डलः	469.a
पूर्वोत्तरे समाख्याता कुला नाम महानदी	472.a
प्रथमे सप्तके पूर्णे एतद्भवति लक्षणम्	262.a
प्रद्युम्नसदृशो लोके नागायुतपराक्रमः	300.a
प्रमतञ्च विषञ्चव कामं सूतकगन्धकम्	218.a
प्रस्थं तु भक्षयेत्प्राज्ञो मासैकेन सुमन्त्रितम्	284.a
प्रातर्निष्कचतुष्कं च लिह्याद्दहनसंयुतम्	568.a
फलानि शाफवृक्षस्य पक्वानि चैव संग्रहेत्	145.a
बन्धनं रसराजस्य सर्वलोकवशङ्करम्	139.a
बहुनात्र किमुक्तेन घृतेन मधुना सह	254.a
बिल्वबीजानि संगृह्य सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत्	557.a
बीजानि तस्याः संग्रह्य आतपे शोषयेत्ततः	178.a
बीजेन सह संयुक्तं हेमं भवति शोभनम्	410.a
बृहस्पतिसमो भूत्वा सर्वज्ञो देवपूजितः	381.a
ब्रह्मत्वं जायते तस्य शरीरं नूतनं भवेत्	190.a
ब्रह्मदण्डीति विख्याता अधःपुष्पीति नामतः	155.a
ब्रह्मदण्डीयमूलं तु कृष्णसूत्रेण वेष्टितम्	156.a
भक्षितस्तोलकैकेन स्पर्शवेधी भवेन्नरः	90.a
भग्नमेतत्स्रवेत्क्षीरं रक्तवर्णं सुशोभनम्	138.a
भद्राङ्गे दिनवेधि स्याद्दक्षाद्रौ तु त्रिवासरम्	530.a
भूमिस्थं मासमेकेन धारयेत्तद्विचक्षणः	236.a
भूयो भूयः प्रकुर्वीत यावत्खोटो भवेद्रसः	378.a
भोजनानि च वक्ष्यामि भक्ष्यमाणानि यानि च	214.a
भ्रमन्ति पशवो मूढाः कुलौषधीविवर्जिताः	77.a
मधुभाण्डे विनिक्षिप्य मुद्रयित्वा भुवि क्षिपेत्	578.a
मधुसर्पिः समायुक्तः स रसो यत्नतो भवेत्	392.a
मध्ये सरस्वती याता कर्वुरे नागमण्डले	471.a

मर्दनात्स्वेदनाच्चैव रसः सर्वांश्च विध्यति	332.a
मर्दयित्वा च तत्कल्कं शुल्वपत्रे प्रलेपयेत्	362.a
मर्दयेत् शुल्वके श्रीमान् शुल्वपत्राणि लेपयेत्	446.a
मर्दयेत्स्निग्धपाषाणे पुनर्भाव्यं च मर्दयेत्	374.a
महामूर्च्छागतं सूतं को1 वाऽपि कथयेन्मृतम्	86.a
महारसस्य गुञ्जार्द्धं घृतेन मधुना सह	376.a
महारसे तु संप्राप्ते को न मुच्येत वेधनात्	357.a
महेन्द्रशिखरे चैव तिष्ठति च महौषधी	368.a
महेन्द्रे मलये चैव तथा चामरकण्टके	491.a
महौषधीं तथा पश्येदायुर्द्रव्यप्रदायकान्	467.a
मारयेद्भूधरे यन्त्रे बीजं तस्य महीतले	505.a
मार्गे संस्थापिते पूर्वं सर्वसिद्धिसमाकुलम्	461.a
मासंकस्य प्रयोगेण खेचरत्वं प्रपद्यते	264.a
मासकस्य प्रयोगेण सर्वव्याधिविवर्जितः	575.a
मासत्रयप्रयोगेण दिव्यदेहोऽभिजायते	227.a
मासमात्रं तदश्नीयात्स भवेदजरामरः	535.a
मासमेकं तदुद्धृत्य रक्षयेत्तु विधानतः	559.a
मासषट्कप्रयोगेण जीवेद्वर्षसहस्रकम्	394.a
मासषट्कप्रयोगेण सहस्रायुर्भवेन्नरः	569.a
मासादूर्ध्वं समुद्धृत्य सूतेन सह मर्दयेत्	266.a
मासैकस्य प्रयोगेण सर्वरोगविवर्जितः	231.a
मासैकेन प्रयोगेण कुष्ठानष्टादश प्रिये	222.a
मुखं त्रिसप्ताहेनैव शतपत्रनिभप्रभम्	161.a
मुनिवृक्षरसैश्चैव तत्कल्कं तु कारयेत्	334.a
मुषलीतलवीर्येयं महाव्याधिविनाशिनी	167.a
मूत्रेण सह संयुक्ता कुष्ठानष्टादशान् हरेत्	329.a
मृतस्यापि विशेज्जीवी नात्र कार्या विचारणा	47.a
मेदिनीयन्त्रमध्ये तु स्थापयेच्च वरानने	67.a
मेधावी सुभगः श्रीमान् जीवेद्वर्षशतत्रयम्	263.a
म्रियते नात्र सन्देहो ध्मातस्तीव्रानलेन तु	103.a
म्रियते नात्र सन्देहो लक्षवेधी भवेत्सः	107.a
म्रियते रवितापेन रसो दिव्यौषधीबलात्	311.a
यः कोऽपि सेवेत नित्यं शाल्मलीकल्पमुत्तमम्	555.a
यदा च पश्येदरुणानिभां शुभां	20.a

यदा तद्बुद्बुदाकारं तदा शैलोदकं भवेत्	528.a
यवान्मुद्गांश्च भुञ्जीत क्षीरं मधु तथा घृतम्	216.a
यष्टीमधुसमायुक्तं मधुना लेहयेत्सदा	162.a
यस्तु दधिपयोयुक्तं मर्दितं लोहभाजने	279.a
यस्मै दद्यात्तु तत्तैलमभ्रकेण समन्वितम्	417.a
याममात्रैः पचेद्धीमान् सर्वं गुञ्जानिभं भवेत्	566.a
यावत्सञ्जायते पिण्डं धापयेत्खदिराग्निना	289.a
यावन्न बद्धमेकं तु विकृतं तत्तु काञ्चनम्	82.a
युवातिवृद्धो भवति वलीपलितवर्जितः	553.a
योजनानां शतं गच्छेत् श्रमस्तस्य न जायते	163.a
रक्तकञ्चुकिकन्दात्तु स्त्रीस्तन्येन तु पेषयेत्	98.a
रक्तचित्रकचूर्णेन वङ्गं तापैस्त्रिभिस्त्रिभिः	132.a
रक्तचित्रकभल्लाततैललिप्तपुटेन तु	131.a
रक्तवर्णायाः शाल्मल्याः पूर्ववन्मूलमाहरेत्	550.a
रक्तैरण्डकतैलेन शुद्धसूतं च गन्धकम्	565.a
रम्यप्रदेशे सुस्थश्च सुप्रशस्ते शुभे दिने	4.a
रसं च तालकं तुल्यं मर्दयेदुच्चटारसैः	114.a
रसं च मधुरं चैव स्रवते सा निरन्तरम्	297.a
रसं च माक्षिकं चैव विमला च मनःशिला	443.a
रसं दशपलं अद्याद्देहसिद्धिकरं परम्	459.a
रसं रक्तस्नुहीक्षीरं कुनटीं गन्धकाभ्रकम्	127.a
रसं संमूर्च्छयेत्तेन हयसकृद् मर्दयेत्तु तम्	415.a
रसः सर्वमयो धातुर्येन तुष्ट उमापतिः	1.a
रसग्रासं ततो दत्त्वा मर्दितं गोलकं कुरु	68.a
रसनं च रसादीनां रसोपरसमेव च	345.a
रसबन्धं प्रवक्ष्यामि साधकः सिद्धिभाग् भवेत्	372.a
रसायनं प्रवक्ष्यामि यत्सुरैरपि दुर्लभम्	293.a
रसाश्च रसकूपाश्च आयुर्धनकराश्च ये	466.a
रसेन्द्रं जायते ग्रासं यन्त्रे विद्याधराभिधे	52.a
रात्रौ ज्वलति सा नित्यं हिरण्यसदृशी भवेत्	358.a
रुदन्तीरसतः सर्वं मर्दयेत्सप्तवासरान्	444.a
रुदन्त्याश्चैव पञ्चाङ्गं स्वर्णेन सह मर्दयेत्	442.a
लक्षणं प्रवक्ष्यामि नालपत्रैश्च सुन्दरि	323.a
लक्षवेधि नृसिंहस्य नगरे देउलियाख्ये	532.a

लाङ्गलीकन्दमादाय कर्कोटीकन्दमेव च	102.a
लेपमात्रेण तेनैव कुष्ठानष्टादश प्रिये	35.a
लेपमात्रेण तेनैव चतुःषष्टितमो भवेत्	27.a
वज्रं च घातयेत्सा तु नात्र कार्या विचारणा	73.a
वज्रकन्दं समानीय रसमध्ये विनिक्षिपेत्	100.a
वज्रभस्म हेमभस्म द्वे एकत्र विबन्धयेत्	88.a
वन्ध्याया जायते पुत्रं दीर्घायुः प्रियदर्शनम्	330.a
वमनं रेचनं कृत्वा रसायनमयाचरेत्	213.a
वर्षत्रयप्रयोगेण जायते मृत्युनाशनम्	395.a
वर्षैकस्य प्रयोगेण2 नवनागबली भवेत्	426.a
वर्षैकेण पुमांश्चैव जराव्याधिविवर्जितः	451.a
वलीपलितनिर्मुक्तो जराव्याधिविवर्जितः	201.a
वातारितैलं संमिश्र्यं त्रिफलाया रसेन च	221.a
विजया नाम विख्याता त्रिषु लोकेषु पार्वति	307.a
विडालपदमात्रं तु पिबेदुष्णेन वारिणा	397.a
विद्रुतं रञ्जयेत्तारं तापितं स्वर्णवद्भवेत्	551.a
विधानं तस्य वक्ष्यामि कथ्यमानं शृणुष्व तत्	199.a
विधिना भक्षयेन्नित्यं सर्वकामफलप्रदम्	220.a
विमर्द्य पारदं तेन मूषायामधरोत्तरम्	541.a
विरेचनं क्रियमाणे तु गोमूत्रे च दापयेत्	391.a
विषोदकं गन्धकं च हरिबीजं च तत्समम्	522.a
वृक्षोत्तमाग्निपरिकल्पितनामधेयं	556.a
वृश्चिकापत्रिकाबीजं नारीस्तन्येन मिश्रितम्	99.a
वेधयेत्सप्तलोहानि लक्षांशेन वरानने	115.a
व्याघ्रपिङ्गलयोर्मध्ये गङ्गा नाम महानदी	470.a
शतं वाप्यधिकं वापि त्रिंशन्न्यूनं न कारयेत्	183.a
शतं वेधयते लक्षं सहस्रं कोटिवेधकम्	33.a
शतांशवेधकर्ताऽयं देहसिद्धिं करोति हि	104.a
शतावर्या समं चूर्णं तद्रसेन तु भावितम्	164.a
शम्भुं चैवार्कवल्लीं तु वेल्लकारं सुशीरकीम्	9.a
शशिरूपमये पात्रे मर्दनं लिङ्गसंस्थितम्	2.a
शस्त्रच्छिन्ना महादेवि दग्धा या पावकेन तु	122.a
शाकवृक्षस्य देवेशि निष्पीड्य रसमुत्तमम्	140.a
शाकवृक्षस्य निर्यासं यत्नेन परिगालयेत्	143.a

सप्तविंशतिमितैश्च यामकैः	18.a
सप्ताहं मर्दितस्तस्या महौषधिरसेन सः	42.a
सबीजा चौषधी ग्राहया काचिद्गुल्मलता प्रियं	65.a
सबीजा चौषधी ग्राहया काचिद्गुल्मलता प्रिये	59.a
समस्तं जायते हेमकूर्माण्डकसमप्रभम्	58.a
समे तु गगने जीर्णे बद्धं तिष्ठति सूतकम्	69.a
सर्वभक्षोऽपि मानवः	441.a
सर्वरोगविनिर्मुक्तो जायते नात्र संशयः	203.a
सर्वव्याधिविनिर्मुक्तो वलीपलितवर्जितः	509.a
सर्वा जराः प्रणश्यन्ति नात्र कार्या विचारणा	408.a
सर्वाणि विषमात्राणि हरते यस्य देहगा	327.a
सर्वासामौषधीनां तु रसायनमनुत्तमम्	195.a
सहयाचलपुरे देव्या दत्तात्रेयस्य सन्निधौ	531.a
सा ध्माता खदिराङ्गारैः स्रवते रसमुत्तमम्	480.a
सार्धमासप्रयोगेण कुञ्जरैः सह युध्यते	166.a
सास्ति गङ्गामहातीरे गङ्गा त्वाश्रयते गिरौ	124.a
सितक्षौद्रेण संपीतं कुर्याद्वज्रनिभं वपुः	552.a
सितारुणहरिद्वर्णैः कृष्णैरेव चतुर्विधैः	536.a
सितासितहरिद्वर्णैः कृष्णैरेव चतुर्विधैः	542.a
सिद्धिद्रव्यानि यावन्ति मध्ये च रसकूपिका	473.a
सुमुहूर्ते शुद्धकाये पिबेत्सूर्योदये पलम्	184.a
सुवर्णपुष्पी गौरी च मुसली पुङ्गपत्रिका	168.a
सूक्ष्मं निष्पीडयेत्पश्चाच्छायाशुष्कं3 तु सर्वदा	7.a
सूतसंपत्तिकाले तु धातुरूपी रसः शुभः	3.a
सोमराज्यास्तु बीजानि वितुषाणि तु कारयेत्	447.a
स्निग्धभाण्डे तु संस्थाप्य धान्यराशौ निधापयेत्	182.a
स्नुहीक्षीरं समादाय निष्कार्धं हेमं ध्मापयेत्	128.a
स्नुहीक्षीरेण शुल्वस्य पत्रलेपं तु कारयेत्	126.a
स्वर्णं भवति रूपाढ्यमग्निवर्णं न संशयः	481.a
स्वर्णवत्पीतपुष्पा च लक्षणैरिति लक्षयेत्	324.a
हंसपदीरसं सूतं शुककन्दोदरे क्षिपेत्	105.a
हंसाङ्घ्रिशुकचञ्च्वोश्च रसेन मर्दयेद्रसम्	106.a
हते वङ्गे सहस्रैकं वेधते मासमात्रकम्	571.a
हरीन्दरीरसे न्यस्य गोशृङ्गे च वरानने	74.a

हिङ्गुला परिनिपीडिता दृढा	13.a
हिमालये शुभे रम्ये तथा जालन्धरे गिरौ	305.a
हेमार्द्धमिलिते हेममात्रिका समतां व्रजेत्	25.a

३. चरणसूची

श्लोकाः	श्लोकक्र.
अक्षयं च वरारोहे वह्निमध्ये न तिष्ठति	81.b
अग्निमध्ये धमेत्तं तु जायते काञ्चनं शुभम्	501.b
अग्निसंयोगतो ग्रासं तत्क्षणाद्देवि जीर्यति	364.a
अङ्गल्यग्रनखैर्लेपं तत्क्षणात्तु सकृत्पुमान्	298.b
अजामूत्रे तु संश्लिष्टं शुल्वपत्राणि लेपयेत्	522.b
अञ्जनाभो रसस्तत्र भवति सर्वसात्त्विकः	488.a
अतः किं बहुभिर्मन्त्रैर्मूलमात्रं रसायनम्	384.a
अतितीक्ष्णकषायानि तैलं काञ्जीकमेव च	217.a
अथ तस्योत्तरे पूर्वे गत्वा पदशतत्रयम्	478.a
अथ तस्यौषधस्याल्पं कथयामि समाहितः	304.a
अथ पुष्पीं समागृह्य श्वेतां च गिरिकर्णिकाम्	8.a
अथवा कृष्णपञ्चम्यामिमां विधिवदुद्धरेत्	388.b
अथवा तां क्षिपेद्वक्त्रे ह्यदृश्यो जायते नरः	312.a
अथवा पत्रपुष्पाणि फलं मूलं तथैव च	301.a
अथवा सूतके देवि तेन रक्तेन मर्दयेत्	288.b
अथवाज्यप्रयोगेण भृशं कुष्ठं विनाशयेत्	170.b
अथवारोटकं सूतं चतुर्थांशेन सूतकम्	310.a
अथातः संप्रवक्ष्यामि शैलोदकविधिं प्रिये	525.a
अथातः संप्रवक्ष्यामि सद्यः प्रत्ययकारकम्	426.b
अथैतद्भक्षयेत् सूक्ष्मं चूर्णं कृत्वा विचक्षणः	291.a
अदिव्यास्तु तृणौषध्यो जायन्ते गिरिगह्वरे	80.b
अधिकं विद्यमाने च सर्वे क्लिश्यन्ति जन्तवः	436.a
अनले ध्मापयेद् यत्तु सुतप्तज्वलनप्रभम्	61.b
अनेन कुरते दिव्यं रूपमेतन्न संशयः	320.a
अनेन घातयेत्सूतं पञ्चावस्थं कुरु प्रिये	46.a
अनेन सेवितं कुर्याद्बलं तावत्पराक्रमम्	554.a
अनेनैव विधानेन नागपत्राणि लेपयेत्	524.a
अनेनैव विधानेन साधकः सिद्धिभाग् भवेत्	205.b
अन्धमपागतं मातं जरादारियनाशनम्	235.a

काञ्चनं गगनं सूतं कान्तवर्णं च तज्जलम्	500.a
काञ्चनं गगनं सूतं तत्तोयेन विमर्दयेत्	502.a
काञ्चनं जायते दिव्यं त्रिभिर्दोषैर्विवर्जितम्	303.b
काञ्चनं जारयेत्साऽपि रसेन्द्रमपि बन्धयेत्	72.b
कात्तिके चैव संप्राप्ते शोभने दिवसे शुभम्	260.b
कान्तजीर्णं रसं तत्र हेमपादेन जारितम्	286.a
कान्तिजीर्णं रसं कृत्वा हेमजीर्णमथापि वा	308.a
कामदेववपुः श्रीमान् जायते नात्र संशयः	319.a
कारयेत्तु गुटिकां शुभालये	16.b
कारयेत्तु सुदृढं रसायनम्	15.c
कारितां न सुभगां सुकूपिकां	17.a
कालिकारहितं तेन जायते कनकप्रभम्	31.b
कालिकारहितः सूतस्तदा जीवति पार्वति	84.b
कालिमागन्धनिर्मुक्तं निष्कमात्रं कृते सति	540.a
किं पुनर्बहुनोक्तेन त्वन्यथा तेन तस्य किम्	1.b
किमत्र चिन्त्यं यदि पीतगन्धकं	245.a
कुमारी ब्रह्मसोमा च निर्गुण्डीरसपत्रिका	336.a
कुमेरुपर्वते रम्ये मनोज्ञे तीर्थसङ्गमे	304.b
कुष्ठं भगन्दरं रोगं गण्डमालां च दारुणम्	328.b
कूपीमध्ये स्थिता रक्ता गुटिका रसवीर्यदा	19.b
कूपे रक्तं रसं पश्येत्सहस्रांशेन वेधकम्	458.a
कृष्णकोलक बीजानां बीजानां चूर्णमर्दितम्	537.a
कृष्णनाला भवेत्सा तु पत्रैस्ताम्बूलसन्निभा	323.b
कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्यां पुष्ययोगेन बुद्धिमान्	560.a
कोटिवेधी रसो देवि लोहान्यष्टानि विध्यति	64.a
कोरवल्ल्या रसेनैव भावितं दरदं प्रिये	92.b
क्रमादुत्तममध्यस्थं हीनं चैवाथ विक्रमम्	212.a
क्रौञ्चपादोदरे दत्त्वा ध्मातं दद्यात्पुटत्रयम्	106.b
क्वाथयेद्वह्निना प्राज्ञस्ततः शुल्वे विमर्दयेत्	349.a
क्षीणे चन्द्रे क्षयं गच्छेद्वर्द्धते नैव बध्यते	493.a
क्षीरं तैलं भवेत्तत्र हिङ्गुर्गन्धो न जायते	514.a
क्षीरकञ्चकी विख्याता औषधी सुरपूजिता	423.a
क्षीरकञ्चुकीयोगेन रसं चार्द्धं विमर्दयेत्	427.a
क्षीरकन्दविधिं वक्ष्ये सर्वसिद्धिकरं परम्	137.a

चतुर्थे सप्तके प्राप्ते वलयः पलितानि च	393.a
चतुर्लक्षणसंयुक्तं तस्या रूपं च कथ्यते	294.a
चतुर्वर्णानां मध्ये तु रक्तकन्दं प्रशस्यते	137.b
चतुर्विधं तु एरण्डं रक्तपीतादिभेदतः	564.a
चतुष्प्रकारा सा ज्ञेया रक्ता पीता सिताऽसिता	434.a
चन्द्रकान्तगिरिर्नाम हेमप्रस्थे च सुव्रते	306.a
चन्द्रभागा तथा गङ्गा नर्मदा च सरस्वती	462.a
चन्द्रभागानदी तत्र कर्वुरस्योपरि स्थिता	481.b
चन्द्रार्कपत्रं देवेशि जायते हेमशोभनम्	115.b
चन्द्रार्कपत्रं देवेशि जायते हेमशोभनम्	131.b
चन्द्रोदकं तु सम्प्राप्य घृतेन मधुना सह	496.a
चर्वितं पीतकं युक्तं तारपत्राणि लेपयेत्	274.a
चित्रकस्त्रिविधो ज्ञेयो रक्तः कृष्णो रसायने	129.a
चूर्णं कृत्वा ततो बीजं तैलं तस्मात्समुद्धरेत्	178.b
चूर्णं क्रमेण कदल्यपामार्गतिलमाक्षिकक्षाराणि चत्वारि	248.a
चूर्णं चैवाश्वगन्धाया धात्रीरससमन्वितम्	161.b
चूर्णितानि तु तान्येव त्रिदिनोष्णोदके क्षिपेत्	447.b
च्यवनस्य पश्चिमे भागे पाण्डवो नाम भागिकः	455.b
छगणेनाग्निं संधुक्ष्य पञ्चमाहिषसंयुतम्	280.a
छागलानि च मांसानि सदा पथ्यानि देहिनाम्	215.b
छायाशुष्कं च तन्मूलं गृह्यते निष्कमात्रकम्	574.a
छायाशुष्कं च तां कृत्वा चूर्णयेत्तद्विचक्षणः	389.a
छायाशुष्कं ततः कृत्वा नवनीतेन पेषयेत्	577.a
जलं स्रवेन्मधूच्छिष्टं तत्समादाय पार्वति	112.b
जातिफलानि कर्पूरमेला कस्कोलकं तथा	180.b
जाते तु सर्वगात्रे तु वृद्धोऽपि तरुणाकृतिः	299.b
जायते कनकं दिव्यमन्धमूषापुटे कृते	95.a
जायते काञ्चनं दिव्यं दिव्याभरणभूषितम्	317.a
जायते काञ्चनं दिव्यं निषेकाद्भास्करस्य च	54.b
जायते च हेमं दिव्यं तरुणादित्यवर्चसम्	341.b
जायते जोङ्गले देशे मलये च विशेषतः	367.a
जारयेत्सर्वलोहानि सर्वसत्त्वानि पातयेत्	72.a
जारयेद् गन्धकं सा तु तालकं जारयेत्तु सा	71.a
जारयेद्वालुकायन्त्रे स्थिरं भवति तत्क्षणात्	93.a

जितेन्द्रियो जितक्रोधो जीवेद् यावन्महेश्वरः	192.a
जीर्णान्ते भोजनं कुर्याच्छाल्योदनपयोयुतम्	561.a
जीर्णे चैव पिबेत्क्षीरं लवणाम्लविवर्जितम्	520.b
जीर्णे तच्च पिबेत्क्षीरं कथितं गव्यमुत्तमम्	498.a
जीर्यते गगनं देवि निर्मुखं चरति क्षणात्	53.b
जीवेत्पञ्चशतान्येव निरुजो निरुपद्रवः	371.a
जीवेद्ब्रह्मायुषं यावन्नात्र कार्या विचारणा	191.a
जीवेद्वर्षसहस्राणि साधको नात्र संशयः	91.a
ज्योतिष्मती नाम लता या च काञ्चनसन्निभा	117.a
ज्योतिष्मतीति विख्यातं रसायनं महत्तमम्	177.b
ज्वाला गर्दभलूताश्च कीटा दुष्टव्रणा अपि	328.a
टङ्कणेनोपलिप्तेन पात्रे चैव विधारयेत्	495.a
तं तारं भावयेत्सूतं तत्सूतं बन्धनं भवेत्	26.b
तं सन्तप्तं निषिञ्चेद्वा वज्र्यां कनकसंप्रभम्	126.b
तक्रसारसमं क्षीरं गोमूत्रं द्विगुणं भवेत्	179.b
तक्रारनालपयसा मधुवारिणाज्यैः	556.c
तच्चूर्णं माक्षिकं चैव गन्धकं विमलं रसम्	430.a
तच्छुल्वं जायते तारं धर्मकामार्थसाधनम्	176.b
तच्छूतो येन सन्तुष्टस्त्रिदशैरपि दुर्जयः	3.b
तडागकर्दमैः पिण्डं बद्ध्वा तं साधकोत्तमः	475.a
तडागस्तिष्ठति तत्र पिङ्गलस्योर्ध्वसंस्थितः	478.b
तडागे स्वच्छतोये च शोणस्य तीरसंस्थिते	474.a
तडागो दृश्यते तत्र नर्मदा च शिरःस्थिता	485.a
तत उत्तरे पारनदी वहति	460.b
तत उद्धृते मुखे क्षिप्रं सद्यः खेचरतां नयेत्	278.a
तत उद्धृत्य पुनर्बद्धं बीजपूररसेन तत्	281.a
ततः संजायते दिव्यं दिव्यतेजःसमप्रभम्	416.a
ततक्षणात्खेचरी सिद्धिर्जायते नात्र संशयः	288.a
ततश्च तारमध्ये तु त्रिगुणं वाहयेत्ततः	24.b
ततस्तत्कन्दके क्षिप्त्वा रसं तत्क्षीरसंयुतम्	428.a
ततो निर्गच्छति सिद्धिः सूर्यतेजसमप्रभम्	309.b
ततो यन्त्रे च निष्पीड्य तैलं ग्राह्यं ससंयतम्	558.a
ततो रससमं ग्राह्यं तेन सिक्तं तु वापितम्	32.a
ततो विरेचनं कृत्वा नक्षत्रे च शुभे दिने	392.b

तत्कल्कं गोलकं कृत्वा बीजपूररसेन च	270.a
तत्क्षणाज्जायते देवि पुटबद्धो महारसः	29.b
तत्क्षणाज्जायते बद्धो रसस्य रसकस्य च	57.a
तत्क्षणाज्जायते रक्तमेतद्भवति लक्षणम्	359.b
तत्क्षणाज्जायते हेमं कूर्माण्डकसमप्रभम्	362.b
तत्क्षणान्मिलति बद्धं वज्ररत्नं तु काञ्चनम्	63.a
तत्क्षीरं त्रिदिनं पीत्वा सर्वरोगैः प्रमुच्यते	360.a
तत्क्षीरं प्रतिवापं च दत्त्वा तं यत्नतो धमेत्	428.b
तत्ताम्रं च भवेत्पीतमष्टवर्णं न संशयः	251.a
तत्तारनागताम्रेषु सहस्रांशेन वेधकम्	566.b
तत्तारे जायते श्रेष्ठं धर्मकामार्थसिद्धिदम्	28.a
तत्तारे सूतकं सर्वं बन्धनं जायते तदा	175.b
तत्तैलं पिष्टमात्रोऽपि बद्धो भवति पारदः	570.a
तत्तैलं मधुना युक्तं गन्धकेन समन्वितम्	567.a
तत्तैलं सूर्यवारेण गृह्यते विधिवत्ततः	564.b
तत्तोयं पयसा सार्द्धं वर्षमेकं पिबेन्नरः	508.b
तत्पत्रपुष्पफलदण्डसमूलचूर्णम्	556.b
तत्पत्राणि तु देवेशि शुकपक्षनिभानि च	111.b
तत्पाके धाम्यमानेषु तारं भवति शोभनम्	456.b
तत्पुष्पभृङ्गराजाभ्यां तैलमुसलकन्दजम्	546.b
तत्र कार्यमिदं स्पष्टमेकान्ते सुविचारितम्	4.b
तत्र कुष्माण्डको नाम दिव्यौषधी प्रतिष्ठिता	314.a
तत्रस्थं लक्षवेधि स्यादिच्छा भगवतीतटे	529.a
तत्सूतं बीजसंयुक्तं जारयेत्सारयेद्रसम्	504.a
तत्सूतं मारयेद्भस्म चौषधीवेगजारिणः	89.a
तथैव म्रियते कान्तिर्हेमाभ्रेण च संयुतम्	134.a
तदहं संप्रवक्ष्यामि साधकः सिद्धिभाग् भवेत्	411.b
तदौषधीरसो ग्राह्यः पारदं तेन मर्दयेत्	317.b
तदौषध्या रसं नीत्वा पारदेन च मर्दयेत्	369.a
तदौषध्या रसस्तम्भस्तेन वङ्गं सूदेत्पुनः	321.a
तद्गन्धकस्य गन्धेन मोहिताः सर्वदेवताः	210.a
तद्देवि त्रिफलायुक्तं दिव्यदृष्टिकरं परम्	237.b
तद्धेमपक्वबीजं तु तेन भस्मसमं कुरु	62.a
तद्भाव्यं पुटपाकेन काञ्चनं दोषवर्जितम्	290.a

तद्रसं भक्षयेत्प्रातः षण्मासादमरो भवेत्	101.a
तद्रसं रसकं चैव तीक्ष्णलोहं च पन्नगम्	56.a
तद्रसात् सिन्दूरवर्णो हस्तो भवति निश्चितम्	315.b
तद्रसे गन्धकं दत्त्वा पत्रलेपे रवौ हते	24.a
तद्रसे गन्धकं साक्षाद्द्रावयित्वा लयेत्पुनः	34.b
तद्रसे ढालयेच्चैव हेमं भवति शोभनम्	445.a
तद्रसेन द्रुतं तारं कृष्णवर्णमिवाप्नुयात्	546.a
तद्रसेन समं कृत्वा गुटिकां कारयेद्बुधः	125.b
तद्रसेन समायुक्तं मञ्जिष्ठारक्तचन्दनम्	146.a
तद्रसेन सूतं मर्द्यं सप्तरात्रं तु भावयेत्	145.b
तद्रसेनैव संभाव्य लोहपात्रे च बुद्धिमान्	390.b
तद्रसैः कान्तिहेमाभ्रैर्जारितः सारितो रसः	433.a
तद्रसैर्मर्दयेत्सूतं यावत्सप्तदिनानि च	113.a
तद्वङ्गं तारमायाति सप्तवारं प्रढालनात्	452.b
तद्वङ्गं बद्धमायाति यावदाचन्द्रतारकम्	571.b
तद्वङ्गे च द्रुते क्षिप्ते सहस्रांशेन वेधकम्	573.b
तद्वङ्गेन हतं तारं ताम्रे वै लेपयेत्तदा	175.a
तद्विषोदकमित्याहुः सर्वसिद्धिकरं परम्	515.a
तद्वृक्षभाजनं चैव निक्षिपेद् भानुसन्निधौ	538.a
तद्वृक्षमध्ये निक्षिप्य रसाधो लोहनालिकम्	545.a
तन्मध्ये खन्यमाने तु ऊषाकर्दममाप्यते	456.a
तन्मध्ये तु महाकुण्डं क्षारमृद्भिः समन्वितम्	485.b
तन्मूलं कान्तपाषाणं शुद्धसूतसमन्वितम्	572.a
तन्मूलकल्कतैलं तु सितया सह सेवितम्	543.a
तन्मूलचूर्णसंयुक्तं विडालपदमात्रकम्	380.a
तन्मूलरसं संलिप्य रसराजः सुरेश्वरि	109.a
तन्मूलरसगन्धाभ्रर्मातुलुङ्गाम्लपेषितैः	108.a
तन्मूलवाजिगन्धाभ्यां युक्ताभ्यां भागशक्तुना	548.a
तप्तकाञ्चनवर्णाभो द्विरष्टवर्षमाकृतिः	262.b
तप्तकाञ्चनसङ्काशः केशाश्च भ्रमरोपमाः	259.a
तमत्र सप्तवारं तु द्विपद्याश्च रसेन तु	22.b
तया नस्यं प्रदातव्यं	407.a
तयोश्चतुर्दशांशेन तारार्धेन प्रयोजयेत्	341.a
तरुणादित्यसङ्काशो भवेन्मासप्रयोगतः	568.b

तामुत्थाप्य ततस्तोयं ग्राहयेच्च पुनः पुनः	494.a
ताम्बूलं पीतया युक्तं सीसके शुल्बकेऽपि च	284.b
ताम्बूलस्य रसेनैव मर्दयेत्त दिने दिने	275.a
ताम्बूले भक्षयेत्प्राज्ञो मासमेकं निरन्तरम्	273.b
ताम्बूलेन प्रदातव्यं चातुर्जातकसंयुतम्	291.b
ताम्बूलैर्मासमेकैकं भक्षयेत्तु दिने दिने	266.b
तारं हेमसमायुक्तं हेमं भवति शोभनम्	400.a
तारपत्रस्य लेपेन त्वर्द्धार्धं काञ्चनोपमम्	23.a
ताराभ्रके रसेनैव वङ्गं स्तम्भकरं परम्	503.b
तारे ताम्रे तु तल्लेपात् कोटिवेधीसमेन तु	51.a
तारेण सह देवेशि रसं च द्रावयेद्बुधः	340.b
तालं संगृह्य मेधावी प्रक्षाल्य तण्डुलाम्भसा	255.b
तालं संस्थाप्य तन्मध्ये गोष्ठे च निखनेत्त्विदम्	265.b
तालकं च रसं चैव मातुलुङ्गरसान्वितम्	273.a
तालकं चोत्तमं प्राप्य त्रिषु लोकेषु दुर्लभम्	255.a
तालकं तण्डुलांश्चैव स्थापयेत्खर्परे पुटे	268.b
तालकं पाचयेत्तावद् यावन्निगन्धतां व्रजेत्	269.b
तालकं पाचयेद्यस्तु गोमयं च समाहिषम्	278.b
तालकं पाचवेत्तावद्यावनिर्गन्धतां व्रजेत्	280.b
तालकं सुरसैकेन दत्वा च खर्परे पुनः	279.b
तालकं सूतकं चैव एकीकृत्य विमर्दयेत्	277.a
तालकेन रसं बद्धं मातुलुङ्गे पचेद्बुधः	283.b
तावत्तु ताडयेत्तेषां यावद्बध्नाति पिण्डिकाम्	19.a
तिलवत्क्वाथयित्वा तु हस्तपादैरथापि वा	118.b
तीक्ष्णं नागं तया शुल्वं रसकेन तु रञ्जयेत्	58.b
तुत्थचूर्णस्य माषैकं तत्समं ताम्रपत्रकम्	249.a
तुलार्द्धसम्मितं तौल्यं हरितालं सुपेषयेत्	5.a
तृणज्योतिरिति ख्याता शृणु दिव्यौषधी प्रिये	107.b
तृणौशध्या रसैः सूतो नैव बद्धः कदाचन	80.a
तृणौषधीरसानाच्च नैव सिद्धिः प्रजायते	78.b
तृषितं पाययेत्क्षीरं पायसं चैव दापयेत्	185.a
तेन तैलेन देवेशि रसं संकोचयेद्बुधः	29.a
तेन नागशतांशेन वेधते सावकोत्तमः	480.b
तेन प्रलिप्ततामस्य पत्राणि पुटपाकतः	539.b

त्वचः सर्वा विसृज्यास्तु नखरोमाणि सर्वशः	299.a
त्वत्प्रीत्यर्थं महादेवि मोक्षमार्गः प्रदर्शितः	192.a
त्वामहं संप्रवक्ष्यामि शृणुष्वायतलोचने	208.b
दक्षिणापथे करहाटं पत्तनं चैव तिष्ठति	457.a
दक्षिणे च नदीपारा पूर्वोक्ता सा व्यवस्थिता	471.b
दक्षिणे चोज्जयिन्यां च वेलान्तेऽपि च दृश्यते	124.b
दग्धारोहां प्रवक्ष्यामि रसबन्धकरीं भवेत्	121.a
ददाति खेचरीसिद्धिमनिवारितगोचराम्	44.b
दरदं चैव लोहानि सहस्रांशेन वेधयेत्	127.b
दरदमभ्रकं चैव ह्येकीकृत्य विमर्दयेत्	430.b
दरिद्रा नैव जानन्ति लोकेशेनैव भक्षणम्	412.a
दशमे सप्तके चैव सर्षपाद्दशकोटयः	355.b
दशवारं निषिक्तं तु भस्माकारं तु जायते	62.b
दशांशं मर्दयेत्तेन गतदेहं तु कारयेत्	33.b
दशांशं वेधयेत्सूतं दशवापि शतेन च	32.b
दशांशे लक्षवेधी स्यात्प्रागुक्तेन समेन तु	34.a
दाडिमेन समायुक्तमतीसारप्रणाशनम्	253.a
दारिद्र्यमीर्ष्यते यस्य तेन सैवेश्वरी मता	324.b
दिनमेकं ब्रह्मगिरौ विन्ध्ये तु क्षणवेधिकम्	530.b
दिनान्ते बन्धमायाति सर्वलोहानि विध्यति	49.a
दिने दिने प्रकुर्वीत क्षीराहारो जितेन्द्रियः	498.b
दिने दिने भक्षयेच्च मासमेकं निरन्तरम्	261.b
दिवसैकेन मेधावी वार्द्धक्यं च विनाशयेत्	561.b
दिव्यदृष्टिर्महातेजो द्वितीय इव शङ्करः	224.b
दिव्यरूपाणि पश्येच्च दृष्ट्वा लक्षणमीदृशम्	296.b
दिव्यायाश्चौषधेर्योगे तत्पुटं च सुखप्रदम्	2.b
दिव्यौषधिरसाभावे विध्यते न च बध्यते	346.a
दिव्यौषधी चतुःषष्टिः कुलमध्ये व्यवस्थिता	79.b
दिव्यौषधीप्रभावेन कनकं शोभनं भवेत्	318.a
दिव्यौषधीरसेनैव रसेन्द्रे सुरवन्दिते	75.a
दिव्यौषध्या च यद्देवि रसेन्द्रो मूर्च्छितो भवेत्	84.a
दिव्यौषध्या रसेनैव जायते नष्टचेतनः	86.b
दीर्घजीवी नरस्तथा	544.b
दुर्लभं त्रिषु लोकेषु सत्यं सत्यं न संशयः	197.a

दूरस्थः शृणुते वाक्यं विषं जीर्यति नित्यशः	186.a
दृष्ट्वा चैवं तरुं दिव्यं वज्रीरूपेण संस्थितम्	285.a
देवदालीति नाम्ना सा विख्याता च महीतले	383.a
देवदालीफलं मूलं गोमूत्रेण प्रपेषयेत्	404.a
देवदालीफलं मूलं निर्गुण्डीरसभावितम्	406.a
देवदालीफलं मूलमीश्वरीफलमुत्तमम्	405.a
देवदालीफलचूर्णमीश्वरीरस एव च	149.a
देवदालीफलरसं विष्णुक्रान्तां च सूतकम्	148.a
देवदालीरसं नीत्वा गन्धपाषाणमेव च	151.a
देवदालीरसं नीत्वा विष्णुक्रान्तासमन्वितम्	150.a
देवदालीरसः क्षौद्रं सर्पिरामलकीरसः	396.b
देवदालीरसैर्भाव्यं वङ्गं स्तम्भयते क्षणात्	149.b
देवदालीरसो ग्राह्यो गन्धपाषाणमेव च	409.a
देवदालीरसो ग्राह्यो गन्धपाषाणमेव च	398.a
देवदालीरसो ग्राह्यो लक्ष्मणारससंयुतः	395.b
देवदालीसमायुक्तं शुल्वमायाति काञ्चनम्	241.b
देवदाल्या महौषध्या विधिं वक्ष्यामि तत्परम्	147.a
देवदाल्यास्तु पञ्चाङ्गं छायाशुष्कं कारयेत्	401.a
देवदाल्यास्तु पञ्चाङ्गं छायाशुष्कं चूर्णयेत्	397.b
देवर्षिमनुष्याणां च सर्वेषां च जरापहा	383.b
देवस्य सङ्गमे भागे रक्तमृत्तिका तिष्ठति	454.b
देशे देशे प्रवृद्धा या सा च पुष्पैश्चतुर्विधा	386.a
देहस्था हरते देवि विषं स्थावरजङ्गमम्	326.b
द्रावयित्वा निषिक्तेन दशतः शुद्धिमाप्नुयात्	335.b
द्रावयित्वा निषिञ्चेत दशतः शुद्धिमाप्नुयात्	338.a
द्रावयेत्सर्वलोहानि पारदं चैव बन्धयेत्	151.b
द्रावयेत्सर्वलोहानि पारदं चैव बन्धयेत्	399.b
द्रावयेत्सर्वलोहानि पारदं चैव बन्धयेत्	409.b
द्रुतशुल्वे प्रतिवापं निर्बीजं कनकं भवेत्	442.b
द्वयोर्विमिश्रितं सूक्ष्मं लेपं तालेन पीडयेत्	10.b
द्वादशांशेन कल्केन नागमायाति तारताम्	453.b
द्वादशाब्दप्रयोगेण सिद्धिस्तस्य भवेद् ध्रुवम्	569.b
द्विगुणे गगने जीर्णे अष्टलोहानि संहरेत्	71.b
द्वितीये वासरे प्राप्ते वज्ररत्नं तु घातयेत्	60.a

द्वितीये सप्तके चैव भ्रमरा इव मूर्द्धजाः	263.b
द्वित्रिपञ्चगुणेनापि तत्तोयेनैव भावयेत्	504.b
द्विपदीरजसा सार्द्धं भावयेत्तद्रसे शिलाम्	50.a
द्विरष्टवर्षाकृतिको देहसिद्धिमवाप्नुयात्	521.b
द्विरष्टवर्षाकृतिको वलीपलितवर्जितः	477.b
द्विसप्ताहं रसस्तस्या मर्दनाद्वीरवन्दिते	43.a
धमेच्च मूकमूषायां खोटो भवति तत्क्षणात्	130.b
धमेन्मूषानलैर्वद्धो भक्षणाय प्रशस्यते	97.b
धर्मार्थकाममोक्षार्थे नैव दद्यात्तु तत्प्रिये	82.b
धान्यराशी विनिक्षिप्य मासेनाग्निसहो भवेत्	277.b
धान्यराशौ निधातव्यं त्रिसप्ताहं सुरेश्वरि	37.b
धान्यराशौ निधातव्यं मृतं तिष्ठति सूतकम्	75.b
धान्याभ्रकं समादाय तस्या मूलं च पारदम्	377.a
धाम्यमानं भवेत्तारं ताराधिपसमप्रभम्	475.b
धारयेदनलस्योपरिस्थिताम्	18.b
धूमवेधी रसश्चैव भवेत् षोडशयोगतः	506.b
ध्मापयेत् पूर्ववत्सूतं भक्षणार्थाय वार्त्तिकः	99.b
न क्रमेच्च क्वचिद्देवि रस ईश्वरभाषितः	346.b
न वेधं पञ्चाशदूर्ध्वं करोति स रसः प्रिये	82.b
नखः सङ्कुचते तत्र तैलं नैव विसर्पति	513.a
नरसाररसं दत्या द्विपदीरजसा सह	49.b
नरसाररसे दत्वा मञ्जिष्ठारक्तचन्दनम्	54.a
नरसाररसे स्तन्ये भावयेत्सप्तधा पृथक्	52.b
नरसाररसेनैव क्षणाद्बध्यते सूतकम्	48.a
नरसाररसेनैव जीर्णे षड्गुणपन्नगे	50.b
नरसाररसेनैव तेनैवैकत्र मर्दयेत्	57.b
नरसाररसेनैव सिंहतुण्डरसेन च	53.a
नरसाररसैर्भाव्यं रसकं सप्तवारतः	56.b
नरेन्द्र सुरया सिक्तं तारं भवति शोभनम्	272.b
नरेन्द्र सुरया सिक्तं शुल्वं तारं करोति च	283.a
नर्मदायां सुवर्णाभाः पाषाणाः कुक्कुटाण्डवत्	483.a
नलिनीरससूतेन्द्रं रक्तचित्रकसंयुतम्	116.a
नवनागबलं चैव सेवनात्तु प्रजायते	371.b
नवनागबलं धत्तं सर्वज्ञो विजयी भवेत्	201.b

पलमेकं पिबेत्तोयं ध्यानयुक्तः शुभेऽहनि	497.a
पलानि त्रिंशत्षष्टिर्वा त्वशीतिर्नवतिस्तथा	182.b
पलानि दश चूर्णस्य भूधात्र्यापि विभावयेत्	36.b
पलानि सप्ताश्वगन्धायास्ताली षष्ठपलानि च	159.a
पलाशनिष्ठीवित-कल्कमर्दितम्	245.b
पलाशाङ्कुररसेनैव सप्तरात्रं विमर्दयेत्	419.b
पशुपक्षिनरघ्नांश्च दृष्ट्वा प्रत्ययमाचरेत्	512.a
पश्चाच्चतुर्दिनं खेद्यं मातुलुङ्गस्य मध्यतः	271.b
पश्चाद्विपेषयेत्सूक्ष्मं त्रिदिनं निश्चलस्थितम्	6.a
पाचनान्ते पुटं कृत्वा वमनं तस्य कारयेत्	391.b
पाचितं सह नीरेण केशपाशविलेपनम्	547.a
पातालतलमार्गेण रसकूपाद्विनिर्गतम्	465.a
पातालयन्त्रे तत्तैलं गृह्णीयात्ताम्रभाजने	66.a
पारदं गन्धकं चैव वाकुचीतैलमर्दितम्	453.a
पारदं मर्दयित्वा तु अर्कतोये विशोषयेत्	333.b
पारदस्य पलं ग्राह्यमभ्रकस्य पलं तथा	348.a
पारदस्य पलं ग्राह्यमभ्रकस्य पलं तथा	372.b
पारदेन च संयुक्तमेकं कृत्वा विमर्दयेत्	270.b
पारदेन समायुक्तमजाक्षीरेण संयुतम्	519.a
पारदेनैव संयुक्तमेकं कृत्वा विमर्दयेत्	281.b
पारियात्रं मण्डलं सुप्रसिद्धमस्ति	460.a
पिङ्गलः कर्वुरश्चैव सुनन्दो नागमण्डलः	463.a
पिङ्गलकर्वुरयोर्मध्ये चन्द्रभागा विनिःसृता	470.b
पिबेन्मधुघृतैर्युक्तमसञ्ज्ञो भवति क्षणात्	309.a
पीतं चैव तथा श्वेतं कपोतं वै तृतीयकम्	211.b
पीतेन गन्धकं चैव रसं ताम्बूलमर्दितम्	243.a
पीतैरण्डस्य मूलं तु ग्राहयेत्पुष्यभास्करे	576.a
पुटं चैकादशं कृत्वा तालकेन नियोजयेत्	10.a
पुटपाकेन देवेशि दिव्यं भवति काञ्चनम्	523.a
पुटपाकेन पीतेन तारं हेमं करोति च	276.b
पुटीकृतरसस्तेन बद्धमायाति तत्क्षणात्	541.b
पुटेन जायते स्वर्णमिन्द्रगोपकसन्निभम्	524.b
पुण्या जला महानद्यस्तोयपूर्णा वहन्ति हि	461.b
पुनः शुङ्गांश्च वक्ष्यामि दिग्भागे तु स्थितानपि	468.a

प्रमतञ्च विषञ्चव कामं सूतकगन्धकम्	218.a
प्ररोहति क्षणाद्दिव्या दग्धा छिन्ना महौषधी	122.b
प्रवालं जारयेत्सा तु गगनं द्रावयेतु सा	73.b
प्रस्थं तु भक्षयेत्प्राज्ञो मासैकेन सुमन्त्रितम्	284.a
प्रस्वेदात्तस्य योगेन रसराजश्च बध्यते	90.b
प्रातर्निष्कचतुष्कं च लिह्याद्दहनसंयुतम्	568.a
प्राप्तव्यमेतद् गटिकाशु भाग्यैः	20.d
फलानि शाफवृक्षस्य पक्वानि चैव संग्रहेत्	145.a
बद्धपोटलिकं तेन गगनं तत्र जारयेत्	69.b
बन्धनं रसराजस्य सर्वलोकवशङ्करम्	139.a
बल्लके दशदशाष्ट संयुते	14.d
बहुनात्र किमुक्तेन घृतेन मधुना सह	254.a
बालार्क इव तेजस्वी सिद्धिवृद्धीश्चरेन्नरः	381.b
बिल्वबीजानि संगृह्य सूक्ष्मचूर्णं तु कारयेत्	557.a
बीजं विसृज्यते तत्र क्षारं कलकलायते	513.b
बीजानि तस्याः संग्रह्य आतपे शोषयेत्ततः	178.a
बीजेन सह संयुक्तं हेमं भवति शोभनम्	410.a
बृहस्पतिसमो भूत्वा जीवेद्वर्षशतत्रयम्	403.b
बृहस्पतिसमो भूत्वा सर्वज्ञो देवपूजितः	381.a
बृहस्पतिसमो भूत्वा सिद्धवत्क्रमते महीम्	378.b
ब्रह्मत्वं जायते तस्य शरीरं नूतनं भवेत्	190.a
ब्रह्मदण्डीति विख्याता अधःपुष्पीति नामतः	155.a
ब्रह्मदण्डीयमूलं तु कृष्णसूत्रेण वेष्टितम्	156.a
भक्षयेत्तं रसं विद्वान् घृतेन मधुना सह	380.b
भक्षयेत्त्रिसप्तरात्रं तु सर्वव्याधिविनाशिनीम्	172.c
भक्षयेद्वर्षमेकं तु घृतेनालोड्य वा पिबेत्	329.b
भक्षयेन्मधुसर्पिभ्यां सप्तरात्रं न संशयः	257.b
भक्षितस्तोलकैकेन स्पर्शवेधी भवेन्नरः	90.a
भक्षितो रसयोगेन शिवतुल्यपराक्रमः	89.b
भग्नमेतत्स्रवेत्क्षीरं रक्तवर्णं सुशोभनम्	138.a
भद्राङ्गे दिनवेधि स्याद्दक्षाद्रौ तु त्रिवासरम्	530.a
भवेत्सूर्यसमं तेजः स भवेत् सदाशिवः	185.b
भस्त्राफुत्कारयुक्ते च धाम्यमाने रसस्य तु	70.b
भुञ्जीत षष्टिकोपेतं क्षीरं मुद्गरसं तथा	160.b

मृद्वग्नौ स्वेदयेत्तं च भूयो भूयश्च मर्दयेत्	379.b
मेदिनीयन्त्रमध्ये तु स्थापयेच्च वरानने	67.a
मेधावी सर्वशास्त्रज्ञो वलीपलितवर्जितः	300.b
मेधावी सुभगः श्रीमान् जीवेद्वर्षशतत्रयम्	263.a
मेलयित्वा पचेत्तैले लोहपात्रे च बुद्धिमान्	565.b
मेषशृङ्गस्य योगेन वज्रं तु म्रियते क्षणात्	173.b
म्रियते तद्वरं वङ्गं सहस्रांशेन वेधकृत्	321.b
म्रियते नात्र सन्देहो ध्मातस्तीव्रानलेन तु	103.a
म्रियते नात्र सन्देहो लक्षवेधी भवेत्सः	107.a
म्रियते रवितापेन रसो दिव्यौषधीबलात्	311.a
यः कोऽपि सेवेत नित्यं शाल्मलीकल्पमुत्तमम्	555.a
यदा च पश्येदरुणानिभां शुभां	20.a
यदा तद्बुद्बुदाकारं तदा शैलोदकं भवेत्	528.a
यवान्मुद्गांश्च भुञ्जीत क्षीरं मधु तथा घृतम्	216.a
यष्टीमधुसमायुक्तं मधुना लेहयेत्सदा	162.a
यस्तद्भक्षयते देवि साधकः सिद्धिकाङ्कः	219.b
यस्तु दधिपयोयुक्तं मर्दितं लोहभाजने	279.a
यस्मै दद्यात्तु तत्तैलमभ्रकेण समन्वितम्	417.a
याममात्रैः पचेद्धीमान् सर्वं गुञ्जानिभं भवेत्	566.a
यावत्सञ्जायते पिण्डं धापयेत्खदिराग्निना	289.a
यावन्न बद्धमेकं तु विकृतं तत्तु काञ्चनम्	82.a
युवातिवृद्धो भवति वलीपलितवर्जितः	553.a
यो धातुभेदवदिह निश्चलम्	16.d
योजनानां शतं गच्छेत् श्रमस्तस्य न जायते	163.a
रक्तं पीतं तथा कृष्णमुत्तरोत्तरकर्मसु	511.b
रक्तकञ्चुकिकन्दात्तु स्त्रीस्तन्येन तु पेषयेत्	98.a
रक्तचन्दनसंयुक्तं सर्वलोहानि जारयेत्	140.b
रक्तचित्रकचूर्णेन वङ्गं तापैस्त्रिभिस्त्रिभिः	132.a
रक्तचित्रकभल्लाततैललिप्तपुटेन तु	131.a
रक्तचित्रकसंयुक्तं देहसिद्धिकरं परम्	134.b
रक्तवर्णायाः शाल्मल्याः पूर्ववन्मूलमाहरेत्	550.a
रक्तैरण्डकतैलेन शुद्धसूतं च गन्धकम्	565.a
रम्यप्रदेशे सुस्थश्च सुप्रशस्ते शुभे दिने	4.a
रसं च तालकं तुल्यं मर्दयेदुच्चटारसैः	114.a

शाकवृक्षस्य निर्यासं यत्नेन परिगालयेत्	143.a
शाल्मलीखदिराङ्गारैस्त्रिधा बद्धं भवेत्फलम्	573.a
शिग्रुमूलस्य चूर्णं तु तद्रसेन विमर्दयेत्	143.b
शुकचञ्चुगतं सूतं पुटयेद् ध्मापयेत्ततः	103.b
शुक्लो व्याधिप्रशमने श्रेष्ठो मध्यः कनीयसः	129.b
शुद्धकायो लिह्याच्चैव घृतेन मधुना सह	402.a
शुभनक्षत्रसंयोगे सूतेन सह मर्दयेत्	261.a
शुभे चन्द्रबले चैव भक्षयेत्तु दिने दिने	449.b
शुभ्रमाक्षिकं पीतं चेद्वङ्गं स्तम्भयते ध्रुवम्	432.b
शुल्वं तु दापयेत्तारैस्तत्तारं काञ्चनं भवेत्	27.b
शुल्वं हेममयं स्यात्तु तैलं माक्षिकमिश्रितम्	120.b
शुल्वपत्रं विलिप्तं तु भवेद्धेमपुटत्रयम्	108.b
शुल्वपत्रस्य लेपेन ध्मात्वा तु काञ्चनं भवेत्	489.b
शुल्वपत्राणि सूक्ष्माणि रसस्यार्द्धं प्रदापयेत्	363.a
शुल्वे तारे प्रलिप्ते च वेधते नात्र संशयः	303.a
शुष्क आतपं विना निपीडितः	15.a
शुष्कं भृङ्गरसैर्युक्तं समानं पुटं2 कारयेत्	5.b
शुष्ककोणे शुचिस्थाने नित्यमेव निधापयेत्	154.a
शृङ्गानि यस्य चत्वारि संस्थितानि यथाक्रमम्	462.b
शृङ्गान्येतानि ख्यातानि शृणु शृङ्गाधिपाश्च ये	463.b
शृणु देवि प्रवक्ष्यामि यथोत्पन्नस्तु गन्धकः	208.a
शृणु पार्वति यत्नेन यथावत्कथयामि ते	322.a
शृणु पार्वति यत्नेन सुगुप्तं परमौषधम्	198.a
शृणु पुत्र ! परं गुह्यमौषधीफलमुत्तमम्	411.a
शैलोदकं कोटिवेधि दुर्गदेशेऽपि वासरम्	531.b
शैलोदकेन देवेशि पारदं च विमर्दयेत्	534.a
शोणितं स्रवते तेषां रसं तेन विमर्दयेत्	484.a
श्रीशैले श्रीवनप्रान्ते पर्यङ्काख्ये शिलातले	528.b
श्लक्ष्णोत्तमं सकटेन भाजनं तत्प्रलेपयेत्	537.b
श्वेतं कृष्णं तथा पीतं तस्याः पुष्पं प्रजायते	123.a
श्वेताभ्रं गन्धकं सूतं हिङ्गुलं तालकं समम्	242.a
षट्कला षट्क्रमेणैव कोटिवेधी महारसः	505.b
षट्पुटं नयमानं तु छादनीयं प्रयत्नतः	11.b
षण्माससेवितनरो हयजरामरश्च	556.d

सप्तगुणे पूतं ज्ञेयं नवमे कोटिवेधिकम्	364.b
सप्तभिः प्रतिवापेन वङ्गं स्तम्भकरं भवेत्	405.b
सप्तमे कोटिवेधी स्यादष्टमे दशकोटयः	354.b
सप्तमे धूमवेधि स्यादष्टमे हयवलोकितम्	77.b
सप्तरात्रप्रयोगेण वलीपलितवर्जितः	417.b
सप्तवारितरितं शुभमस्तु	16.c
सप्तवारेन तद्दिव्यं काञ्चनं कारुनिश्चितम्	55.a
सप्तविंशतिमितैश्च यामकैः	18.a
सप्ताहं मर्दितस्तस्या महौषधिरसेन सः	42.a
सप्ताहं सूर्यतापेन भयो भूयो द्रवं क्षिपेत्	427.b
सप्ताहात्पलितं हन्ति कपालान्तररञ्जितम्	547.b
सबीजा चौषधी ग्राह्या काचिद्गुल्मलता प्रियं	65.a
सबीजा चौषधी ग्राह्या काचिद्गुल्मलता प्रिये	59.a
समस्तं जायते हेमकूर्माण्डकसमप्रभम्	58.a
समे तु कनके जीर्णे दशलक्षं तु वेधयेत्	76.b
समे तु गगने जीर्णे बद्धं तिष्ठति सूतकम्	69.a
सर्पदष्टं तु तद्दत्तं निर्विषं कुरुते क्षणात्	404.b
सर्वदोषविनिर्मुक्तं स्तम्भमायाति तत्क्षणात्	132.b
सर्वपुंसाधिकः श्रीमान् द्वितीय इव शङ्करः	507.b
सर्वभक्षोऽपि मानवः	441.a
सर्वरोगविनिर्मुक्तो जायते नात्र संशयः	203.a
सर्वलोहविशुद्धार्थं ततः कर्म समाचरेत्	336.b
सर्वव्याधिविनिर्मुक्तो जीवेद्वर्षशतत्रयम्	394.b
सर्वव्याधिविनिर्मुक्तो दृढकायो भवेन्नरः	233.b
सर्वव्याधिविनिर्मुक्तो वलीपलितवर्जितः	509.a
सर्वसिद्धिकराः सर्वे तिष्ठन्ति पर्वतोत्तमे	467.b
सर्वा जराः प्रणश्यन्ति नात्र कार्या विचारणा	408.a
सर्वाणि विषमात्राणि हरते यस्य देहगा	327.a
सर्वासामौषधीनां च श्वेतार्कं चौत्तमौषधम्	198.b
सर्वासामौषधीनां तु रसायनमनुत्तमम्	195.a
सह्याचलपुरे देव्या दत्तात्रेयस्य सन्निधौ	531.a
सा ध्माता खदिराङ्गारैः स्रवते रसमुत्तमम्	480.a
सा श्वेता व्याधिशमने कृष्णा पीता रसायने	147.b
सारात्सारतरं प्रोक्तं तव स्नेहात्प्रकाशितम्	197.b

सार्धमासप्रयोगेण कुञ्जरैः सह युध्यते	166.a
सास्ति गङ्गामहातीरे गङ्गा त्वाश्रयते गिरौ	124.a
सितक्षौद्रेण संपीतं कुर्याद्वज्रनिभं वपुः	552.a
सितारुणहरिद्वर्णैः कृष्णैरेव चतुर्विधैः	536.a
सितासितहरिद्वर्णैः कृष्णैरेव चतुर्विधैः	542.a
सिद्धिद्रव्यानि यावन्ति मध्ये च रसकूपिका	473.a
सिद्धौ विन्ध्ये महाभागे स्थाने च रमणीयके	305.b
सिद्ध्यर्थं मानवानां च सर्वव्याधिविनाशिनी	382.b
सिध्यति नात्र सन्देह इत्याह परमेश्वरः	344.b
सुगुप्ते विजने चैव निर्वाते भूमिमन्दिरे	495.b
सुनन्दः पश्चिमायां तु स च व्याघ्र इव स्थितः	469.b
सुप्रशस्तेषु धान्येषु संस्थितं वीरमान्तरम्	492.b
सुमुहूर्ते शुद्धकाये पिबेत्सूर्योदये पलम्	184.a
सुलभा मानससंयुततत्परैः	21.b
सुवर्णपुष्पी गौरी च मुसली पुङ्गपत्रिका	168.a
सूक्ष्मं निष्पीडयेत्पश्चाच्छायाशुष्कं3 तु सर्वदा	7.a
सूक्ष्मचूर्णं ततः कृत्वा घृतेन मधुना सह	202.b
सूक्ष्मचूर्णं ततः कृत्वा प्रतिवापं च दापयेत्	301.b
सूक्ष्मवस्त्रगलिता सुतालके	13.c
सूतसंपत्तिकाले तु धातुरूपी रसः शुभः	3.a
सेवते सप्तमासं तु यो देवि सुविनीतवान्	191.b
सोऽपि जीवेच्छतं चैव वर्षाणां नात्र संशयः	441.b
सोमराज्यास्तु बीजानि वितुषाणि तु कारयेत्	447.a
स्त्री वापि पुरुषो वापि षण्मासाद्व्याधिर्जितः	319.b
स्थीयते निर्विकल्पेन तेन ताम्रं विलेपयेत्	289.b
स्निग्धभाण्डे तु संस्थाप्य धान्यराशौ निधापयेत्	182.a
स्निग्धभाण्डे विनिक्षिप्य भूमौ तच्च निधापयेत्	558.b
स्नुहीक्षीरं समादाय निष्कार्धं हेमं ध्मापयेत्	128.a
स्नुहीक्षीरं सूतकं च लवणानि च पञ्च च	342.b
स्नुहीक्षीरेण शुल्वस्य पत्रलेपं तु कारयेत्	126.a
स्पर्शमात्रेण लोहानि क्षणमात्रेण वेधयेत्	433.b
स्पर्शवेधे तु सा ज्ञेया धर्मकामार्थसाधिनी	121.b
स्फुटन्ति केशदन्ताश्च छायातोये न दृश्यते	512.b
स्वगृहे च ततो नीत्वा धान्यमध्ये निधापयेत्	517.b

स्वरसे मर्दयेत्पश्चात्पन्नगं देवि सेचयेत्	55.b
स्वर्णं भवति रूपाढ्यमग्निवर्णं न संशयः	481.a
स्वर्णवत्पीतपुष्पा च लक्षणैरिति लक्षयेत्	324.a
स्वाङ्गशीतं च संग्राह्य धर्मकामार्थसिद्धिदम्	95.b
स्वेदतापननिघृष्टो महौषधिरसेन तु	42.b
हंसपदीरसं सूतं शुककन्दोदरे क्षिपेत्	105.a
हंसाङ्घ्रिशुकचञ्च्वोश्च रसेन मर्दयेद्रसम्	106.a
हते वङ्गे सहस्रैकं वेधते मासमात्रकम्	571.a
हन्ति चाष्टादशान् कुष्ठान् सर्वान् रोगांश्च नाशयेत्	186.b
हरीन्दरीरसे न्यस्य गोशृङ्गे च वरानने	74.a
हस्तेनोद्धृत्य संगृह्य रक्षेच्च सुसमाहितः	153.b
हिङ्गुलं हरितलं च गन्धकं च मनःशिला	526.b
हिङ्गुला परिनिपीडिता दृढा	13.a
हिमालये शुभे रम्ये तथा जालन्धरे गिरौ	305.a
हेमं भवति ध्मातानि तस्यैव तु सुगन्धिनः	486.b
हेमनाशगुटिका पयोनिधिः	21.d
हेमादीनां तु लोहानामेष एव विधिः स्मृतः	365.b
हेमार्द्धमिलिते हेममात्रिका समतां व्रजेत्	25.a

४. सन्दर्भग्रन्थसूची

C.P.Khare. *Indian Medicinal Plants, An Illustrated Dictionary*. New York, USA: Springer Science Business Media, LLC., 2007.

M. MONIER-WILLIAMS. *A Sanskrit-English dictionary: Etymologically and philologically arranged with special reference to Cognate indo-european languages.* Oxford: The Clarendon Press., 1899.

Mira roy. *Rasarnavakalpa, English translation with notes*. Kolkatta: Indian National Science Acedemy, 1976. Sanskrit and English.

T. T. Bhaṭṭācārya. *Vachaspatyam: (a comprehensive Sanskrit dictionary).* . Benares: Benares: Chowkhamba Sanskrit Series Office., (1962). .

जीवानन्दविद्यासागर भट्टाचार्यः. *रुद्रयामलतन्त्रम्*. कोलकत्ता: वाचस्पत्ययन्त्रालयः, १९३७. संस्कृत.

नारायण हरी जोशी वेणीमाधवशास्त्री जोशी. *आयुर्वेदीय शब्दकोश, संस्कृत-संस्कृत-मराठी, द्वितीय खंड, (प -ह)*. मुंबई: महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळ, मुंबई, १९६८.

ईं. *आयुर्वेदीय शब्दकोश, संस्कृत-संस्कृत-मराठी, प्रथम खंड, (अ -न)*. मुंबई: महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळ, मुंबई., १९६८.

महर्षि चरक. “चरकसंहिता, श्रीचक्रपाणिदत्तविरचितया आयुर्वेददीपिकाव्याख्यया सहिता.” 2010. *e-Caraka Samhita.* National Institute of Indian Medical Heritage. <http://niimh.nic.in/ebooks/ecaraka/>.

श्रीभावमिश्रविरचित. “भावप्रकाशनिघण्टु.” 26 03 2012. *e-Nighantu .* <http://niimh.nic.in/ebooks/e-Nighantu/bhavaprakashanighantu/?mod=read>.

सुश्रुत. “सुश्रुतसंहिता, श्रीडल्हणाचार्यविरचितया निबन्धसङ्ग्रहाख्यव्याख्यया निदानस्थानस्य श्रीगयदासाचार्यविरचितया न्यायचन्द्रिकाख्यपञ्जिकाव्याख्यया च समुल्लसिता.” 2010. *e-sushruta samhita.* <http://niimh.nic.in/ebooks/esushruta/>.



प्रकाशनानि

आयुर्वेदग्रन्थाः

- रसेश्वरदर्शनम्
- रसेश्वरदर्शन, मूळ संस्कृत संहिता, शब्दार्थ आणि मराठी भाषांतर
- रसमञ्जरी
- रसमञ्जरी-सन्दर्भकोशः
- रसमञ्जरी-वनस्पतिकोशः
- रसतरङ्गिणी
- रसतरङ्गिणी-सन्दर्भकोशः
- रसतरङ्गिणी-वनस्पतिकोशः
- रसचण्डांशुः
- रसचण्डांशु-सन्दर्भकोशः
- रसचण्डांशु-वनस्पतिकोशः
- रसार्णवकल्पः

व्याकरणग्रन्थाः

- पाणिनीयं लिङ्गानुशासनम्
- शान्तनवाचार्यप्रणीतः फिट्सूत्रपाठः
- तिङन्तरूपावलिः, प्रथमः भागः (भ्वादिगणः) तः दशमः भागः (चुरादिगणः)........... [१० ग्रन्थाः]
- पाणिनीयशिक्षा
- आपिशलशिक्षा
- ऋग्वेदप्रातिशाख्यम्

उपनिषद्ग्रन्थाः

- अमृतनादोपनिषद्
- आरुणिकोपनिषद्
- कलिसन्तरणोपनिषद्
- कृष्णोपनिषद्
- गर्भोपनिषद्
- जाबाल्युपनिषद्
- बह्वृचोपनिषद्
- ब्रह्मबिन्दूपनिषद्
- वासुदेवोपनिषद्
- सावित्र्युपनिषद्

काव्यशास्त्रग्रन्थाः

- काव्यालंकार, प्रथम परिच्छेद, मूळ संस्कृत संहिता, मराठी भाषांतर, पदार्थ व विवेचक टीपांसह

Email: publicationebook@gmail.com

Website: https://archive.org/details/@ebook_publcation